پیر حسام الدین امیرا کدل کشمیر

دی کشمیر ناول ایجنسی

نام ۔۔۔ مصنف ۔۔۔

نمبر کتاب 8 ۔۔۔ قیمت ۔۔۔

پروپرائٹر

پیر حسام الدین جنرل مرچنٹ امیرا کدل کشمیر

गुटका
चन्द्रकान्ता सन्तति।
बाईसवां हिस्सा।

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

लाहौरी टोला,

बनारस सिटी ।

॥ श्री: ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

बाईसवां हिस्सा ।
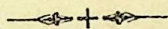
बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।
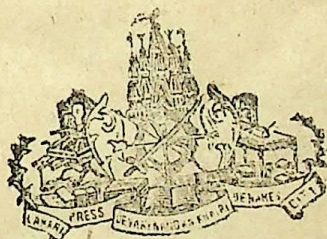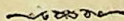
पन्नालाल राय द्वारा

लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।

छठवीं बार ३०००] १९२१ [मूल्य ।-) आ०

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति।

बाईसवां हिस्सा।

पहिला बयान।

भूतनाथ की अवस्था ने सभों का ध्यान अपनी तरफ खैंच लिया, कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इसके बाद इन्द्रदेव ने पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा :—

"महाराज ! ध्यान देने और बिचार करने पर सभों को मालूम होगा कि आजकल आपका दर्बार 'नाट्यशाला' (थियेटर का घर) हो रहा है। नाटक खेल कर जो जो बातें दिखाई जा सकती हैं और जिनके देखने से लोगों को नसीहत मिल सकती है तथा मालूम हो सकता है कि दुनिया में किस दर्जे तक के नेक और बद, दुखिया और सुखिया, गम्भीर और छिछोरे इत्यादि पाए जाते हैं, वे सब इस समय (आजकल) आपके यहां प्रत्यक्ष हो रहे हैं। ग्रहदशा के फेर में जिन्होंने दुःख भोगा वे भी मौजूद हैं और जिन्होंने अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी वे भी दिखाई दे रहे हैं। जिन्होंने अपने किये का फल ईश्वरेच्छा

से पा लिया है वे भी आये हुए हैं और जिन्हें अब सजा दी जायगी

वे भी गिरफ़ार किये गये हैं । बुद्धिमानों का कथन है 'जो बुरी राह चलेगा उसे बुरा फल अवश्य मिलेगा ।' ठीक है, परन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि अच्छी राह चलने वाले तथा नेक लोग दुःख के चहले में फंस जाते हैं और दुर्जन तथा दुष्ट लोग आनन्द के साथ दिन काटते दिखाई देते हैं । इसे लोग ग्रहदशा का कारण कहते हैं मगर नहीं, इसके सिवाय कोई और बात भी जरूर है । परमात्मा की दी हुई बुद्धि और बिचारशक्ति का अनादर करने वाले ही प्रायः संकट में पड़ कर तरह २ के दुःख भोगते हैं । जो हो, मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि इस समय अथवा आजकल आपके यहां सब तरह के जीव दिखाई देते हैं, दृष्टान्त देने के बदले केवल इशारा करने से काम निकलता है । हां मैं यह कहना तो भूल ही गया कि इन्हीं में ऐसे जीव भी आये हुए हैं जो अपने किये का नहीं बल्कि अपने सम्बन्धी के किये हुए पापों का फल भोग चुके हैं । इसी से नाते (रिश्ते) और सम्बन्ध का गूढ़ अर्थ भी निकलता है । बेचारी लक्ष्मीदेवी की तरफ देखिये जिसने किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा और हद्द दर्जे की तकलीफ उठा कर ताज्जुब है कि जीती बच गई । ऐसा क्यों हुआ ? इस के जवाब में मैं तो यही कहूंगा कि 'राजा गोपालसिंह की बदौलत' जो बेईमान दारोगा के हाथ की कठपुतली हो रहे थे और इस बात की कुछ भी खबर नहीं रखते थे कि उनके घर में क्या हो रहा है और उनके कर्मचारियों ने उन्हें कैसे जाल में फांस रक्खा है । जिस राजा को अपने घर की खबर न होगी, वह प्रजा का क्या उपकार कर सकता है और ऐसा राजा अगर सङ्कट में पड़ जाय तो आश्चर्य ही क्या है ? केवल इतना ही नहीं, इनके दुःख भोगने का एक सबब और भी है । बड़ों ने कहा है कि 'स्त्री' के आगे अपने भेद की बात प्रगट करना बुद्धिमानों का काम नहीं है, परन्तु राजा गोपालसिंह ने इस बात पर कुछ

भी ध्यान न दिया और दुष्टा मायारानी की मुहब्बत में फँस कर तथा अपने भेदों को बता कर बर्बाद हो गये। सज्जन और सरल स्वभाव होने ही से दुनिया का काम नहीं चलता, कुछ नीति का भी अवलम्बन करनाही पड़ता है। इसी तरह महाराज शिवदत्त को देखिये जिसे खुशामदियों ने मिलजुल कर बर्बाद कर दिया। जो लोग खुशामद में पड़ कर अपने को सबसे बड़ा समझ बैठते हैं और दुश्मन को कोई चीज नहीं समझते हैं उनको वैसी ही गति होती है जैसी शिवदत्त की हुई। दुष्टों और दुर्जनों की बात जाने दीजिये उनको तो उनके बुरे कर्मों का फल मिलना ही चाहिये, मिला ही है, और मिलेहीगा, उनका जिक्र मैं भी पीछे करूंगा। अभी तो मैं उन लोगों की तरफ इशारा करता हूं जो वास्तव में बुरे नहीं थे मगर नीति पर न चलने तथा बुरी सोहबत में पड़े रहने के कारण संकट में पड़ गये। मैं दावे के साथ कहता हूं कि भूतनाथ के ऐसा नेक, दयावान और चतुर ऐयार बहुत कम दिखाई देगा, मगर लालच और ऐयाशी के फेर में पड़ कर ऐसा बर्बाद हुआ कि दुनिया भर से मुंह छिपाने और अपने को मुर्दा मशहूर करने पर भी इसे सुख की नींद नसीब न हुई। अगर यह मेहनत करके ईमानदारी के साथ दौलत पैदा किया चाहता तो आज इसकी दौलत का अन्दाजा करना कठिन होता और अगर ऐयाशी के फेर में न पड़ा होता तो आज नाती पोतों से इसका घर दूसरों के लिये नजीर गिना जाता। इसने सोचा कि 'मैं मालदार हूं, होशियार हूं, चालाक हूं, और ऐयार हूं। कुलटा स्त्रियों और रंडियों की सोहबत का मजा लेकर सफाई के साथ अलग हो जाऊंगा।' मगर इसे अब मालूम हुआ होगा कि रंडियां ऐयारों के भी कान काटती हैं। नागर वगैर के बर्ताव को जब यह याद करता होगा तब इसके कलेजे में चोटसी लगती होगी। मैं इस समय इसकी शिकायत करने पर उतारू

नहीं हुआ हूं बल्कि इसके दिल परसे पहाड़ सा बोझ हटा कर इसे हलका किया चाहता हूं क्योंकि इसे मैं अपना ही दोस्त समझता था और समझता हूं। हां इधर कई बर्षों से इसका विश्वास अवश्य उठ गया था और मैं इसकी सोहबत पसन्द नहीं करता था, मगर इसमें मेरा कोई कसूर नहीं। किसी की चाल चलन जब खराब हो जाती है तब बुद्धिमान लोग उसका विश्वास नहीं करते और शास्त्र की भी ऐसी ही आज्ञा है, अतएव मुझे भी वैसा ही करना पड़ा। यद्यपि मैंने इसे किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचाई परन्तु इसकी दोस्ती को एक दम भूल गया, मुलाकात होने पर भी उसी तरह बर्ताव करता था जैसा लोग नये मुलाकाती के साथ किया करते हैं, हां अब जब कि यह अपनी चालचलन को सुधार कर आदमी बना है, अपनी भूलों को सोच समझ कर पछता चुका है, एक अच्छे ढङ्ग से नेकी के साथ नामवरी पैदा करता हुआ दुनियां में फिर दिखाई देने लगा है और महाराज भी इसकी योग्यता से प्रसन्न हो कर इसके अपराधों को (दुनिया के लिये) क्षमा कर चुके हैं, मैंने भी इसके अपराधों को दिल में क्षमा कर इसे अपना मित्र समझ लिया है और फिर उसी निगाह से देखने लगा हूं जिस निगाह से पहिले देखता था। परन्तु इतना जरूर कहूंगा कि भूतनाथ ही एक ऐसा आदमी है जो दुनिया में नेकचलनी और बदचलनी के नतीजे को दिखाने के लिये नमूना बन रहा है। आज यह अपने भेदों को प्रगट होते देख डरता है और चाहता है कि इसके भेद छिपे के छिपे रह जायँ, मगर यह इसकी भूल है क्योंकि पिछले ऐब छिपे नहीं रहे। सब नहीं तो बहुत कुछ दोनों कुमारों को मालूम हो चुके हैं और महाराज भी जान गये हैं ऐसी अवस्था में इसे अपना किस्सा पूरा पूरा बयान करके दुनिया में एक नजीर छोड़ जाना चाहिये और साथही इसके (भूतनाथ की

तरफ देखते हुए) अपने दिल के बोझ को हलका कर देना चाहिये । भूतनाथ ! तुम्हारे दो चार भेद ऐसे हैं जिन्हें सुन कर लोगों की आंखें खुल जायँगी और लोग समझेंगे कि हां आदमी ऐसे ऐसे काम भी कर गुजरते हैं और उसका नतीजा ऐसा होता है । यह तुम्हारे ही ऐसे बुद्धिमान और अनूठे ऐयार का काम है कि इतना करने पर भी आज तुम भले चङ्गे दिखाई देते हो बल्कि नेकनामी के साथ महाराज के ऐयार कहलाने की इज्जत पा चुके हो मैं फिर कहता हूं कि किसी बुरी नीयत से इन बातों का जिक्र मैं नहीं करता बल्कि तुम्हारे दिल का खुटका दूर करते के साथ ही साथ जिनके नाम से तुम डरते हो उन्हें तुम्हारा दोस्त बनाया चाहता हूं, तुम्हें बेखौफ अपना हाल बयान कर देना चाहिये ॥"

भूत० । ठीक है, मगर मैं क्या करूं मेरी जुबान नहीं खुलती, मैंने ऐसे २ बुरे काम किये हैं जिन्हें याद करके आज मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और आत्महत्या करने की इच्छा होती है मगर नहीं, मैं बदनामी के साथ दुनियां से उठ जाना पसन्द नहीं करता अतएव जहां तक हो सकेगा एक दफे नेकनामी पैदा करूंगा ॥

इन्द्र० । नेकनामी पैदा करने का ध्यान जहां तक बना रहे अच्छा ही है परन्तु मैं समझता हूं कि तुम नेकनामी उसी दिन पैदा कर चुके जिस दिन हमारे महाराज ने तुम्हें अपना ऐयार बनाया—इस लिये कि तुमने इधर बहुत ही अच्छे २ काम किये हैं और वे सब काम ऐसे थे जिन्हें अच्छे से अच्छा ऐयार भी कदाचित् नहीं कर सकता था । चाहे तुमने पहिले कैसी ही बुराई और कैसे ही खोटे काम क्यों न किये हों मगर आज हम लोग तुम्हारे देनदार हो रहे हैं तुम्हारे अहसान के बोझ से दबे हुए हैं और समझते हैं कि तुम अपने कुकर्मों का प्रायश्चित्त कर चुके हो ॥

भूत० । आप जो कुछ कहते हैं यह आपका बड़प्पन है परन्तु मैंने जो कुछ कुकर्म किये हैं समझता हूं कि उनका प्रायश्चित्त ही नहीं है तथापि अब तो मैं महाराज की शरण में आ चुका हूं और महाराज ने मेरी बुराइयों पर ध्यान न देकर मुझे अपना दासानुदास स्वीकार कर लिया है इससे मेरी आत्मा संतुष्ट है और मैं अपने को दुनिया में मुंह दिखाने योग्य समझने लगा हूं । मैं यह भी समझता हूं कि आप जो कुछ आज्ञा कर रहे हैं यह वास्तव में महाराज की आज्ञा है जिसे मैं कदापि उल्लंघन नहीं कर सकता । मैं अपनी अद्भुत जीवनी सुनाने लिये तैयार हूं परन्तु........

इतना कहकर भूतनाथ ने लम्बी सांस ली और महाराज सुरेन्द्रसिंह की तरफ देखा ॥

सुरेन्द्र० । भूतनाथ ! यद्यपि हमलोग तुम्हारा कुछ २ हाल जान चुके हैं मगर फिर भी तुम्हारा पूरा २ हाल तुम्हारे मुंह से सुनने को इच्छा रखते हैं, तुम बयान करने में किसी तरह का सङ्कोच न करो । इससे तुम्हारा दिल भी हलका हो जायगा और दिन रात जो तुम्हें खुटका बना रहता है वह भी जाता रहेगा ॥

भूत० । जो आज्ञा ॥

इतना कह कर भूतनाथ ने सलाम किया और अपनी जीवनी इस तरह बयान करने लगा :—

भूतनाथ की जीवनी ।

भूत० । सबके पहिले मैं वही बात कहूंगा जिसे आप लोग नहीं जानते, अर्थात् मैं नौगढ़ के रहने वाले और देवीसिंह के सगे चचा "जीवनसिंह" का लड़का हूं । मेरी सौतेली मां मुझे देखना पसन्द नहीं करती थी और मैं उसकी आंखों में कांटे की तरह गड़ा करता

था। मेरे ही सबब से मेरी मां की इज्जत और कदर थी और उस बांझ को कोई पूछता भी न था अतएव वह मुझे दुनिया ही से उठा देने की फिक्र में लगी और यह बात मेरे पिता को भी मालूम होगई। इस लिये जब कि मैं आठ बर्ष का था, मेरे पिता ने मुझे अपने मित्र देवदत्त ब्रह्मचारी के सपुर्द कर दिया जो तेजसिंह जी के * ओस्ताद थे और महात्माओं की तरह नौगढ़ के उसी तिलिस्मी खोह में रहा करते थे जिसे राजा बीरेन्द्रसिंह जी ने फतह किया है। मैं नहीं जानता कि मेरे पिता ने मेरे विषय में उन्हें क्या समझाया और क्या कहा परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रह्मचारी जी मुझे अपने लड़के की तरह मानते, पढ़ाते लिखाते, और साथ ही साथ ऐयारी भी सिखाते थे परन्तु जड़ी बूटियों के प्रभाव से उन्होंने मेरी सूरत में बहुत बड़ा फर्क डाल दिया था जिसमें कोई मुझे पहिचान न ले और मेरे पिता भी मुझे देखने के लिये बराबर इनके पास आया करते थे॥

इतना कह कर भूतनाथ कुछ देर के लिये चुप होगया और सभों के मुंह की तरफ देखने लगा॥

सुरेन्द्र०। (ताज्जुब के साथ) ओफ् ओह!! क्या तुम जीवनसिंह के वही लड़के हो जिसके बारे में उन्होंने मशहूर कर दिया था कि "जङ्गल में शेर उठा कर लेगया!!"

भूतनाथ०। (हाथ जोड़ कर) जी हां॥

तेज०। और आप वही हैं जिसे गुरुजी "फिरकी" कहके पुकारा करते थे, क्योंकि आप एक जगह ज्यादे देर तक बैठते न थे!!

भूतनाथ०। जी हां॥

देवी०। यद्यपि मैं बहुत दिनों से आपको भाई की तरह मानने

* चन्द्रकान्ता पहिला हिस्सा छठे बयान में तेजसिंह ने अपने ओस्ताद के बारे में बीरेन्द्रसिंह से कुछ कहा था॥

लग गया हूं परन्तु आज यह जान कर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा कि आप वास्तव में मेरे भाई हैं मगर यह तो बताइये कि ऐसी अवस्था में शेरसिंह आपका भाई क्योंकर हुआ ? वह कौन है ?

भूतनाथ० । वास्तव में शेरसिंह मेरा भाई नहीं है बल्कि गुरुभाई और उन्हीं ब्रह्मचारी जी का लड़का है, मगर हां लड़कपन ही से एक साथ रहने के कारण हम दोनों में भाई की सी मुहब्बत होगई थी ॥

तेजसिंह० । आजकल शेरसिंह कहां हैं ?

भूतनाथ० । मुझे उनकी कुछ भी खबर नहीं है मगर मेरा दिल गवाही देता है कि अब वे हमलोगों को दिखाई न देंगे ॥

बीरेन्द्रसिंह० । सो क्यों ?

भूतनाथ० । इसी लिये कि वे भी अपने को छिपाये और हमलोगों में मिलेजुले रहते थे और साथ ही इसके ऐब से खाली न थे ॥

सुरेन्द्रसिंह० । खैर कोई चिन्ता नहीं, अच्छा तब ?

भूत० । अस्तु मैं उन्हीं ब्रह्मचारी जी के पास रहने लगा, कई वर्ष बीत गए, पिताजी मुझ से मिलने के लिये कभी २ आया करते थे और जब मैं बड़ा हुआ तो उन्होंने मुझे अपने से जुदा करने का सबब भी बयान किया और वे यह जान कर बहुत प्रसन्न हुये कि मैं ऐयारी के फन में बहुत तेज और होशियार होगया हूं । उस समय उन्होंने ब्रह्मचारी जी से कहा कि "इसे किसी रियासत में नौकर रखा देना चाहिये तब इसकी ऐयारी खुलेगी ।" मुख्तसर यह कि ब्रह्मचारी जी ही की बदौलत मैं गदाधरसिंह के नाम से रणधीरसिंह जी के यहां और शेरसिंह महाराज दिग्विजयसिंह के यहां नौकर हो गए और यह जाहिर किया गया कि "शेरसिंह और गदाधरसिंह दोनों भाई हैं ।" और हम दोनों आपुस में प्रेम भी ऐसा ही रखते थे ॥

उन दिनों रणधीरसिंह जी की जमींदारी में तरह २ के उत्पात

मचे हुए थे और बहुत से आदमी उनके जानी दुश्मन हो रहे थे। उनके आपुस वालों को तो इस बात का विश्वास हो गया था कि अब रणधीरसिंह जी की जान किसी तरह नहीं बच सकती क्योंकि उन्हीं दिनों उनका ऐयार श्रीसिंह दुश्मनों के हाथों से मारा जा चुका था और खूनी का पता भी नहीं लगता था। कोई दूसरा ऐयार भी उनके पास न था इस लिये वे बड़े ही तरद्दुद में पड़े हुए थे। यद्यपि उन दिनों उनके यहां नौकरी करना अपनी जान खतरे में डालना था मगर मुझे इन बातों की कुछ भी परवाह न हुई। रणधीरसिंह जी भी मुझे नौकर रख कर बहुत:प्रसन्न हुए और मेरी खातिरदारी में किसी तरह की कमी नहीं करते थे। इसका दो सबब था। एक तो उन दिनों उन्हें ऐयार की सख्त जरूरत थी, दूसरे मेरे पिता से और उनसे कुछ मित्रता भी थी जो कुछ दिन के बाद मुझे मालूम हुआ॥

रणधीरसिंह जी ने मेरा ब्याह भी शीघ्र ही करा दिया, सम्भव है कि इसे भी मैं उनकी कृपा और स्नेह का कारण समझूं मगर यह भी हो सकता है कि मेरे पैर में गृहस्थी की बेड़ी डालने और कहीं भाग जाने लायक न रखने के लिये उन्होंने ऐसा किया हो, क्योंकि अकेला और बेफिक्रा आदमी जम कर रहे और काम करे इस का विश्वास लोगों को कम रहता है। खैर जो कुछ हो मतलब यह है कि उन्होंने मुझे बड़ी इज्जत और प्यार के साथ अपने यहां रक्खा और मैं ने भी थोड़े ही दिनों में ऐसे २ अनूठे काम कर दिखाए कि उन्हें ताज्जुब होता था। सच तो यों है कि उनके दुश्मनों की हिम्मत टूट गई और वे दुश्मनी की आग में आप ही जलने लगे॥

कायदे की बात है कि जब आदमी के हाथ से दो चार काम अच्छे निकल जाते हैं और चारों तरफ उसकी तारीफ होने लगती है तब वह अपने काम की तरफ से बेफिक्र हो जाता है [illegible] हुआ॥

आप जानते ही होंगे कि रणधीरसिंह जी का दयाराम नामी एक भतीजा था जिसे वे बहुत प्यार करते थे और वही उनका वारिस होने वाला था। उसके मां बाप लड़कपन ही में मर चुके थे मगर चचा की मुहब्बत के सबब उसे मां बाप के मरने का दुःख कुछ मालूम न हुआ। वह (दयाराम) उम्र में मुझ से कुछ छोटा था मगर मेरे और उसके बीच में हद्द दर्जे की दोस्ती और मुहब्बत हो गई थी। जब हम दोनों आदमी घर पर मौजूद रहते तो बिना मिले जी नहीं मानता था, दयाराम का बैठना उठना मेरे यहां ज्यादे होता था, अक्सर रात को वह मेरे ही यहां खा पी कर सो जाता था और उसके घर वाले भी इसमें किसी तरह का रञ्ज नहीं मानते थे॥

जो मकान मुझे रहने के लिये मिला था वह निहायत उम्दा और शानदार भी था। उसके पीछे की तरफ एक छोटा सा नजर बाग था जो दयाराम के शौक की बदौलत हर दम हरा भरा, गुंजान और सुहावना बना रहता था। प्रायः सन्ध्या के समय हम दोनों दोस्त उसी बाग में बैठ कर भांग बूटी छानते और सन्ध्योपासन से निवृत्त हो बहुत रात गये तक गप्प शप्प किया करते॥

जेठ का महीना था और गर्मी हद्द दर्जे की पड़ रही थी। पहर रात बीत जाने पर भी हम दोनों दोस्त उसी नजर बाग में दो चारपाई के ऊपर लेटे हुए आपुस में धीरे २ बातें कर रहे थे, मेरा खूबसूरत और प्यारा कुत्ता मेरे पायताने की तरफ एक पत्थर की चौकी पर बैठा हुआ था। बात करते करते हम दोनों को नींद आ गई॥

आधी रात से कुछ ज्यादे बीती होगी जब मेरी आंख मेरे कुत्ते के भौंकने की आवाज से खुल गई। मैं ने उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और करवट बदल कर फिर आंखें बन्द करलीं, क्योंकि वह कुत्ता मुझसे बहुत दूर और नजरबाग के पिछले हिस्से की तरफ था।

मगर कुछही देर बाद वह मेरी चारपाई के पास आ कर भौंकने लगा और पुनः मेरी आंख खुल गई, मैं ने कुत्ते को अपने सामने बेचैनी की हालत में देखा, उस समय वह ज़ुबान निकाले हुए ज़ोर ज़ोर से हांफ रहा था और दोनों अगले पैरों से ज़मीन खोद रहा था॥

मैं अपने कुत्ते की आदतों को खूब जानता और समझता था, अस्तु उसकी ऐसी अवस्था देख कर मेरे दिल में खुटका पैदा हुआ और मैं घबड़ा कर उठ बैठा, अपने मित्र को भी उठा कर होशियार कर देने की नीयत से उसकी चारपाई की तरफ देखा मगर चारपाई खाली पाकर मैं बेचैनी के साथ चारों तरफ देखने लगा और उठ कर चारपाई के नीचे खड़े होने के साथ ही मैंने अपने सिर्हाने के नीचे से खञ्जर निकाल लिया। उस समय मेरा नमकहलाल कुत्ता मेरी धोती पकड़ कर बार २ खैंचने और बाग के पिछले हिस्से की तरफ चलने का इशारा करने लगा और जब मैं उसके इशारे के मुताबिक चला तो वह धोती छोड़ कर आगे दौड़ने लगा। मैं कदम बढ़ाता हुआ उसके पीछे २ चला। उस समय मालूम हुआ कि मेरा कुत्ता जख्मी है, उसके पिछले पैर में चोट आई थी इस लिये वह पैर उठा कर दौड़ता था। अस्तु कुत्ते के पीछे पीछे चल कर पिछली दीवार के पास जा पहुंचा जहां मालती और मोमियाने की लताओं के सबब घना कुंज और पूरा अंधकार हो रहा था। कुत्ता उस झुरमुट के पास जाकर रुक गया और मेरी तरफ देख कर दुम हिलाने लगा। उसी समय मैंने झाड़ी में से तीन आदमियों को निकलते हुए देखा जो बाग की दीवार के पास चले गये और फुरती से दीवार लांघ कर पार होगये। उन तीनों में से एक आदमी के हाथ में छोटी सी गठड़ी थी जो दीवार लांघती समय उसके हाथ से छूट कर बाग के भीतर ही गिर पड़ी। निःसन्देह वह गठड़ी लेने के लिये बाग के भीतर लौटता मगर उसने मुझे और मेरे

कुत्ते को देख लिया था इस लिये उसकी हिम्मत न पड़ी ॥

गठड़ी गिरने के साथ ही मैंने जफील बुलाई और खञ्जर हाथ में लिये हुए उस आदमी का पीछा करना चाहा अर्थात् दीवार की तरफ बढ़ा मगर कुत्ते ने मेरी धोती पकड़ ली और झाड़ी की तरफ हट कर खैंचने लगा जिससे मैं समझ गया कि इस झाड़ी में कोई और भी छिपा हुआ है जिसकी तरफ कुत्ता इशारा कर रहा है। मैं सम्हल कर खड़ा हो गया और गौर के साथ झाड़ी की तरफ देखने लगा। उसी समय पत्तों की खड़खड़ाहट ने विश्वास दिला दिया कि इसमें कोई और भी है। मैं इस खयाल से कि जिस तरह पहिले तीन आदमी दीवार लांघ कर भाग गये हैं उस तरह इनको भागने न दूंगा, घूम कर दीवार की तरफ चला गया। उस समय देखा कि एक चार डंडे की सीढ़ी दीवार के साथ लगी हुई है जिसके सहारे से वे तीनों निकल गये थे। मैंने सीढ़ी उठा कर उस गठड़ी के ऊपर फेंकदी जो उनके हाथ से छूट कर गिर पड़ी थी क्योंकि मैं उस गठड़ी की हिफाजत का भी खयाल कर रहा था ॥

सीढ़ी हटाने के साथ ही दो आदमी उस झाड़ी में से निकले और उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ मेरा मुकाबला किया और मैं भी जी तोड़ कर उनके साथ लड़ने लगा। अन्दाज से मालूम हो गया कि गठड़ी उठा लेने की तरफ उन दोनों का ध्यान विशेष है। आप सुन चुके हैं कि मेरे हाथ में केवल खञ्जर था, मगर उन दोनों के हाथों में लम्बे २ लट्ठे थे और मुकाबला करने में भी वे दोनों कमजोर न थे अस्तु मुझे भी अपने बचाव का ज्यादे खयाल था और मैं तब तक लड़ाई खतम करना नहीं चाहता था जब तक मेरे आदमी न आजायँ जिन्हें जफील देकर मैंने बुलाया था ॥

आधी घड़ी से ज्यादे देर तक मेरा और उनका मुकाबला रहा,

उसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मालूम हुआ कि मेरे आदमी चले आ रहे हैं। उनकी तरफ देख कर मेरा ध्यान कुछ बटाही था कि एक के हाथ की लट्ठ मेरे सिर पर बैठी और मैं चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा॥

दूसरा बयान।

जब मेरी आंख खुली मैंने अपने को अपने आदमियों में घिरा हुआ पाया, मशाल की रोशनी बखूबी हो रही थी। जांच करने पर मालूम हुआ कि मैं आधी घड़ी से ज्यादे देर तक बेहोश नहीं रहा। जब मैंने दुश्मन के बारे में दरियाफ़ किया तो मालूम हुआ कि वे दोनों भी भाग गये मगर आदमियों के पहुंच जाने के सबब उस गठड़ी को न लेजा सके। मैंने अपनी हिम्मत और ताकत पर खयाल किया तो मालूम हुआ कि मैं इस समय उनका पीछा करने लायक नहीं हूं आखिर लाचार होकर और पहरे का इन्तजाम करके मैं गठड़ी लिये हुए अपने कमरे में चला आया मगर अपने मित्र की तरफ से मेरा दिल बड़ा ही बेचैन रहा और तरह तरह के शक दिल में पैदा होते रहे॥

मेरे कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी। दरवाजा बन्द करके मैंने गठड़ी खोली और उसके अन्दर की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा॥

गठड़ी में दो जोड़े तो कपड़े निकले जिन्हें मैं पहिचानता न था मगर वे कपड़े पहिरे हुए और मैले थे। कागजों का एक मुट्ठा निकला जिसे देखते ही मैं पहिचान गया कि यह रणधीरसिंह जी के खास सन्दूक के कागज हैं। मोम का एक सांचा कई कपड़ों की तह में लपेटा हुआ निकला, देखते ही मैं पहिचान गया कि खास रणधीर-

सिंह जी की मोहर पर से यह सांचा उठाया गया है। इन चीजों के अतिरिक्त मोतियों की एक माला, कण्ठा और तीन जड़ाऊ अंगूठियां निकलीं, ये चीजें मेरे मित्र दयारामसिंह की थी, इन सब चीजों को पहिरे हुए ही आज वे मेरे यहां से गायब हुए थे॥

इन सब चीजों को देख कर मैं बड़ी देर तक सोच बिचार में पड़ा रहा, उसी समय कमरे का वह दर्वाजा खुला जो जनाने मकान में जाने के लिये था और मेरी स्त्री (कमला की मां) आती हुई दिखाई पड़ी। उस समय वह एक बच्चे की मां हो चुकी थी और अपने बच्चे को भी गोद में लिये हुए थी। इसमें कोई शक नहीं कि मेरी स्त्री बुद्धिमान थी और छोटे मोटे कई कामों में मैं उसकी राय भी लिया करता था॥

उसकी सूरत देखते ही मैं पहिचान गया कि तरद्दुद और घब-राहट ने उसे अपना शिकार बना लिया है, अस्तु उसे मैंने बुला कर अपने पास बैठाया और सब हाल कह सुनाया, साथ ही इसके यह भी कहा कि मैं इसी समय अपने दोस्त का पता लगाने के लिये जाया चाहता हूं। मगर उसने इस आखिरी बात को कबूल नहीं किया और कहा, "मेरी राय में पहिले रणधीरसिंह जी से मिल लेना चाहिये॥"

अस्तु कई बातों को सोच विचार कर मैंने उसकी राय कबूल की और उस गठड़ी को साथ लेकर रणधीरसिंह जी से मिलने के लिये रवाना हुआ। मुझे इस बात का धोखा लगा हुआ था कि रास्ते में कहीं दुश्मनों से मुलाकात न हो जाय जो जरूर इस गठड़ी को छीन लेने की धुन में लगे हुए होंगे, इस लिये मैंने अपने दो शागिर्दों को भी साथ में ले लिया॥

रणधीरसिंह जो बेफिक्र और आराम की नींद सो रहे थे जब मैंने पहुंच कर उन्हें उठाया। जागने के साथ ही वे मुझे देख कर चौंके

और बोले, "क्यों क्या मामला है जो इस समय ऐसे ढङ्ग से यहां आये हो? दयाराम कुशल से तो है?"

मेरी सूरत देखते ही उन्होंने दयाराम का कुशल पूछा इससे मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, खैर मैं उनके पास बैठ गया और जो कुछ मामला हुआ था साफ साफ कह सुनाया॥

मैं इस किस्से को मुख्तसर ही में बयान करूंगा। रणधीरसिंह जी इस हाल को सुन कर बहुत ही दुःखी और उदास हुए, बहुत कुछ बात चीत करने के बाद अन्त में बोले, "दयाराम मेरा एक ही एक वारिस और तुम्हारा दिली दोस्त है, ऐसी अवस्था में उसके लिये क्या करना चाहिये सो तुमही सोच लो मैं क्या कहूं? मैं तो समझ चुका था कि दुश्मनों की तरफ से अब निश्चिन्त हुआ, मगर नहीं..."

इतना कह कर वे कपड़े से अपना मुंह ढांप रोने लगे, मैं उन्हें बहुत कुछ समझा बुझा कर बिदा हुआ और अपने घर चला आया। अपनी स्त्री से मिल कर सब हाल कहने और बहुत कुछ समझाने बुझाने के बाद मैं अपने दो शागिर्दों को साथ लेकर घर से बाहर निकला। बस यहां से मेरी बदकिस्मती का जमाना शुरू हुआ॥

इतना कह कर भूतनाथ अटक गया और सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। सब कोई बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे और भूतनाथ की अवस्था से मालूम होता था कि वह इस बात को सोच रहा है कि "मैं अब अपना किस्सा आगे बयान करूं या नहीं।" इसी समय दो आदमी और भी कमरे के अन्दर चले आये और महाराज को सलाम करके खड़े हो गये। इनकी सूरत देखते ही भूतनाथ के चेहरे का रङ्ग उड़ गया और वह डरे हुए ढङ्ग से उन दोनों की तरफ देखने लगा॥

ये दोनों आदमी जो अभी अभी कमरे में आये हैं वेही हैं जिन्होंने

भूतनाथ को अपना नाम "दलीपशाह" बतलाया था । इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वे दोनों भूतनाथ के पास ही बैठ गये ॥

तीसरा बयान ।

प्रेमी पाठक भूले न होंगे कि दो आदमियों ने भूतनाथ से अपना नाम दलीपशाह बतलाया था, जिनमें से एक को पहिला दलीप और दूसरे को दूसरा दलीप समझना चाहिये ॥

भूतनाथ तो पहिलेही इस सोच में पड़ गया था कि अपना हाल आगे बयान करे या नहीं, अब दोनों दलीपशाह को देख कर वह और भी घबड़ा गया, ऐयार लोग समझ रहे थे कि अब उसमें बात करने की ताकत नहीं रही । उसी समय इन्द्रदेव ने भूतनाथ से कहा, "क्यों भूतनाथ ! चुप क्यों हो गये ? कहो कहो, हां तब आगे क्या हुआ ॥"

इसका जवाब भूतनाथ ने कुछ न दिया और सिर झुका कर जमीन की तरफ देखने लगा । उसी समय पहिले दलीपशाह ने हाथ जोड़ कर महाराज की तरफ देखा और कहा,"कृपानाथ ! भूतनाथ को अपना हाल बयान करने में बड़ा कष्ट हो रहा है । वास्तव में बात भी ऐसी ही है, कोई भला आदमी अपनी उन बातों को जिन्हें वह ऐब समझता है अपनी जुबान से अच्छी तरह बयान नहीं कर सकता । अस्तु यदि आज्ञा हो तो मैं इसका हाल पूरा पूरा बयान कर जाऊं क्योंकि मैं भी भूतनाथ का हाल उतना ही जानता हूं जितना स्वयं भूतनाथ, और भूतनाथ जहां तक बयान कर चुके हैं उसे मैं बाहर खड़ा २ सुन भी चुका हूं, जब मैंने समझा कि अब भूतनाथ से अपना हाल नहीं कहा जाता तब मैं यह अर्ज करने के लिये हाजिर हुआ हूं । (भूतनाथ की तरफ देख के) मेरे इस कहने से आप यह न समझियेगा कि मैं आप

के साथ दुश्मनी कर रहा हूं, नहीं जो काम आपके सुपुर्द किया गया है उसे आपके बदले में मैं आसानी के साथ कर दिया चाहता हूं॥"

इन दोनों आदमियों (दलीपशाह) को महाराज तथा और सभों ने भी ताज्जुब के साथ देखा था मगर यह समझ कर इन्द्रदेव से किसी ने कुछ भी न पूछा कि जो कुछ है थोड़ी देर में मालूम हो ही जायगा मगर जब "दलीपशाह" ऊपर लिखी बात बोल कर चुप हो गया तब महाराज ने भेद भरी निगाहों से इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कुमार ने झुक कर धीरे से कुछ कह दिया जिसे वीरेन्द्र-सिंह तथा तेजसिंह ने भी सुना तथा इनके जरिये से हमारे और साथियों को भी मालूम हो गया कि कुमार ने क्या कहा॥

दलीपशाह की बात सुन कर इन्द्रदेव ने महाराज की तरफ देखा और हाथ जोड़ कर कहा, "इन्होंने (दलीप ने) जो कुछ कहा वास्तव में ठीक है, मेरी समझ में अगर भूतनाथ का किस्सा इन्हीं की जुबानी सुन लिया जाय तो कोई हर्ज नहीं है।" इसके जवाब में महाराज ने मंजूरी के लिये सिर हिला दिया॥

इन्द्रदेव०। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों भूतनाथ! इसमें तुम्हें किसी तरह का उज्र है?

भूतनाथ०। (महाराज की तरफ देख कर और हाथ जोड़ कर) जो महाराज की मर्जी, मुझ में "नहीं" करने की सामर्थ्य नहीं है। मुझे क्या खबर थी कि कसूर माफ हो जाने पर भी यह दिन देखना नसीब होगा। यद्यपि यह मैं खूब जानता हूं कि मेरा भेद अब किसी से छिपा नहीं रहा परन्तु फिर भी अपनी भूल बार२ कहने या सुनने से लज्जा बढ़ती ही जाती है कम नहीं होती, अस्तु कोई चिन्ता नहीं जैसे होगा वैसे अपने कलेजे को मजबूत करूंगा और दलीपशाह की कही हुई बातें सुनूंगा तथा देखूंगा कि ये महाशय कुछ झूठ का भी

प्रयोग करते हैं या नहीं ॥

दलीप० । नहीं नहीं भूतनाथ ! मैं झूठ कदापि न बोलूंगा इससे तुम बेफिक्र रहो (इन्द्रदेव की तरफ देख के) अच्छा तो अब मैं प्रारम्भ करता हूं ॥

दलीपशाह ने इस तरह कहना शुरू किया :—

"महाराज ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐयारी के फन में भूतनाथ परले सिरे का ओस्ताद और तेज आदमी है । अगर यह ऐयाशी के दरिया में गोते लगा कर अपने को बरबाद न कर देता तो इसके मुकाबले का ऐयार दुनिया में दिखाई न देता । मेरी सूरत देख कर ये चौंकते और डरते हैं और इनका डरना वाजिब ही है मगर अब मैं इनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं कर सकता क्योंकि मैं ऐसा करने के लिये दोनों कुमारों से प्रतिज्ञा कर चुका हूं और इनकी आज्ञा मैं किसी तरह टाल नहीं सकता क्योंकि इन्हीं की बदौलत आज मैं दुनिया की हवा खा रहा हूं । (भूतनाथ की तरफ देख के) भूतनाथ ! मैं वास्तव में दलीपशाह हूं, उस दिन तुमने मुझे नहीं पहचाना तो इसमें तुम्हारी आंखों का कोई कसूर नहीं है कैद की सख्तियों के साथ ही साथ जमाने की चाल ने मेरी सूरत ही बदल दी है, तुम तो अपने हिसाब से मुझे मार ही चुके थे और तुम्हें मुझसे मिलने की कभी उम्मीद भी न थी मगर सुन लो और देख लो कि ईश्वर की कृपा से मैं अभी तक जीता जागता तुम्हारे सामने खड़ा हूं, यह कुंअर साहब के चरणों का प्रताप है । अगर मैं कैद न हो जाता तो तुम से बदला लिये बिना कभी न रहता मगर तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि कैद हो गया और छूटा भी तो कुंअर साहब के हाथ से जो तुम्हारे पक्षपाती हैं । तुम्हें इन्द्रदेव से भी बुरा न मानना चाहिये और यह न सोचना चाहिये कि तुम्हें दुःख देने के लिये इन्द्रदेव तुम्हारा पुराना

पड़चा खुलवा रहे हैं, तुम्हारा किस्सा तो सब को मालूम हो ही चुका है इस समय ज्यों का त्यों चुपचाप रह जाने पर तुम्हारे चित्त को शान्ति नहीं मिल सकती और तुम हमलोगों की सूरत देख २ कर दिन रात तरद्दुद में पड़े रहोगे अस्तु तुम्हारे पिछले ऐबों को खोल कर इन्द्रदेव तुम्हारे चित्त को शान्ति दिया चाहते हैं, तुम्हारे दुश्मनों को जिनके साथ तुम हो ने बुराई की है, तुम्हारा दोस्त बना रहे हैं, वे यह भी चाहते हैं कि तुम्हारे साथ ही साथ हमलोगों का भेद भी खुल जाय और तुम जान जाओ कि हमलोगों ने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया है, अगर ऐसा न हो तो जरूर तुम हमलोगों को मार डालने की फिक्र में पड़े रहोगे और हमलोग इस धोखे में रह जायंगे कि हमने इसका कसूर तो माफ ही कर दिया अब ये हमारे साथ बुराई न करेंगे। (जीतसिंह की तरफ देख कर) खैर अब मैं मतलब की तरफ झुकता हूं और भूतनाथ का किस्सा बयान करता हूं॥

जिस जमाने का हाल भूतनाथ बयान कर रहा है, अर्थात् जिन दिनों भूतनाथ के मकान से दयाराम गायब हो गये थे। उन दिनों यही "नागर" काशी के बाजार में वेश्या बन के बैठी हुई अमीरों के लड़कों को चौपट कर रही थी। इसकी बढ़ी चढ़ी खूबसूरती लोगों के लिये जहर हो रही थी और माल के साथ ही विशेष प्राप्ति के लिये यह लोगों की जान पर भी वार किया करती थी। यही दशा मनोरमा की भी थी परन्तु इसकी बनिस्बत वह बहुत ज्यादे रुपै वाली होने पर भी नागर को सी खूबसूरत न थी, हां चालाक ज्यादे थी। और लोगों की तरह भूतनाथ और दयाराम भी नागर के प्रेमी हो रहे थे। भूतनाथ को अपनी ऐयारी का घमंड था और नागर को अपनी चालाकी का। भूतनाथ नागर के दिल पर कब्जा किया

चाहता था और नागर इसको तथा दयाराम की दौलत अपने खजाने

में मिलाना चाहती थी ॥

दयाराम की खोज में घर से दो शार्गिदों को साथ लिये हुए बाहर निकलते ही भूतनाथ ने काशी का रास्ता लिया और तेजी के साथ सफर तय करता हुआ नागर के मकान पर पहुंचा। नागर ने भूतनाथ की बड़ी खातिरदारी और इज्जत की। कुशल मङ्गल पूछने के बाद यकायक यहां आने का सबब भी पूछा ॥

भूतनाथ ने अपने आने का ठीक २ सबब तो नहीं बताया मगर वह समझ गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। इसी तरह भूतनाथ को भी इस बात का शक पैदा हो गया कि दयाराम की चोरी से नागर को कुछ न कुछ लगाव जरूर है अथवा नागर उन आदमियों को जरूर जानती है जिन्होंने दयाराम के साथ ऐसी दुश्मनी की है ॥

भूतनाथ का शक काशीही वालों पर था इस लिये काशी ही में अड्डा बना कर उसने इधर उधर घूमना और दयाराम का पता लगाना आरम्भ किया। जैसे जैसे दिन बीतता था भूतनाथ का शक भी नागर के ऊपर बढ़ता जाता था। सुनते हैं कि उसी जमाने में भूतनाथ ने एक औरत के साथ काशी ही में शादी भी कर ली थी जिससे कि बालक पैदा हुआ है क्योंकि इस झमेले में भूतनाथ को बहुत दिनों तक काशी में रहना पड़ा था ॥

सच है कि कम्बख़्त रंडियां रुपये के सिवाय और किसी की नहीं होतीं। जो दयाराम कि नागर को चाहता, मानता और दिल खोलकर रुपया देता था, नागर उसी के खून की प्यासी हो गई क्योंकि ऐसा करने से उसे विशेष प्राप्ति की आशा थी। भूतनाथ नें यद्यपि अपने दिल का हाल नागर से बयान नहीं किया मगर नागर को विश्वास होगया कि भूतनाथ को उस पर शक है और वह दयाराम ही की खोज में काशी आया हुआ है। अस्तु नागर ने अपना उचित प्रबंध

करके काशी छोड़ दिया और गुप्त रीति से जमानियां में जा बसी। भूतनाथ मिट्टी सूंघता हुआ उसकी खोज में जमानियां जा पहुंचा और एक भाड़े का मकान ले कर वहां रहने लगा॥

इस खोज ढूंढ में वर्षों बीत गये मगर दयाराम का पता न लगा। भूतनाथ ने अपने मित्र इन्द्रदेव से भी मदद मांगी और इन्द्रदेव ने मदद भी दी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। इन्द्रदेव ही के कहने से मैं उन दिनों भूतनाथ का मददगार बन गया था॥

इस किस्से के सम्बन्ध में रणधीरसिंह के रिश्तेदारों की तथा जमानियां, गयाजी और राजगृही इत्यादि की भी बहुत सी बातें कही जा सकती हैं परन्तु मैं उन सब बातों का बयान करना व्यर्थ समझता हूं और केवल भूतनाथ का किस्सा चुन चुन कर बयान करता हूं जिससे कि खास मतलब है॥

मैं कह चुका हूं कि दयाराम का पता लगाने के काम में उन दिनों मैं भी भूतनाथ का मददगार था मगर अफसोस! भूतनाथ की किस्मत तो कुछ और ही कराया चाहती थी इस लिये हम लोगों की मेहनत का कोई अच्छा नतीजा न निकला। एक दिन मिलने के लिये मैं भूतनाथ के डेरे पर गया मुलाकात होने के साथ ही भूतनाथ ने आंखें बदल कर मुझसे कहा, "देखो दलीपशाह! मैं तो तुम्हें बहुत अच्छा और नेक समझता था मगर तुम बहुत ही बुरे और दगाबाज निकले, मुझे ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयाराम का भेद तुम्हारे दिल के अन्दर है, तुम हमारे दुश्मनों के मददगार और भेदिये हो और खूब जानते हो कि इस समय दयाराम कहां है। तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि सीधी तरह उसका (दयाराम का) पता बतादो नहीं तो मैं तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आऊंगा और तुम्हारी मिट्टी पलीद करके छोड़ूंगा॥"

महाराज ! मैं नहीं कह सकता कि उस समय भूतनाथ की बेतुकी बातें सुन कर मुझे कितना क्रोध चढ़ आया । मैं उसके पास बैठा भी नहीं और न उसकी बात का कुछ जवाब दिया, बस चुप चाप पिछले पैर लौटा और मकान के बाहर निकल आया । मेरा घोड़ा बाहर खड़ा था मैं उस पर सवार हो कर सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया । (इन्द्रदेव की तरफ हाथ का इशारा करके) दूसरे दिन इन्द्रदेव के पास पहुंचा और जो कुछ बीती थी इनसे कह सुनाया । इन्हें भी भूतनाथ की बातें बहुत बुरी मालूम हुईं और एक लम्बी सांस लेकर मुझसे बोले, "हम नहीं जानते कि इस दो चार दिन में भूतनाथ को कौनसी नई बात मालूम होगई और किस बुनियाद पर उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक किया । खैर कोई चिन्ता नहीं भूतनाथ अपनी इस बेवकूफी पर अफसोस करेगा और पछतायेगा, तुम इस बात का खयाल न करो और भूतनाथ से मिलना जुलना छोड़ कर दयाराम की खोज में लगे रहो, तुम्हारा अहसान रणधीरसिंह पर और हमारे ऊपर होगा ॥"

इन्द्रदेव ने बहुत कुछ कह सुन कर मेरा क्रोध शान्त किया और दो दिन तक मुझे अपने यहां मेहमान रक्खा । तीसरे दिन मैं इन्द्रदेव से बिदा होने वाला ही था कि इनके एक शागिर्द ने आकर विचित्र खबर सुनाई, उसने कहा कि " आज रात को बारह बजे के समय मिर्जापुर के एक जमींदार 'राजसिंह' के यहां दयाराम के होने का पता मुझे लगा है, खुद मेरे भाई ने मुझे यह खबर दी है, उसने यह भी कहा था कि आजकल नागर भी उन्हीं के यहां है ॥"

इन्द्रदेव० । (शागिर्द से) वह खुद मेरे पास क्यों नहीं आया ?

शागिर्द० । वह आप ही के पास तो आ रहा था, मुझसे रास्ते में मुलाकात हुई उसके पूछने पर मैंने कहा—कि दयारामजी का पता लगाने के लिये मैं तैनात किया गया हूं । उसने जवाब दिया कि "अब

तुम्हारे जाने की कोई जरूरत न रही मुझे उनका पता लग गया और यही खुशखबरी सुनाने के लिये मैं सरकार के पास जा रहा हूं मगर अब तुम मिल ही गये हो तो मेरे जाने की कोई जरूरत नहीं जो कुछ मैं कहता हूं तुम जा कर सुना दो और मदद ले कर बहुत जल्द मेरे पास आओ, मैं फिर उसी जगह जाता हूं कहीं ऐसा न हो कि दयारामजी वहां से भी निकाल कर दूसरी जगह पहुंचा दिये जायं और हमलोगों को पता न लगे, मैं वहां जाकर इस बात का ध्यान रक्खूंगा।" इसके बाद उसने वह कैफियत बयान की और अपने मिलने का पता बताया ॥

इन्द्रदेव० । ठीक है उसने जो कुछ किया बहुत अच्छा किया अब उसे मदद पहुंचाने का बन्दोबस्त करना चाहिये ॥

शागिर्द० । यदि आज्ञा हो तो भूतनाथ को भी इस बात की इत्तला दे दी जाय ?

इन्द्रदेव० । कोई जरूरत नहीं अब तुम जा कर कुछ आराम करो तीन घण्टे के बाद फिर तुम्हें सफर करना होगा ॥

इसके बाद इन्द्रदेव का शागिर्द जब अपने डेरे पर चला गया तब मुझसे और इन्द्रदेव से बातचीत होने लगी । इन्द्रदेव ने मुझसे मदद मांगी और मुझे मिरजापुर जाने के लिये कहा, मगर मैं ने इन्कार किया और कहा कि अब मैं न तो भूतनाथ का मुंह देखूंगा और न उसके किसी काम में शरीक होऊंगा । इसके जवाब में इन्द्रदेव ने मुझे पुनः समझाया और कहा कि यह काम भूतनाथ का नहीं है, मैं कह चुका हूं कि इसका अहसान मुझ पर और रणधीरसिंह पर होगा ॥

इसी तरह की बहुत सी बातें हुईं, लाचार मुझे इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी और कई घण्टे के बाद इन्द्रदेव के उसी शागिर्द "शम्भू" को साथ लिये हुए मैं मिरजापुर की तरफ रवाना हुआ । दूसरे दिन

हमलोग मिरजापुर जा पहुंचे और बताए हुए ठिकाने पर पहुंच कर शम्भू के भाई से मुलाकात की, दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि दयाराम अभी तक मिर्जापुर की सरहद के बाहर नहीं गए हैं । अस्तु जो कुछ हम लोगों को करना था आपुस में तै करने के बाद सूरत बदल बदल कर बाहर निकले ॥

दयाराम जी को ढूंढ़ निकालने के लिये हमने कैसी २ मेहनतें कीं, हमलोगों को किस २ तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं इसका बयान करना किस्से को व्यर्थ तूल देना और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। महाराज के (आपके) नामी ऐयारों ने जैसे २ अनूठे काम किये हैं उसके सामने हमारी ऐयारी कुछ भी नहीं है अतएव केवल इतना ही कहना काफी है कि हमलोगों ने अपनी हिम्मत से बढ़ कर काम किया और हद्द दर्जे की तकलीफ उठा कर दयाराम जी को ढूंढ निकाला । केवल दयाराम ही को नहीं बल्कि उनके साथ ही साथ "राजसिंह" को भी गिरफ्तार कर के अपने ठिकाने पर ले आए मगर अफसोस ! हमलोगों की सब मेहनत पर भूतनाथ ने पानी फेर दिया और जन्म भर के लिये अपने माथे पर कलंक का टीका लगाया ॥

कैद की सख्ती उठाने के कारण दयाराम जी बहुत कमजोर और बीमार हो रहे थे, उनमें बात करने की भी ताकत न थी इस लिये हमलोगों ने उसी समय उन्हें उठा कर इन्द्रदेव के पास ले जाना मुनासिब न जाना और दो तीन दिन तक आराम देने की नीयत से अपने गुप्त स्थान पर जहां हमलोग टिके हुए थे ले गये और जहां तक हो सका नरम बिछावन का इन्तजाम कर के उस पर उन्हें लिटा दिया और उनके शरीर में ताकत लाने का बन्दोबस्त करने लगे। इस बात का निश्चय कर लिया कि जब तक इनकी तबीयत ठीक न हो जायगी इनसे कैद किये जाने का सबब भी न पूछेंगे ॥

दयाराम जी के आराम का इन्तजाम करने के बाद हमलोगों ने अपने २ हर्बे खोल कर उनकी चारपाई के नीचे रख दिये, कपड़े उतारे और इसके बाद बातचीत करने तथा दुश्मनी का सबब जानने के लिये राजसिंह को होश में लाए और उनकी मुश्कें खोल कर बातचीत करने लगे क्योंकि उस समय इस बात का डर हमलोगों को न था कि वे हमलोगों पर हमला करेंगे या हमलोगों का कुछ बिगाड़ सकेंगे ॥

जिस मकान में हमलोग टिके हुए थे वह बहुत ही एकान्त और उजाड़ महल्ले में था। रात का समय था और मकान की तीसरी मंजिल पर हमलोग बैठे हुए थे, एक मद्धिम चिराग आले पर जल रहा था। दयाराम जी का पलङ्ग हमलोगों के पीछे की तरफ था और राजसिंह सामने बैठे हुए ताज्जुब के साथ हमलोगों का मुंह देख रहे थे। उसी समय यकायक कई दफे धमाके की आवाज आई और उस के कुछ ही देर बाद भूतनाथ तथा उसके दो साथियों को हमलोगों ने अपने सामने खड़े देखा, सामना होने के साथ ही भूतनाथ ने मुझ से कहा, "क्यों बे शैतान के बच्चे! आखिर मेरी बात ठीक निकली, तू ही ने राजसिंह के साथ मेल कर के हमारे साथ दुश्मनी पैदा की खैर ले अपने किये का फल चख॥"

इतना कह कर भूतनाथ ने मेरे ऊपर खञ्जर का वार किया जिसे बड़ी खूबी के साथ मेरे साथी ने रोका, मैं भी उठ कर खड़ा हो गया और भूतनाथ के साथ लड़ाई होने लगी। भूतनाथ ने एक ही हाथ में राजसिंह का काम तमाम किया और थोड़ी ही देर में मुझे भी खूब जख्मी किया यहां तक कि मैं जमीन पर गिर पड़ा और मेरे दोनों साथी भी बेकार हो गये। उस समय दयाराम जी को जो पड़े २ सब तमाशा देख रहे थे जोश चढ़ आया और चारपाई पर से

उठ कर खाली हाथ भूतनाथ के सामने आ खड़े हुए और कुछ बोल
ही चाहते थे कि भूतनाथ के हाथ का खञ्जर उनके कलेजे के पा
हो गया और वे बेदम हो कर जमीन पर गिर पड़े !!

चौथा बयान ।

मैं नहीं कह सकता कि भूतनाथ ने ऐसा क्यों किया, भूतना
का कौल तो यही है कि "मैं ने उनको पहिचाना नहीं और मुझ
धोखा हुआ।" खैर जो हो, दयाराम के गिरते ही मेरे मुंह से "हाय
की आवाज निकली और मैं ने भूतनाथ से कहा, "ऐ कमबख्त ! तै
बेचारे दयाराम जी को क्यों मार डाला जिन्हें बड़ी मुश्किल से ह
लोगों ने खोज निकाला था ?"

मेरी बात सुनते ही भूतनाथ सन्नाटे में आ गया । इसके दोन
साथी तो न मालूम क्या सोच कर एकदम भाग गये मगर भूतना
बड़ी बेचैनी से दयाराम जी के पास बैठ कर उनका मुंह देखने लगा
उस समय भूतनाथ के देखते ही देखते उन्होंने आखरी हिचकी ल
और दम तोड़ दिया। भूतनाथ उनकी लाश के साथ चिमट कर रो
लगा और बड़ी देर तक रोता रहा, तब तक हम तीनों आदमी भ
पुनः मुकाबला करने लायक हो गये और इस बात से हमलोगों क
साहस और भी बढ़ गया कि भूतनाथ के दोनों साथी उसे अकेल
छोड़ कर भाग गये थे। मैं ने मुश्किल से भूतनाथ को उनसे अल
किया और कहा, "अब रोने और नखरा करने से फायदा ही क्य
होगा उनके साथ ऐसी ही मुहब्बत थी तो उन पर वार न कर
था, अब उन्हें मार कर औरतों की तरह नखरा करने बैठे हो !"

इतना सुन कर भूतनाथ ने अपनी आंखें पोछीं और मेरी तर

देख के कहा, "क्या मैं ने जानबूझ कर इन्हें मार डाला है ?"

मैं०। बेशक! क्या यहां आने के साथ ही तुमने उन्हें चारपाई पर पड़े हुए नहीं देखा था ?

भूतनाथ०। देखा था, मगर मैं नहीं जानता था कि ये दयाराम हैं, इतने मोटे ताजे आदमी को यकायक ऐसा दुबला पतला देख कर मैं कैसे पहिचान सकता था॥

मैं०। क्या खूब ऐसे ही तो तुम अन्धे थे! खैर इसका इन्साफ तो रणधीरसिंह के सामने हो रहेगा। इस समय तुम हमसे फैसला करलो क्योंकि अभी तक तुम्हारे दिल में लड़ाई का हौसला जरूर बना होगा॥

भूत०। (अपने को सम्भाल कर और मुंह पोंछ कर) नहीं नहीं मुझे अब लड़ने का हौसला नहीं है, जिसके वास्ते मैं लड़ता था जब वही नहीं रहा तो अब क्या? मुझे ठीक पता लग चुका था कि "दयाराम तुम्हारे फेर में पड़े हुए हैं।" सो अपनी आंखों से देख लिया मगर अफसोस है कि मैं ने उन्हें पहिचाना नहीं और वे इस तरह धोखे में मारे गये, इसका कसूर भी तुम्हारे ही सिर लग सकता है॥

मैं०। खैर अगर तुम्हारे किये हो सके तो तुम बिल्कुल कसूर मेरे ही सिर पर थोप देना मैं अपनी सफाई आप कर लूंगा। मगर इतना समझ रखो कि लाख कोशिश करने पर भी तुम अपने को बचा नहीं सकते क्योंकि मैं ने इन्हें खोज निकालने में जो कुछ मेहनत की थी वह इन्द्रदेव जी के कहने से की थी, न तो मैं अपनी प्रशंसा कराना चाहता था और न मैं इनाम लेना चाहता था, जरूरत पड़ने पर मैं इन्द्रदेव की गवाही दिला सकता हूं और तुम भी अपने को बे कसूर साबित करने के लिये "नागर" को पेश कर देना जिसके कहने और सिखाने से तुम ने मेरे साथ दुश्मनी पैदा कर ली थी॥

इतना सुन कर भूतनाथ सन्नाटे में आ गया, सिर झुका कर कुछ देर तक सोचता रहा और इसके बाद लम्बी सांस ले कर उसने मेरी तरफ देखा और कहा, "बेशक मुझे नागर कम्बख्त ने धोखा दिया! अब तो मुझे भी इन्हीं के साथ मर मिटना चाहिये ।" इतना कह कर भूतनाथ ने खञ्जर हाथ में ले लिया मगर कुछ कर न सका अर्थात् अपनी जान न देसका ॥

महाराज! जवांमर्दों का यह कहना बहुत ठीक है कि "बहादुरों को अपनी जान प्यारी नहीं होती ।" वास्तव में जिसे अपनी जान प्यारी होती है वह कोई हौसले का काम नहीं कर सकता और जो अपनी जान हथेली पर लिये रहता है और समझता है कि दुनिया में मरना एक ही बार है, कोई बार २ नहीं मरता, वही सब कुछ कर सकता है। भूतनाथ के बहादुर होने में सन्देह नहीं परन्तु इसे अपनी जान प्यारी जरूर थी, इस उलटी बात का सबब यही था कि भूत-नाथ ऐयाशी के नशे में चूर था। जो आदमी ऐयाशी होता है उस में ऐयाशी के सबब कई तरह की बुराइयां आ जाती हैं और बुराइयों की बुनियाद जम जाने के कारण उसे अपनी जान प्यारी हो जाती है और वह कोई काम कर नहीं सकता। यही सबब था कि उस समय भूतनाथ अपनी जान दे न सका बल्कि उसकी हिफाजत करने का ढङ्ग जमाने लगा, नहीं तो उस समय मौका ऐसा ही था, उस से जैसी भूल हो गई थी उसका बदला तभी पूरा होता जब यह भी उसी जगह अपनी जान दे देता और उस मकान से तीनों लाशें एक साथ ही निकाली जातीं ॥

भूतनाथ ने कुछ देर तक सोचने के बाद मुझ से कहा—"मुझे इस समय अपनी जान भारी हो रही है, मैं मर जाने के लिये तैयार हूं मगर मैं देखता हूं कि ऐसा करने से भी किसी को फायदा नहीं

पहुंचेगा। मैं जिसका निमक खा चुका हूं और खाता हूं उसका और भी नुकसान होगा क्योंकि इस समय वह दुश्मनों से घिरा हुआ है, अगर मैं जीता रहूंगा तो उनके दुश्मनों का नामोनिशान मिटा कर उन्हें बेफिक्र कर सकूंगा, अतएव मैं माफी मांगता हूं और चाहता हूं कि तुम मेहरबानी करके मुझे सिर्फ दो साल के लिये जीता छोड़ दो॥

मैं०। दो वर्ष के लिये क्या मैं जिन्दगी भर के लिये तुम्हें छोड़ देता हूं, जब तुम मुझसे लड़ना नहीं चाहते तो मैं क्यों तुम्हें मारने लगा? बाकी रही यह बात कि तुमने खानखाह मुझसे दुश्मनी पैदा करली है, सो इसका नतीजा तुम्हें आप से आप मिल जायगा जब लोगों को यह मालूम होगा कि भूतनाथ के हाथ से बेचारा दयाराम मारा गया॥

भूतनाथ०। नहीं नहीं, मेरा मतलब तुम्हारी पहिली बात से नहीं है बल्कि दूसरी बात से है, अर्थात् अगर तुम चाहोगे तो लोगों को इस बात का पता नहीं लगेगा कि दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारा गया॥

मैं०। यह क्यों कर छिप सकता है?

भूतनाथ०। अगर तुम छिपाओगे तो सब कुछ छिप जायगा॥

मुख़्तसर यह कि धीरे २ बातों को बढ़ाता हुआ भूतनाथ मेरे पैरों पर गिर पड़ा और बड़ी खुशामद के साथ कहने लगा कि "तुम इस मामले को छिपा कर मेरी जान बचालो।" केवल इतनाही नहीं, इसने मुझे हर तरह के सब्ज बाग दिखाये और कसमें दे दे कर मेरा नाकों में दम कर दिया। लालच में तो मैं नहीं पड़ा मगर पिछली मुरौवत के फेर में पड़ गया और भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर अपने साथियों को साथ लिये हुए मैं उस घर से बाहर निकल गया। भूतनाथ तथा दोनों लाशों को उसी तरह छोड़ दिया। फिर मुझे नहीं

मालूम कि भूतनाथ ने उन लाशों के साथ क्या बर्ताव किया ॥

यहां तक भूतनाथ का हाल कह कर कुछ देर के लिये दलीपशाह चुप हो गया और उसने इस नीयत से भूतनाथ की तरफ देखा कि देखें यह कुछ बोलता है या नहीं । इस समय भूतनाथ की आंखों से आंसू की नदी बह रही थी और वह हिचकियां ले ले कर रो रहा था। बड़ी मुश्किल से भूतनाथ ने अपने दिल को सम्हाला और दुपट्टे से मुंह पोंछ कर कहा, "ठीक है, ठीक है, जो कुछ दलीपशाह ने कहा सब सच है मगर यह बात मैं कसम खाकर कह सकता हूं, कि मैंने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा । वहां राजसिंह को खुले हुए देख कर मेरा शक यकीन के साथ बदल गया और चारपाई पर पड़े हुए देख कर भी मैंने दयारामजी को नहीं पहिचाना । मैंने समझा कि यह भी कोई दलीपशाह का साथी है । बेशक दलीपशाह पर मेरा शक मजबूत हो गया था और मैं समझ बैठा था कि जिन लोगों ने दयाराम के साथ दुश्मनी की है दलीपशाह जरूर उनका साथी है । यह शक यहां तक मजबूत हो गया था कि दयाराम के मारे जाने पर भी दलीपशाह की तरफ से मेरा दिल साफ न हुआ बल्कि मैंने समझा कि इसी (दलीपशाह) ने दयाराम को यहां लाकर कैद किया था । जिस नागर पर मुझे शक हुआ था उसी कम्बख़्त नागर की जादू भरी बातों में मैं फंस गया और उसी ने मुझे विश्वास दिला दिया कि इसका कर्ता धर्ता दलीपशाह है । यही सबब है कि इतना हो जाने पर भी मैं दलीपशाह का दुश्मन बनाही रहा । हां दलीपशाह ने एक बात नहीं कही वह यह है कि इस भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर भी दलीपशाह ने मुझे सूखा नहीं छोड़ा, इसने कहा कि "तुम कागज पर लिख कर मांफी मांगो तब मैं तुम्हें माफ करके यह भेद छिपाये रखने की कसम खा सकता हूं ।" लाचार होकर मुझे ऐसाही

करना पड़ा और मैं माफी के लिये चिट्ठी लिख कर हमेशे के लिये इसके हाथ में फँस गया ॥"

दलीप०। बेशक यही बात है, अगर मैं ऐसा न करता तो थोड़े ही दिन बाद भूतनाथ मुझे दोषी ठहरा कर आप सच्चा बन जाता। खैर अब मैं इसके आगे का हाल बयान करता हूं जिसमें थोड़ासा हाल तो ऐसा होगा जो मुझे खास भूतनाथ से मालूम हुआ था ॥

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर बयान करना शुरू किया :—

दलीप०। जैसा कि भूतनाथ कह चुका है, बहुत मिन्नत और खुशामद से लाचार होकर मैंने भूतनाथ से कसूरवार होने और माफी मांगने की चीठी लिखाकर इसे छोड़ दिया और इसका ऐब छिपा रखने का वादा करके अपने साथियों को साथ लिये हुए उस घर से बाहर निकल गया। भूतनाथ की इच्छानुसार दयाराम की लाश को और भूतनाथ को उसी मकान में छोड़ दिया। फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ और इसने दयाराम की लाश के साथ कैसा बरताव किया॥

वहां से बाहर होकर मैं इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ और रास्ते में सोचता जाता था कि अब मुझे क्या करना चाहिये? दयाराम का सच्चा सच्चा हाल इन्द्रदेव से बयान करना चाहिये या नहीं? आखिर हम लोगों ने निश्चय कर लिया कि जब भूतनाथ से वादा करही चुके हैं तो इस भेद को इन्द्रदेव से भी छिपा रखना चाहिये ॥

जब हमलोग इन्द्रदेव के मकान में पहुंचे तो इन्होंने कुशल मङ्गल पूछने के बाद दयाराम का हाल दरियाफ्त किया जिसके जवाब में मैंने असल मामले को तो छिपा रक्खा और बात बना कर यों कह दिया कि "जो कुछ मैंने या आपने सुना था वह ठीक ही निकला अर्थात् राजसिंह ही ने दयाराम के साथ वह सलूक किया था और दयाराम राजसिंह के घर में मौजूद भी थे मगर अफसोस! बेचारे दयाराम

को हमलोग छुड़ा न सके और वे जान से मारे गये ॥"

इन्द्रदेव० । (चौंक कर) हैं ! जान से मारे गये ?

मैं० । जी हां, इस बात की खबर भूतनाथ को भी लग चुकी थी, मेरे पहिले ही भूतनाथ राजसिंह के उस मकान में जिसमें उसने दयाराम को कैद कर रक्खा था पहुंच गया और उसने अपने सामने दयाराम की लाश देखी जिसे कुछ ही देर पहिले राजसिंह ने मार डाला था अस्तु भूतनाथ ने उसी समय राजसिंह का सिर काट डाला, सिवाय इसके और कर ही क्या सकता था ? अस्तु थोड़ी देर बाद हमलोग भी उस घर में जा पहुंचे और दयाराम तथा राजसिंह की लाश और भूतनाथ को वहां मौजूद पाया ! दरियाफ़ करने पर भूतनाथ ने सब हाल बयान किया और अफसोस करते हुए हमलोग वहां से रवाना हुए ॥

इन्द्रदेव० । अफसोस ! बहुत ही बुरा हुआ !! खैर ईश्वर की मर्जी ॥

मैंने भूतनाथ के ऐब को छिपा कर जो कुछ इन्द्रदेव से कहा वह भूतनाथ की इच्छानुसार कहा था, भूतनाथ ने भी यही बात मशहूर की और इस तरह अपने ऐब को छिपा रक्खा ॥

यहां तक भूतनाथ का किस्सा कह कर जब दलीपशाह कुछ देर के लिये चुप हो गया तब तेजसिंह ने उससे पूछा, "तुमने तो भला भूतनाथ की बात मान कर उस मामले को यों छिपा रक्खा मगर शम्भू वगैरह इन्द्रदेव के शागिर्दों ने अपने मालिक से इस भेद को क्यों छिपाया ?"

दलीप० । (एक लम्बी सांस लेकर) खुशामद और रुपया बड़ी चीज है, बस इसी से समझ जाइये और मैं क्या कहूं ॥

तेज० । ठीक है, अच्छा तब क्या हुआ ? भूतनाथ की कथा इतनी ही है या और भी कुछ ?

दलीप०। जी अभी भूतनाथ की कथा समाप्त नहीं हुई, अभी मुझे बहुत कुछ कहना बाकी है। और बातों के सिवाय भूतनाथ से एक कसूर ऐसा हुआ है जिसका रञ्ज भूतनाथ को इससे भी ज्यादे होगा॥

तेज०। वह क्या ?

दलीप०। सो भी मैं अर्ज करता हूं॥

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

"इस मामले को वर्षों बीत गये और मैं भूतनाथ की तरफ से कुछ दिनों तक बेफिक्र रहा मगर जब यह मालूम हुआ कि "भूतनाथ मेरी तरफ से निश्चिन्त नहीं है और मुझे इस दुनिया ही से उठा कर बेफिक्र हुआ चाहता है" तो मैं भी होशियार हो गया और दिन रात अपने बचाव की फिक्र में डूबा रहने लगा। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ! अब मैं अपना वह हाल बयान करूंगा जिसकी तरफ उस दिन मैंने इशारा किया था जब तुम हमें गिरफ्तार करके एक विचित्र पहाड़ी स्थान * में ले गये थे और जिस विषय में तुमने कहा था कि—"यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है—इत्यादि" मगर क्या तुम इस समय भी.........

भूतनाथ०। (बात काट कर) भला मैं कैसे कह सकता हूं कि दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है जिसके साथ ऐसे ऐसे मामले हो चुके हैं, मगर उस दिन मैंने तुम्हें धोखा देने के लिये वे शब्द कहे थे क्योंकि मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं था। इस कहने से मेरा यही मतलब था कि अगर तुम दलीपशाह न होवोगे तो कुछ न कुछ जरूर बात बनाओगे खैर जो कुछ हुआ सो हुआ मगर क्या तुम वास्तव में अब उस किस्से को बयान करने वाले हो ?

दलीप०। हां मैं उसे जरूर बयान करूंगा॥

* देखो हिस्सा बीसवां बयान बारहवां॥

भूत० । मगर उसके सुनने से किसी को कुछ फायदा नहीं पहुंच सकता । और न किसी तरह की नसीहत ही हो सकती है, वह तो मेरी नादानी और पागलपने की बात थी, जहां तक मैं समझता हूं उसे छोड़ देने से कोई हर्ज नहीं होगा ॥

दलीप० । नहीं, उसका बयान करना जरूरी जान पड़ता है, क्या तुम नहीं जानते या भूल गये कि उसी किस्से के सुनने के लिये कमला की मां अर्थात् तुम्हारी स्त्री यहां आई हुई है ?

भूत० । ठीक है, मगर हाय ! मैं सच्चा बदनसीब हूं जो इतना होने पर भी उन्हीं बातों को.........

इन्द्रदेव० । अच्छा २ जाने दो, भूतनाथ ! अगर तुम्हें इस बात का शक है कि दलीपशाह बातें बना कर कहेगा, या उसके कहने का ढङ्ग लोगों पर बुरा असर डालेगा तो मैं दलीपशाह को कहने से रोक दूंगा और तुम्हारे ही हाथ की लिखी हुई जीवनी पढ़ने के लिये किसी को दूंगा जो उस सन्दूकड़ी में बन्द है ॥

इतना कह कर इन्द्रदेव ने वही सन्दूकड़ी निकाली जिसकी सूरत देखने से भूतनाथ का कलेजा कांपता था ॥

उस सन्दूकड़ी को देखते ही एक दफे भूतनाथ घबड़ाना सा हो कर कांपा मगर तुरत ही उसने अपने को सम्हाल लिया और इन्द्रदेव की तरफ देख के बोला, "हां हां, आप कृपा कर इस सन्दूकड़ी को मेरी तरफ बढ़ाइये क्योंकि यह मेरी चीज है और मैं इसे ले लेने का हक रखता हूं । यद्यपि कई ऐसे कारण हो गये हैं जिनसे आप कहेंगे कि यह सन्दूकड़ी तुम्हें नहीं दी जायगी मगर फिर भी मैं इसी समय इस पर कब्जा कर सकता हूं क्योंकि देवीसिंह जी मुझसे प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि "यह सन्दूकड़ी बन्द की बन्द तुम्हें दिला दूंगा ।"

अस्तु देवीसिंह जी की प्रतिज्ञा झूठी नहीं हो सकती । इतना कह कर

भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखा ॥

देवी०। (महाराज से) निःसन्देह मैं ऐसी प्रतिज्ञा कर चुका हूं ॥

महा० । अगर ऐसा है तो तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी नहीं हो सकती मैं आज्ञा देता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो ॥

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खड़े हुए और उन्होंने इन्द्रदेव के सामने से वह सन्दूकड़ी उठा ली और यह कहते हुए भूतनाथ के हाथ में देदी कि "लो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हूं, तुम महाराज को सलाम करो जिन्होंने मेरी और तुम्हारी इज्जत रख ली ॥"

भूत० । (महाराज को सलाम करके) महाराज की कृपा से अब मैं जी उठा ॥

तेज० । भूतनाथ ! तुम निश्चय जानो कि यह सन्दूकड़ी अभी तक खोली नहीं गई है,अगर सहज में खुलने लायक होता तो शायद खुल गई होती ॥

भूत० । (सन्दूकड़ी को अच्छी तरह देखभाल कर) बेशक यह अभी तक नहीं खुली है, मेरे सिवाय कोई दूसरा आदमी इसे विना तोड़े खोल ही नहीं सकता । यह सन्दूकड़ी मेरी बुराइयों से भरी हुई है, या यों कहिये कि यह मेरे भेदों का खजाना है। यद्यपि इसमें के कई भेद खुल चुके हैं,खुल रहे हैं और खुल जायँगे,तथापि इस समय इसे ज्यों का त्यों बन्द पाकर मैं बराबर महाराज को दोआ देता हुआ यही कहूंगा कि "मैं जी उठा, जी उठा, जी उठा।" अब मैं खुशी से अपनी जीवनी कहने और सुनने के लिये तैयार हूं। साथही इस के यह भी कहे देता हूं कि अपनी जीवनी के सम्बन्ध में जो कुछ मैं कहूंगा सच कहूंगा ॥

इतना कह कर भूतनाथ ने वह सन्दूकड़ी अपने बटुए में रख ली और पुनः हाथ जोड़ के महाराज से बोला,"महाराज ! मैं वादा कर

चुका हूं कि अपना हाल सच २ बयान करूंगा परन्तु मेरा हाल बहुत बड़ा और शोक दुःख से भरा हुआ है । मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेव जी जिन्होंने मेरे अपराधों को क्षमा कर दिया है, कहते हैं कि "तेरी जीवनी से लोगों का उपकार होगा ।" और वास्तव में बात भी ठीक ही है अतएव कई कठिनाइयों पर ध्यान देकर मैं विनय पूर्वक महाराज से एक महीने की मोहलत मांगता हूं इस बीच में मैं अपना पूरा २ हाल लिखकर पुस्तक के रूप में महाराज के सामने पेश करूंगा । महाराज उसे सुन सुना कर यादगार की तौर पर अपने खजाने में रखने की आज्ञा देंगे । इस एक महीने के बीच में मुझे भी सब बातें याद करके लिख लेने का मौका मिलेगा और अपनी निर्दोष स्त्री तथा उन लोगों से जिन्हें देखने की भी आशा नहीं थी परन्तु इस समय यहां बहुत से दुःख भोग कर दोनों कुमारों की बदौलत आगये हैं और जिन्हें मैं अपना दुश्मन समझता था मगर अब महाराज की कृपा से उन लोगों ने मेरे कसूरों को माफ कर दिया है, मिलजुल कर कई बातों का पता लगा लूंगा जिससे मेरा किस्सा सिलसिलेवार और ठीक कायदे से भी हो जायगा ॥"

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्द्रदेव, राजा गोपालसिंह, दोनों कुमारों और दलीपशाह वगैरह की तरफ भी देखा और तुरत ही मालूम कर लिया कि मेरी अर्जी कबूल कर ली जायगी ॥

महाराज ने कहा, "कोई चिन्ता नहीं तबतक हमलोग कई जरूरी कामोंसे भी छुट्टी पा लेंगे ।" राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव ने भी इस बात को पसन्द किया और इसके बाद इन्द्रदेव ने दलीपशाह की तरफ देख कर पूछा, क्यों दलीपशाह ! इसमें तुम लोगों को तो कोई उज्र नहीं है ?"

दलीप० । (हाथ जोड़ कर) कुछ भी नहीं, क्योंकि अब महाराज

की आज्ञानुसार हम लोगों को भूतनाथ से किसी तरह की दुश्मनी भी नहीं और न यही उम्मीद है कि भूतनाथ हमारे साथ किसी तरह की खुटाई करेगा, परन्तु मैं इतना जरूर कहूंगा कि हम लोगों का किस्सा भी महाराज के सुनने लायक है और हम लोग भूतनाथ के बाद अपना किस्सा सुनाया चाहते हैं॥

महाराज०। निःसन्देह तुम लोगों का किस्सा भी सुनने योग्य होगा और हमलोग उसके सुनने की अभिलाषा रखते हैं यदि सम्भव हुआ तो पहिले तुम्हीं लोगों का किस्सा सुनने में आवेगा। मगर सुनो दलीपशाह! यद्यपि भूतनाथ से बड़ी बड़ी बुराइयां हो चुकी हैं और भूतनाथ तुम लोगों का भी कसूरवार है परन्तु इधर हमलोगों के साथ भूतनाथ ने जो कुछ किया है उसके लिये हम इसके अहसानमन्द हैं और इसे अपना हिती समझते हैं॥

इन्द्र०। बेशक, बेशक॥

गोपाल०। जरूर हम लोग इसके अहसान के बोझ से दबे हुए हैं॥

दलीप०। मैं भी ऐसा ही समझता हूं क्योंकि भूतनाथ ने इधर जो जो अनूठे काम किये हैं उसका हाल कुंअर साहब की जुबानी हम लोग सुन चुके हैं। इसी खयाल से तथा कुंअर साहब की आज्ञा से हमलोगों ने सच्चे दिल से भूतनाथ का अपराध क्षमा कर दिया है और कुंअर साहब के सामने इस बात की प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि "भूतनाथ को दुश्मनी की निगाह से कभी न देखेंगे॥

महाराज०। बेशक ऐसा ही होना चाहिये, बहुत सी बातों को सोच कर और इसकी कारगुजारी पर ध्यान देकर हमने इसका कसूर माफ करके इसे अपना ऐयार बना लिया है, आशा है कि अब तुम लोग भी इसे अपनायत की निगाह से देखोगे और पिछली बातों को

बिलकुल भूल जाओगे ॥

दलीप०। महाराज अपनी आज्ञा के विरुद्ध हमलोगों को चलते हुए कदापि न देखेंगे, यही हमारी प्रतिज्ञा है ॥

महाराज०। (अर्जुन तथा दलीप के दूसरे साथी की तरफ देख कर) तुमलोगों की जुबान से भी हम ऐसा ही सुना चाहते हैं ॥

दलीप का साथी०। मेरी भी यही प्रतिज्ञा है और ईश्वर से प्रार्थना है कि वह मेरे दिल में दुश्मनी के बदले दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने वाली भूतनाथ की मुहब्बत पैदा करे ॥

महाराज०। शाबाश! शाबाश!!

अर्जुन०। कुंअर साहब के सामने मैं जो कुछ प्रतिज्ञा कर चुका हूं उसे महाराज सुन ही चुके होंगे, इस समय महाराज के सामने भी शपथ खा कर कहता हूं कि स्वप्न में भी भूतनाथ के साथ दुश्मनी का ख्यान आने पर मैं अपने को दोषी समझूंगा ॥

इतना कह कर अर्जुनसिंह ने वह तस्वीर जो उसके हाथ में थी फाड़ डाली और टुकड़े २ कर के भूतनाथ के आगे फेंक दी और पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा, "यदि आज्ञा हो और बेअदबी न समझी जाय तो हमलोग इसी समय भूतनाथ से गले से गले मिल कर अपने उदास दिल को प्रसन्न कर लें ॥

महाराज०। यह तो हम स्वयम् कहने वाले थे ॥

इतना सुनते ही दोनों दलीप, अर्ज्जुन और भूतनाथ आपुस में गले गले मिले और इसके बाद महाराज का इशारा पाकर एक साथ बैठ गये ॥

भूतनाथ०। (दूसरे दलीप और अर्ज्जुन की तरफ देख कर) कृपा करके मेरे दिल का खुटका मिटाओ और साफ साफ बता दो कि तुम दोनों में से असल में अर्ज्जुनसिंह कौन है? जब मैं दलीपशाह

को बेहोश करके उस घाटी में ले गया था * तब तुम दोनों में से कौन महाशय वहां पहुंच कर दूसरे दलीपशाह बनने के लिये तैयार हुए थे ॥

दूसरा दलीप० । (हंस कर) उस दिन मैं ही तुम्हारे पास पहुंचा था इत्तफाक से उस दिन मैं अर्जुनसिंह की सूरत बन कर बाहर घूम रहा था, और जब तुम दलीपशाह को धोखा देकर ले चले तब मैंने छिप कर पीछा किया था । आज केवल धोखा देने के लिये अर्जुनसिंह के रहते भी मैं अर्जुनसिंह बन कर दलीपशाह के साथ यहां आया ॥

इतना कह कर दूसरे दलीप ने अपने पास से गीला गमछा उठाया और अपने चेहरे का कच्चा रङ्ग पोंछ डाला जो उसने थोड़ी हा देर के लिये बनाया या लगाया था ॥

चेहरा साफ होते ही उसकी सूरत ने राजा गोपालसिंह को चौंका दिया और वह यह कहते हुए उसके पास चले गए कि "क्या भरतसिंह आप ही हैं जिनके विषय में इन्द्रजीतसिंह ने हमें नकाबपोश बन कर इत्तला दी थी ?" * और इसके जवाब में "जी हां" सुन कर वे भरतसिंह के गले से चिमट गए । इसके बाद उनका हाथ थामे हुए गोपालसिंह अपनी जगह पर चले आये और भरतसिंह को अपने पास बैठा कर महाराज से बोले, "इनके मिलने की मुझे हद्द से ज्यादे खुशी हुई, बहुत देर से मैं चाहता था कि इनके विषय में कुमार से कुछ पूछूं ॥"

महाराज० । मालूम होता है कि इन्हें भी दारोगा ही ने अपना शिकार बनाया था ॥

भरत० । जी हां, आज्ञा होने पर मैं अपना हाल बयान करूंगा ॥

---

* देखो हिस्सा २० बयान १३ ॥

* पढ़ो हिस्सा २० बयान ८ में कुमार की चीठी ॥

इन्द्रजीत० । (महाराज से) तिलिस्म के अन्दर मुझे पांच कैदी मिले थे जिनमें से तीन तो यही अर्जुनसिंह, भरतसिंह और दलीपशाह हैं । इनके अतिरिक्त दो और हैं जो यहां बुलाये नहीं गये । दारोगा, मायारानी तथा उनके पक्ष वालों के सम्बन्ध में इन पांचों का किस्सा सुनने योग्य है, जब कैदियों का मुकद्दमा होगा तब आप देखेंगे कि इन लोगों की सूरत देख कर कैदियों की क्या हालत होती है ॥

महाराज० । वे दोनों कहां हैं ?

इन्द्रजीत० । इस समय यहां मौजूद नहीं हैं, छुट्टी लेकर अपने घर की अवस्था देखने गये हैं दो चार दिन में आ जायंगे ॥

भूत० । (इन्द्रदेव से) यदि आज्ञा हो तो मैं भी कुछ पूछूं ?

इन्द्रदेव० । आप जो कुछ पूछेंगे उसे मैं खूब जानता हूं, मगर खैर पूछिये ॥

भूत० । कमला की मां आप लोगों को कहां से और क्योंकर मिली ?

इन्द्र० । यह तो उसी की जुबानी सुनने में ठीक होगा, जब वह अपना किस्सा बयान करेगी कोई बात छिपी न रह जायगी ॥

भूत० । और नानक की मां तथा देवीसिंह जी की स्त्री के विषय में कब मालूम होगा ?

इन्द्र० । वह भी उसी समय मालूम हो जायगा । मगर भूतनाथ ! (मुसकुरा कर) तुमने और देवीसिंह ने नकाबपोशों का व्यर्थ पीछा करके यह खुटका और तरद्दुद खरीद लिया, यदि उनका पीछा न करते और पीछे से तुम दोनों को मालूम होता कि तुम्हारी स्त्रियां भी इस काम में शरीक हुई थीं तो तुम दोनों को एक प्रकार की प्रसन्नता होती । प्रसन्नता तो अब भी होगी मगर खुटके और तरद्दुद से कुछ खून सुखा लेने के बाद ॥

इतना कह कर इन्द्रदेव हंस पड़े और इसके बाद सभों के चेहरों

पर मुसकुराहट दिखाई देने लगी ॥

तेज०। (मुसकुराते हुए देवीसिंह से) अब तो आपको भी मालूम हो गया होगा कि आपका लड़का तारासिंह कई विचित्र भेदों को आप से क्यों छिपाता था ?

देवी०। जी हां, सब कुछ मालूम हो गया। जब अपने को प्रगट करने के पहिले ही दोनों कुमारों ने भैरो और तारा को अपना साथी बना लिया तो हमलोग जहां तक आश्चर्य्य में डाले जाते थोड़ा था ॥

देवीसिंह की बात सुन कर पुनः सभों ने मुसकुरा दिया और अब दर्बार का रङ्ग ढङ्ग ही कुछ दूसरा हो गया अर्थात् तरद्दुद के बदले सभों के चेहरे पर हँसी और मुसकुराहट दिखाई देने लगी ॥

तेज०। (भूतनाथ से) भूतनाथ ! आज तुम्हारे लिये बड़ी खुशी का दिन है क्योंकि और बातों के अतिरिक्त तुम्हारी नेक और सती स्त्री भी तुम्हें मिल गई जिसे तुम मरा हुआ समझते थे और हरनामसिंह तुम्हारा लड़का भी तुम्हारे पास बैठा हुआ दिखाई देता है जो बहुत दिनों से गायब था और जिसके लिये वेचारी कमला बहुत ही परेशान थी, जब वह हरनामसिंह का हाल सुनेगी तो बहुत ही प्रसन्न होगी ॥

भूत०। निःसन्देह ऐसा ही है, परन्तु मैं हरनामसिंह के सामने एक सन्दूकड़ी देख कर डर रहा हूं और सोचता हूं कि कहीं वह भी हमारे लिये दुःखदाई मसाला लेकर न आया हो !!

इन्द्रदेव०। (हँस कर) भूतनाथ ! अब तुम अपने दिल को खुटके में न डालो, जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम पूरे तौर पर महाराज के ऐयार हो गये, किसी की मजाल नहीं कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ दे सके और महाराज भी तुम्हारे बारे में अब किसी तरह की शिकायत नहीं सुना चाहते। हरनामसिंह तो तुम्हारा लड़का

हो है वह तुम्हारे साथ बुराई क्यों करने लगा ॥

इसी समय महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जीतसिंह की तरफ देख क कुछ इशारा किया और जीतसिंह ने इन्द्रदेव से कहा, "भूतनाथ क मामला तो अब तै हो गया, इनके बारे में महाराज अब किसी तर की शिकायत सुना नहीं चाहते, इसके अतिरिक्त भूतनाथ ने वा भी किया है कि अपनी जीवनी लिख कर महाराज के सामने पे करेंगे । अस्तु अब रह गये दलीपशाह, अर्जुनसिंह और भरतसि तथा कमला की मां । इन सभों पर जो कुछ मुसीबतें गुजरी हैं उ महाराज सुना चाहते हैं परन्तु इस समय नहीं, क्योंकि बिलम्ब बहु हो गया अब महाराज आराम करेंगे । अस्तु अब दर्बार बर्खास्त कर चाहिये जिसमें और लोग भी आपुस में मिलजुल कर अपने दि की कुलफत निकाल लें क्योंकि अब यहां किसी को किसी से मिल में अथवा आपुस का बर्ताव करने में परहेज न होना चाहिये ॥

इन्द्रदेव० । (हाथ जोड़ कर) जो आज्ञा ॥

दर्बार बरखास्त हुआ । इन्द्रदेव की इच्छानुसार महाराज आरा करने के लिये जीतसिंह को साथ लिये हुए एक दूसरे कमरे में च गये । इसके बाद और सब कोई उठे और अपने २ ठिकाने पर जैस कि इन्द्रदेव ने इन्तजाम कर दिया था चले गये । कई आदमी जे आराम नहीं किया चाहते थे, बङ्गले के बाहर निकल कर बगीचे क तरफ रवाना हुए ॥

दूसरा बयान।

एक सुन्दर सुनहरे पावों वाली मुसहरी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह लेटे हुए पान चबा रहे हैं। ऐयारों के सिरताज जीतसिंह उसी मुसहरी के पास फर्श पर बैठे तथा दाहिने हाथ से मुसहरी पर ढासना लगाये धीरे धीरे बातें कर रहे हैं॥

महाराज०। इन्द्रदेव का स्थान बहुत ही सुन्दर और रमनीक है, यहां से जाने को तो जी ही नहीं चाहता॥

जीत०। ठीक है, इस स्थान की तरह इन्द्रदेव का बर्ताव भी चित्त प्रसन्न करता है, परन्तु मेरी राय यही है कि जहां तक जल्द हो यहां से लौट चलना चाहिये॥

महाराज०। हम भी यही सोचते हैं, इन लोगों की जीवनी और आश्चर्य्य भरी कहानी तो बर्षों तक सुनते ही रहेंगे परन्तु इन्द्रजीत और आनन्द की शादी जहां तक जल्द हो सके कर ही देनी चाहिये जिसमें और किसी तरह के बिघ्न पड़ने का डर न रहे॥

जीत०। जरूर ऐसा होना चाहिये, इसीलिये मैं कहता हूं कि यहां से जल्द चलिये, भरतसिंह वगैरह की कहानी वहां ही सुन लेंगे या शादी के बाद और लोगों (औरतों) को भी यहां ले आवेंगे जिसमें वे लोग भी तिलिस्म और इस स्थान का आनन्द ले लें॥

महाराज०। अच्छी बात है, खैर यह तो बताओ कि कमलिनी और लाडिली के विषय में भी तुमने कुछ सोचा?

जीत०। इन दोनों के लिये जो कुछ आप बिचार रहे हैं वही मेरी भी राय है, उनकी भी शादी दोनों कुमारों के साथ कर ही देनी चाहिये॥

महाराज०। है न यही राय?

जीत० । जी हां, मगर किशोरी और कामिनी की शादी के बाद क्योंकि किशोरी एक राजा की लड़की है उसी की औलाद को गद्दी का हकदार होना चाहिये, यदि कमलिनी के साथ पहिले शादी हो जायगी तो उसीका लड़का गद्दी का मालिक समझा जायगा, इसी से मैं चाहता हूं कि पटरानी किशोरी ही बनाई जाय ॥

महाराज० । यह बात तो ठीक है, अस्तु ऐसा ही होगा और साथ ही इसके कमला की शादी भैरोसिंह के साथ और इन्दिरा की तारा के साथ कर दी जायगी ॥

जीत० । जो मर्जी ॥

महाराज० । अच्छा तो अब यही निश्चय रखना चाहिये कि दलीप-शाह और भरतसिंह की बीती यहां से चलने बाद घर ही पर सुनना ॥

जीत० । जी हां, सच तो यों है कि ऐसा करना ही पड़ेगा, क्योंकि इन लोगों की कहानी, दारोगा और जयपाल इत्यादि कैदियों से घना सम्बन्ध रखती है बल्कि यों कहना चाहिये कि इन्हीं लोगों के इजहार पर उन लोगों के मुकद्दमे का दारोमदार (हेसनेस) है और यही लोग उन कैदियों को लाजवाब करेंगे ॥

महाराज० । निःसन्देह ऐसा ही है, इसके अतिरिक्त उन कैदियों ने हम लोगों तथा हम लोगों के सहायकों को बड़ा ही दुःख दिया है और दोनों कुमारों की शादी में बड़े बड़े बिघ्न डाले हैं अतएव उन कम्बख्त कैदियों को कुमारों की शादी का जलसा भी दिखा देना चाहिये, वे लोग अपनी आंखों से देख लें कि जिन बातों को वे बिगाड़ा चाहते थे वे बातें आज कैसी खूबी और खुशी के साथ हो रही हैं । इसके बाद उन लोगों को सजा देना चाहिये । मगर अफसोस तो यह है कि मायारानी और माधवी जमानियां ही में मार डाली गईं नहीं तो वे दोनों भी देख लेतीं कि.........

जीत०। खैर उनकी किस्मत में वही बदा थी॥

महाराज०। अच्छा तो एक बात का और खयाल रखना चाहिये॥

जीत०। आज्ञा॥

महाराज०। भूतनाथ वगैरह को मौका देना चाहिये कि वे अपने सम्बन्धियों से बखूबी मिलजुल कर अपने दिल का खुटका निकाल लें हमलोग तो उनका हाल वहां चल कर सुनेहींगे॥

जीत०। बहुत अच्छा॥

इतना कहकर जीतसिंह उठ खड़े हुए और कमरे बाहर चले गये॥

तीसरा बयान।

इन्द्रदेव के इस स्वर्ग तुल्य स्थान में बङ्गले से कुछ दूर हट कर बगीचे के दक्खिन तरफ एक घना जामुन का पेड़ है: जिसे सुन्दर लताओं ने घेर कर देखने योग्य बना रक्खा है और वहां एक कुंज की सी छटा दिखाई पड़ती है। उसी के नीचे साफ पानी का चश्मा भी बह रहा है। अपनी सुरीली बोली से लोगों के दिल लुभा लेने वाली चिड़ियायें सन्ध्या का समय निकट जान अपने घोंसलों के चारों तरफ फुदुक फुदुक कर अपने अपौरुष बच्चों को चैतन्य कर रही हैं कि "लो मैं बहुत दूर से तुम लोगों के लिये दाना पानी अपने पेट में भर लाई हूं जिससे तुम्हारी सन्तुष्टी की जायगी॥"

यह रमणीक स्थान ऐसा है कि यहां दो चार आदमी छिप कर इस तरह बैठ सकते हैं कि वे चारों तरफ के आदमियों को बखूबी देख लें और उन्हें कोई भी न देखे। इस स्थान पर हम इस समय भूतनाथ और उसकी पहिली स्त्री अर्थात् कमला की मां को पत्थर की चट्टानों पर बैठे बातें करते हुए देख रहे हैं। ये दोनों मुद्दत के बिछड़े

हुए हैं और दोनों के दिल में नहीं तो कमला की मां के दिल में तो जरूर शिकायतों का खजाना भरा हुआ है जिसे वह इस समय बेतरह उगलने के लिये तैयार है। प्यारे पाठक! आइये हम आप मिल कर जरा इन दोनों की बातें तो सुन लें॥

भूत०। शान्ता! * आज तुझ से मिल कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ॥

शान्ता०। क्यों? जो चीज किसी कारणवश खो जाती है उसे यकायक पाने से प्रसन्नता हो सकती है, मगर जो चीज जान बूझ कर फेंक दी जाती है उसके पाने से प्रसन्नता कैसी?

भूत०। यदि किसी को कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा मिल जाय और वह उसे बेकार या बदसूरत समझ कर फेंक दे, तथा कुछ समय के बाद जब उसे यह मालूम हो कि वास्तव में वह हीरा था पत्थर नहीं, तो क्या उसके फेंक देने का उसको दुःख न होगा? या उसे पुनः पाकर प्रसन्नता न होगी?

शान्ता०। अगर वह आदमी, जिसने हीरे को पत्थर समझ कर फेंक दिया है, यह जान कर कि वह वास्तव में हीरा था, उसकी खोज करे, या इस विचार से कि उसे मैंने फलानी जगह छोड़ा या फेंका है वहां जाने से जरूर मिल जायगा, उसकी तरफ दौड़ा जाय तो बेशक समझा जायगा कि उसे उसके फेंक देने का रञ्ज हुआ था और उसके मिल जाने से प्रसन्नता होगी। यदि ऐसा नहीं है तो नहीं॥

भूत०। ठीक है, मगर वह आदमी उस जगह जहां उसने हीरे को पत्थर समझ कर फेंका था, पुनः उसे पाने की आशा में लम्बी जायगा जब अपना जाना सार्थक समझेगा। परन्तु जब उसे यह निश्चय हो जायगा कि वहां जाने से उस हीरे के साथ तू भी बर्बाद हो जायगा

* शान्ता कमला की मां का नाम था॥

अर्थात् वह हीरा भी काम का न रहेगा और तेरी भी जान जाती रहेगी, तब वह उसकी खोज में क्यों जायगा ?

शान्ता०। ऐसी अवस्था में वह अपने को इस योग्य बनावेहीगा नहीं कि उस हीरे की खोज में जाने लायक न रहे, यदि यह बात उसके हाथ में होगी और वह उस हीरे को हीरा वास्तव में समझता होगा॥

भूत०। बेशक ऐसी अवस्था में शिकायत की जगह हो सकती है अगर वह अपने बिगड़े हुए कटीले रास्ते को जिसके सबब से वह उस हीरे तक नहीं पहुंच सकता था पुनः सुधारने और साफ करने के लिये परले सिरे का उद्योग करता हुआ दिखाई न देता॥

शान्ता०। ठीक है, यदि वह हीरा यह न देखता कि उसका अधिकारी या मालिक बिगड़ी हुई अवस्था में भी एक मानिक के टुकड़े को कलेजे से लगाये हुए घूम रहा है और यदि वह चाहता तो उस हीरे को भी उसी तरह रख सकता था। मगर अफसोस ! उस हीरे की तरफ जो वास्तव में पत्थर ही समझा गया है, कोई भी ध्यान नहीं देता जो बेहाथ पैर का होकर भी उसी मालिक की खोज में जगह २ की मिट्टी छानता फिरता हो जिसने जान बूझ कर उसे पैर में गड़ने वाले कँकड़ की तरह अपने आगे से उठा कर फेंक दिया हो और जानता हो कि उस पत्थर के टुकड़े के साथ जिसे वह व्यर्थ ही हीरा कह रहा है वास्तव में छोटी २ दो कनी भी चिपकी हुई हैं जो छोटी होने के कारण सहज ही मिट्टी में मिल जा सकती हैं॥

भूत०। परन्तु अदृष्ट भी कोई वस्तु है, प्रारब्ध भी कुछ कही जाती है और होनहार भी किसी का नाम है॥

शान्ता०। यह दूसरी बात है, इन सभों का नाम लेना वास्तव में निरुत्तर (लाजवाब) होना और असली बहस को जान बूझ कर बन्द

कर देना ही नहीं है बल्कि उद्योग ऐसे अनमोल पदार्थ की तरफ से मुंह फेर लेना भी है । अस्तु जाने दीजिये मेरी यह इच्छा भी नहीं है कि आप को परास्त करने की अभिलाषा से मैं बिवाद करती ही जाऊं, यह तो बात ही बात में कुछ कहने का मौका मिल गया तो छाती पर पत्थर रख कर जी का उबाल निकाल लिया, नहीं तो जरूरत ही क्या थी ॥

भूतनाथ० । मैं कसूरवार हूं और बेशक कसूरवार हूं मगर यह उम्मीद भी तो न थी कि ईश्वर की कृपा से तुम्हें इस तरह जीती जागती इस दुनिया में देखूंगा ॥

शान्ता० । अगर यही आशा या अभिलाषा होती तो अपने परलोकगामी होने की खबर मुझ अभागी के कानों तक पहुंचाने की कोशिश क्यों करते ? और........

भूत० । बस बस बस, अब मुझ पर दया करो, इस ढङ्ग की बातें छोड़ दो, क्योंकि आज बड़े भागों से मेरे लिये खुशी का दिन नसीब हुआ है । इसे जली कटी बातें सुना कर पुनः कड़वा न करो और यह सुनाओ कि तुम इतने दिनों तक कहां छिपी हुई थीं और अपनी लड़की कमला को किस तरह धोखा दे कर चली गईं कि आज तक वह तुमको मरी हुई समझती है ?

इस समय शान्ता का खूबसूरत चेहरा नकाब से ढका हुआ नहीं है । यद्यपि वह जमाने के हाथों सताई हुई दुबली पतली और उदास है और उसका तमाम बदन पीला पड़ गया है मगर फिर भी आज की खुशी उसके सुन्दर और बादामी चेहरे पर रौनक पैदा कर रही है और इस बात की इजाजत नहीं देती कि कोई उसे ज्यादे उम्र वाली कह कर खूबसूरतों की पँक्ति में बैठने से रोके । हजार गई गुजरी होने पर अब भी वह रामदेई (भूतनाथ की दूसरी स्त्री) से बहुत

अच्छी मालूम पड़ती है और इस बात को भूतनाथ भी बड़े गौर से देख रहा है। भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर शान्ता ने अपनी डबडबाई हुई बड़ी आंखों को आंचल से साफ किया और एक लम्बी सांस लेकर कहा:—

शान्ता०। मैं रणधीरसिंह के यहां से कभी न भागती अगर अपना मुंह किसी को दिखाने लायक समझती। मगर अफसोस! आप के भाई ने इस बात को अच्छी तरह मशहूर कर दिया कि—आप के दुश्मन (अर्थात् आप) इस दुनिया से उठ गए। यद्यपि इसके सबूत में उन्होंने बहुत सी बातें पेश कीं मगर मुझे विश्वास न हुआ तथापि इस गम में मैं बीमार होगई और दिन दिन मेरी बीमारी बढ़ती ही गई उसी जमाने में मेरी मौसेरी बहिन अर्थात् दलीपशाह की स्त्री मुझे देखने के लिये मेरे घर आई, मैंने अपने दिल का हाल और बीमारी का सबब उससे बयान किया और यह भी कहा कि "जिस तरह मेरे पति ने सही सलामत रह कर भी अपने को मरा हुआ मशहूर किया है उसी तरह मुझे भी तुम कहीं छिपा कर मरा हुआ मशहूर कर दो। अगर ऐसा हो जायगा तो मैं अपने पति को ढूंढ़ निकालने का उद्योग करूंगी।" उन्होंने मेरी बात पसन्द कर ली और लोगों को यह कर कि "मेरे यहां की आबहवा अच्छी है वहां शान्ता को बहुत जल्द आराम हो जायगा" मुझे अपने यहां उठा ले जाने का बन्दोबस्त किया और रणधीरसिंह जी से इजाजत भी लेली। मैं दो दिन तक अपनी लड़की कमला को नसीहत करती रही और इसके बाद उसे किशोरी के हवाले कर के और अपने छोटे दूध पीते बच्चे को गोद में ले कर दलीपशाह के घर चली आई और धीरे धीरे आराम होने लगी। थोड़े ही दिन बाद दलीपशाह के घर में उस भयानक

आधी रात के समय आप का आना हुआ, मगर हाय! उस समय

आपकी अवस्था पागलों की सी हो रही थी और आपने धोखे में पड़ कर अपने प्यारे लड़के का जिसे मैं अपने साथ लेगई थी खून किया ॥*

इतना कहते कहते शान्ता का जी भर आया और वह हिचकियां ले ले कर रोने लगी भूतनाथ की भी बुरी अवस्था हो रही थी और अब इससे ज्यादे वह इस घटना का हाल नहीं सुना चाहता था। वह यह कहता हुआ कि "बस माफ करो, माफ करो, अब इसका जिक्र न करो" अपनी स्त्री शान्ता के पैरों पर गिरा ही चाहता था कि उसने पैर खैंच कर भूतनाथ का सिर थाम लिया और कहा—हां हां! यह क्या करते हो? क्यों मेरे सिर पर पाप चढ़ाते हो! मैं खूब जानती हूं कि आपने उसे नहीं पहिचाना मगर इतना जरूर समझते थे कि वह दलीपशाह का लड़का है। मगर फिर भी आप को ऐसा नहीं करना चाहता था, खैर अब मैं इस जिक्र को छोड़ देती हूं॥

इतना कह कर शान्ता ने अपने आंसू पोंछे और फिर इस तरह बयान करना शुरू किया:—

"शोक और दुःख से मैं पुनः बीमार पड़ गई मगर अशालता ने धीरे धीरे कुछ दिन में अपनी तरह मुझे भी हरा (आराम) कर दिया। वह आशा केवल इसी बात की थी कि एक दफे आपसे जरूर मिलूंगी और आपको ठीक राह पर लाने के लिये उद्योग करूंगी, मुश्किल तो यह थी कि उस घटना ने दलीपशाह को आपका दुश्मन बना दिया था, केवल घटना ने नहीं, उसके अतिरिक्त दलीपशाह को बर्बाद करने में भी आपने कुछ उठा न रक्खा था, यहां तक कि आखिर वह दारोगा के हाथ में फंस ही गया॥"

भूत०। (बेचैनी के साथ लम्बी सांस लेकर) ओफ! मैं कह चुका

* दलीपशाह ने बीसवें हिस्से के बारहवें बयान में इसी घटना की तरफ भूतनाथ ने इशारा किया था॥

हूं कि इस बात को मत छेड़ो केवल अपना हाल बयान करो मगर तुम नहीं मानतीं ॥

शान्ता०। नहीं नहीं मैं तो अपना ही हाल कह रही हूं! खैर मुख्तसर ही में बयान करती हूं ॥

"उस घटना के बाद ही मेरी इच्छानुसार दलीपशाह ने मेरा और बच्चे का मर जाना मशहूर किया जिसे सुन कर हरनामसिंह और कमला भी मेरी तरफ से निश्चिन्त होगई। जब खुद दलीपशाह भी दारोगा के हाथ में फंस गया तब मैं बहुत ही परेशान हुई और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये! उस समय दलीपशाह के घर में उसकी स्त्री एक छोटा बच्चा और मैं केवल तीन ही आदमी रह गये थे। दलीपशाह की स्त्री को मैंने धीरज धराया और कहा कि "तू अभी अपनी जान मत बर्बाद कर मैं बराबर तेरा साथ दूंगी और दलीपशाह को खोज निकालने में उद्योग करूंगी मगर अब हम लोगों को यह घर एकदम छोड़ देना चाहिये और ऐसी जगह छिप कर रहना चाहिये जहां दुश्मनों को हम लोगों का पता न लगे।" आखिर ऐसाही हुआ अर्थात् हम लोगों ने जो कुछ जमा पूंजी थी उसे लेकर उस घर को एकदम छोड़ दिया और काशीजी में जाकर एक अँधेरी गली के पुराने और गंदे मकान में डेरा डाला मगर इस बात की टोह लेते रहे कि दलीपशाह कहां हैं। अथवा छूटने के बाद अपने घर की तरफ जा कर हम लोगों को ढूँढ़ते हैं या नहीं। इसी फिक्र में मैं कई दफे सूरत बदल कर बाहर निकली और इधर उधर घूमती रही। इत्तफाक से मेरे दिल में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह अपने लड़के हरनामसिंह से छिप कर मिलना और उसे अपना साथी बना लेना चाहिये। ईश्वर ने मेरी यह मुराद पूरी की। जब माधवी कुंअर इन्द्रजीतसिंह को पकड़ लेगई और उसके बाद उसने किशोरी पर

भी कब्ज़ा कर लिया तब कमला और हरनामसिंह दोनों आदमी किशोरी की खोज में निकले और एक दूसरे से जुदा होगये। किशोरी की खोज में हरनामसिंह काशी की गलियों में घूम रहा था, जब उस पर मेरी निगाह पड़ी और मैंने उसे इशारे से अलग बुला कर अपना परिचय दिया। उसको मुझसे मिल कर जितनी खुशी हुई उसे मैं बयान नहीं कर सकती। मैं उसे अपने घर में ले आई और सब हाल उसे सुना कर अपने दिल का इरादा जाहिर किया जिसे उसने खुशी से मंजूर कर लिया। उस समय मैं चाहती तो कमला को भी अपने पास बुला लेती मगर नहीं, उसे किशोरी की मदद के लिये छोड़ दिया क्योंकि किशोरी के निमक को मैं किसी तरह भूल नहीं सकती थी। अस्तु केवल हरनामसिंह को अपने पास रख दिया और खुद चुपचाप घर में बैठी रह कर आपके और दलीपशाह के पता लगाने का काम लड़के के सपुर्द किया। बहुत दिनों तक वह बेचारा लड़का चारों तरफ मारा मारा फिरा और तरह तरह की खबरें ला कर मुझे सुनाता रहा। जब आप प्रगट होकर कमलिनी के साथी बन गये और उनके काम के लिये चारो तरफ घूमने लगे तब हरनामसिंह ने भी आपको देखा और पहिचान कर मुझे इत्तला दी। थोड़े दिन बाद यह भी उसी की ज़ुबानी मालूम हुआ कि "अब आप नेकनाम होकर दुनिया में अपने को प्रगट किया चाहते हैं।" उस समय मैं बहुत प्रसन्न हुई और मैंने हरनाम को राय दी कि तू किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार की शागिर्दी करले। आखिर वह तारासिंह से मिला और उनके साथ रह कर थोड़े ही दिन में उनका प्यारा शागिर्द बल्कि दोस्त बन गया, तब उसने अपना सच सच हाल तारासिंह से कह सुनाया और तारासिंह ने भी उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव करके उसको इच्छानुसार उसके भेदों को छिपाया। तब से हरनामसिंह

सूरत बदले हुए तारासिंह का काम करता रहा और मुझे भी आप को पूरी पूरी खबर मिलती रही। आपको शायद इस बात की खबर न होगी कि तारासिंह की मां चम्पा से और मुझसे बहिन का रिश्ता है, वह मेरे मामां की लड़की है। अस्तु जब चम्पा ने अपने लड़के की जुबानी हरनामसिंह का हाल सुना और यह मालूम हुआ कि वह रिश्ते में हमारा भतीजा होता है तब उसने भी उस पर दया प्रगट की और वह इसे बराबर अपने लड़के की तरह मानती रही॥

जमानियां के तिलिस्म को खोलते और कैदियों को साथ लिये हुए जब दोनों कुमार उस खोह वाले तिलिस्मी बङ्गले में पहुंचे तो उन्होंने भैरोंसिंह और तारासिंह को अपने पास बुला लिया और और तिलिस्म का पूरा पूरा हाल उनसे कह के उन दोनों को अपने पास रक्खा। दलीपशाह का हाल भी तारासिंह को मालूम हुआ कि उनके बालबच्चे ईश्वर की कृपा से अभी तक राजा खुशी हैं साथ ही इसके मेरा हाल भी दलीपशाह को मालूम हुआ। उस समय तारासिंह दोनों कुमारों से आज्ञा ले कर हरनामसिंह को उस बङ्गले में ले आये और दलीपशाह से मुलाकात कराई। हरनामसिंह को साथ ले कर दलीपशाह काशी गये और वहां से मुझको तथा अपनी स्त्री और लड़के को साथ लेकर कुमार के पास चले आये। जब तारासिंह की जुबानी चम्पा ने यह हाल सुना तो वह मुझसे मिलने के लिये तारासिंह के साथ यहां अर्थात् उस बङ्गले आई॥"

भूत०। जब दोनों कुमार नकाबपोश बन कर भैरोंसिंह और तारासिंह को यहां ले आये उसके बाद तो तारासिंह वहां नहीं गये॥

शान्ता०। जी उसके पहिले ही से वे दोनों यहां आते जाते रहे उस दिन तो प्रगट रूप से यहां लाए गए थे। क्या इतना हो जाने पर भी आपको अन्दाज से मालूम न हुआ?

भूत० । ठीक है, इस बात का शक तो मुझे और देवीसिंह को भी होता रहा ॥

शान्ता का किस्सा भूतनाथ ने बड़े गौर के साथ ध्यान दे कर सुना और वह कुछ देर तक आरजू मिन्नत के साथ शान्ता से माफी मांगता रहा । इसके बाद पुनः दोनों में बातचीत होने लगी ॥

शान्ता० । अब तो आपको मालूम हुआ कि चम्पा यहां क्योंकर और किस लिये आई ?

भूत० । हां यह भेद तो खुल गया मगर इसका पता न लगा कि नानक और उसकी मां का यहां आना कैसे हुआ ॥

शान्ता० । सो मैं न कहूंगी यह उसी से पूछ लेना ॥

भूतनाथ० । (ताज्जुब से) सो क्यों ?

शान्ता० । मैं उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं चाहती ॥

भूतनाथ० । आखिर इसका कोई सबब भी है ?

शान्ता० । सबब यही है कि उसकी यहां कोई इज्जत नहीं है बल्कि बेकदरी की निगाह से देखी जाती है ॥

भूत० । वह है भी इसी योग्य, पहिले तो मैं उसे प्यार करता था मगर जब से सुना कि उसी की बदौलत मैं जैपाल (नकली बलभद्र) का शिकार बन गया और एक भारी आफत में फँस गया, तब से मेरी भी तबीयत उससे खट्टी हो गई ॥

शान्ता० । सो क्यों ?

भूत० । यही कि "वह बेगम की गुप्त सहेली नन्हों से गहरी मुहब्बत रखती है * और इसी सबब से वह कागज का मुट्ठा जो मैंने अपने फायदे के लिये तैयार किया था गायब हो के जयपाल के हाथ लग गया और उसने मुझे नुकसान पहुंचाया । इस बात का सबूत

* १८ वां हिस्सा १२ वां बयान, देखो नकाबपोश की बातचीत।

भी मैंने अपनी आंखों से देख लिया ॥"

शान्ता०। सो तो ठीक है, मैं भी दलीपशाह से यह बात सुन चुकी हूं ॥

भूत०। इसी से अब मैं उसे अपनी स्त्री नहीं बल्कि दुश्मन समझता हूं। केवल नन्हों ही से नहीं बल्कि कम्बख्त गौहर से भी वह दोस्ती रखती थी और वह दोस्ती पाक न थी। (लम्बी सांस ले कर) अफसोस! इसी से उस खोटी का लड़का नानक भी खोटा ही निकला ॥

शान्ता०। (मुसकुरा कर) तब आप उसके लिये इतना परेशान क्यों थे? क्योंकि यह बात सुनने के बाद ही तो आपने उसे नकाबपोशों के स्थान में देखा था ॥

भूत०। वह परेशानी मेरी उसकी मुहब्बत के सबब से न थी बल्कि इस खयाल से थी कि—कहीं वह मुझ पर कोई नई आफत लाने के लिये तो नकाबपोशों से नहीं आ मिली ॥

शान्ता०। ठीक है, यह खयाल भी हो सकता है ॥

भूत०। फिर इसी बीच में जब उसने मुझे जङ्गल में गाना सुना के धोखा दिया और गिरफ़ार करके अपने स्थान पर ले गई जिसका हाल शायद तुम्हें मालूम होगा, तब मेरा रञ्ज और भी बढ़ गया ॥ *

शान्ता०। यह हाल मुझे मालूम है, मगर वह कार्रवाई उसकी न थी बल्कि इन्द्रदेव की थी, उन्हों ही ने आपके साथ यह ऐयारी की थी और उस दिन जङ्गल में घोड़े पर सवार जो औरत आपको मिली थी जिसे आपने अपनी स्त्री समझा था, वह भी इन्द्रदेव का एक ऐयार ही था, यह बात मैं उन्हीं (इन्द्रदेव) की जुबानी सुन चुकी हूं शायद आपसे भी कहें। हां उस दिन बङ्गले में जिस औरत को आपने देखा वह बेशक नानक की मां थी वह तो खुद कैदियों की

* देखो बीसवां हिस्सा का अन्त ॥

तरह यहां रक्खी गई है मैदान का हवा क्योंकर खा सकती है। दोनों कुमार नहीं चाहते थे कि प्रगट होने के पहिले ही कोई उन लोगों का पता लगा ले, इसी लिये यह सब खेल खेले गए। (कुछ सोच कर) आखिर आपने धीरे धीरे नानक की मां का हाल पूछ ही लिया, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा चाहती थी। अस्तु अब इससे आगे और कुछ भी न कहूंगी, आप उसके बारे में मुझ से न पूछें॥

भूतनाथ०। नहीं नहीं, जब इतना बता चुकी हो तो कुछ और भी बताओ क्योंकि मैं उससे मिल कर कुछ भी नहीं पूछा चाहता बल्कि अब उसका मुंह देखना भी मुझे पसन्द नहीं है। अच्छा यह तो बताओ कि वह कम्बख़्त यहां क्यों लाई गई?

शान्ता०। लाई नहीं गई बल्कि उसी नन्हों के यहां गिरफ़्तार की गई, उस समय नानक भी उसके साथ था॥

भूतनाथ०। (आश्चर्य और क्रोध से) फिर भी उसी नन्हों के यहां गई थी?

शान्ता०। जी हां॥

भूतनाथ०। (लम्बी सांस ले कर) लोग सच कहते हैं कि ऐयाशी का नतीजा बहुत बुरा निकलता है!!

शान्ता०। अस्तु अब उसके बारे में मुझसे कुछ न पूछिये इन्द्रदेव जी आपको सब कुछ बता देंगे॥

भूतनाथ०। हां ठीक है, खैर अब उसके बारे में कुछ न पूछूंगा जो कुछ पूछूंगा वह तुम्हारे और हरनाम ही के बारे में होगा। अच्छा एक बात और बताओ। आज के दर्बार में मैंने हरनाम को हाथ में एक सन्दूकड़ी लिये हुए देखा था वह सन्दूकड़ी कैसी थी और उस में क्या था?

शान्ता०। उसमें दारोगा के हाथ की लिखी हुई बहुत सी चीठियें

हैं जिनके देखने से आपको निश्चय हो जायगा कि आपने दलीपशाह को व्यर्थ ही अपना दुश्मन समझ लिया था। पहिले जब दारोगा ने दलीपशाह को लालच दिखा कर लिखा था कि "वह आपको गिरफ़ार करा दें" तब दो चार चीठियों में तो दलीपशाह ने इस नियत से कि दारोगा की शैतानियों का सबूत उससे मिल कर बटोर ले, दारोगा के मतलब ही का जवाब दिया था जिससे उसने खुश हो कर कई चीठियों में दलीपशाह को तरह तरह के सब्ज बाग दिखलाए, मगर जब दारोगा की कई चीठियां दलीपशाह ने बटोर लीं तब साफ जवाब दे दिया, उस समय दारोगा बहुत घबडाया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि दलीपशाह मुझसे दुश्मनी करके मेरा भेद खोल दे, अस्तु किसी तरह उसे गिरफ़ार कर लेना चाहिये। उस समय कम्बख़्त दारोगा आप से मिला और उसने दलीपशाह की पहिली चीठियां आपको दिखा कर खुद आप ही को दलीपशाह का दुश्मन बना दिया और आप ही के ज़रिये से उसने दलीपशाह को गिरफ़ार भी करा लिया ॥

भूत० । ठीक है, इस विषय में मैंने बहुत बड़ा धोखा खाया ॥

शान्ता० । दलीपशाह को गिरफ़ार कर लेने पर भी वे चीठियां दारोगा के हाथ न लगीं क्योंकि वे दलीपशाह की स्त्री के कब्जे में थीं, अब हमलोग उन्हें अपने साथ लाये हैं जिसमें दारोगा के मुकद्दमे में पेश करें ॥

भूत० । अस्तु अब मेरे दिल का खुटका निकल गया और मुझे निश्चय हो गया कि हरनाम की कोई कार्रवाई मेरे खिलाफ न होगी ॥

शान्ता० । भला वह कोई काम ऐसा क्यों करेगा जिससे आपको तकलीफ हो ? ऐसा खयाल आपको न रखना चाहिये ॥

इन दोनों में इस तरह की बातें हो ही रही थीं कि किसी के आने

की आहट मालूम हुई । भूतनाथ ने घूम कर देखा तो नानक पर निगाह पड़ी । जब वह पास गया तब भूतनाथ ने उससे पूछा, "क्यों क्या चाहते हो ?"

नानक० । मेरी मां आप से मिला चाहती है ॥

भूत० । तो यहां पर क्यों न चली आई ? यहां कोई गैर तो था नहीं ॥

नानक० । सो तो वह जाने ॥

भूत० । अच्छा जाओ, उसे इसी जगह मेरे पास भेज दो ॥

नानक० बहुत अच्छा ॥

इतना कह कर नानक चला गया और इसके बाद शान्ता ने भूतनाथ से कहा, "शायद मेरे सामने आप से बातचीत करना मंजूर न हो, शर्म आती हो या किसी तरह का और भी कुछ खयाल हो अस्तु आज्ञा दीजिये तो मैं चली जाऊं फिर.........

भूत० । नहीं, उसे जो कुछ कहना होगा तुम्हारे सामने ही कहेगी, तुम चुपचाप बैठी रहो ॥

शान्ता० । सम्भव है कि वह मेरे रहते यहां न आवे या उसे इस बात का खयाल हो कि तुम मेरे सामने उसकी बेइज्जती करोगे ॥

भूत० । हो सकता है मगर...(कुछ सोच के) अच्छा तुम जाओ ॥

इतना सुन कर शान्ता वहां से उठी और बङ्गले की तरफ रवाना हुई । इस समय सूर्य्य अस्त हो चुका था और चारों तरफ से अंधेरी झुकी आती थी ॥

चौथा बयान।

इन्द्रदेव का यह स्थान बहुत बड़ा था इस समय यहां जितने आदमी आये हुए हैं उन में से किसी को भी किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती और इसके लिये प्रबन्ध भी बहुत अच्छा कर रक्खा था। औरतों के लिये एक खास कमरा मुकर्रर किया था मगर रामदेई (नानक की मां) की निगरानी की जाती थी और इस बात का भी बन्दोबस्त कर रक्खा था कि कोई किसी के साथ दुश्मनी का बर्ताव न कर सके। राजा सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह और दोनों कुमारों के कमरे के आगे पहरे का पूरा पूरा इन्तजाम हो गया था और हमारे ऐयार लोग भी चौकन्ने रहा करते थे॥

यद्यपि भूतनाथ एकान्त में बैठा हुआ अपनी स्त्री से बातें कर रहा था मगर यह बात इन्द्रदेव और देवीसिंह से छिपी हुई न थी जो इस समय बगीचे में टहलते हुए बात कर रहे थे। इन दोनों के देखते ही देखते नानक, भूतनाथ की तरफ गया और लौट आया, इस के बाद भूतनाथ की स्त्री अपने डेरे पर चली गई और फिर रामदेई अर्थात् नानक की मां भूतनाथ की तरफ जाती हुई मालूम पड़ी। उस समय इन्द्रदेव ने देवीसिंह से कहा, "सिंह जी! देखिये भूतनाथ अपनी पहिली स्त्री से बातचीत कर चुका है अब उसने नानक की मां को अपने पास बुलाया है। शान्ता की जुबानी उसकी खुटाई का हाल भूतनाथ को जरूर मालूम हो गया होगा इस लिये ताज्जुब नहीं कि वह गुस्से में आकर रामदेई के हाथ पैर तोड़ डाले॥"

देवी०। ऐसा करना कोई ताज्जुब की बात नहीं है। उस औरत ने भी तो सजा पाने ही लायक काम किया है॥

इन्द्र०। ठीक है, मगर इस समय उसे बचाना चाहिये।

देवी० । तो जाइये वहां छिप कर तमाशा देखिये मौका पड़ने पर उसकी सहायता कीजियेगा । (मुस्कुरा कर) आप ही आग लगाते हैं और आप ही बुझाने दौड़ते हैं !!

इन्द्र० । (हँस कर) आप तो दिल्लगी करते हैं !!

देवी० । दिल्लगी काहे की, क्या आपने उसे गिरफ़ार नहीं कराया है ? और गिरफ़ार कराया है तो क्या इनाम देने के लिये ?

इन्द्र० । (मुसकुराते हुए) तो आपकी राय है कि इसी समय उसकी मरम्मत की जाय !!

देवी० । चाहिये तो ऐसा ही । जी में आवे तो तमाशा देखने चलिये, कहिये तो मैं भी आपके साथ चलूं ॥

इन्द्र० । नहीं नहीं, ऐसा न होना चाहिये, भूतनाथ आपका दोस्त है और अब तो नातेदार भी है आप ऐसे मौके पर उसके सामने जा सकते हैं, जाइये और उसे बचाइये, मेरा जाना मुनासिब न होगा ॥

देवी० । (हँस कर) तो आप चाहते हैं कि मैं भी भूतनाथ के हाथ से दो एक घूंसे खा लूं ? अच्छा साहब जाता हूं आपका हुक्म कैसे टालूं, आज अपने बड़ी बड़ी बातें मुझे सुनाई हैं इस लिये आप का अहसान भी तो मानना होगा ॥

इतना कहते हुए देवीसिंह पेड़ों की आड़ देते हुए भूतनाथ की तरफ़ रवाना हुए और जब ऐसी जगह पहुंचे जहां से उन दोनों की बातें बखूबी सुन सकते थे, तब एक चट्टान पर बैठ गये और सुनने लगे कि वे दोनों क्या बातें करते हैं ॥

भूत० । खैर अच्छा हुआ जो तुम यहां तक आ गईं, मुझसे मुलाकात भी हो गई और मैं "लामा घाटी" तक जाने से बच गया । मगर यह तो बताओ कि अपनी सहेली "नन्हों" को यहां तक क्यों न लेती आईं मैं भी जरा उससे मिल के अपना कलेजा ठण्ढा कर लेता ?

रामदेई०। नन्हों बेचारी पर क्यों आक्षेप करते हो, उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? और वह यहां आती ही काहे को ? क्या तुम्हारी लौंडी थी ? व्यर्थ ही एक भले आदमी को बदनाम और दिक्क करने के लिये लोग टूटे पड़ते हैं !!

भूत०। (उभड़ते हुए गुस्से को दबा कर) छीः छीः! वह बेचारी हमारी लौंडी क्यों होने लगी लौंडी तो तुम उसकी थीं जो झख मारने के लिये उसके घर गई थीं॥

रामदेई०। (आंचल से आंसू पोछती हुई) अगर मैं उसके यहां गई तो क्या पाप किया ? मैं पहिले ही नानक से कहती थी कि जाकर पूछ आओ तब मैं नन्हों के यहां जाऊं नहीं तो कहीं व्यर्थ ही बात का बतङ्गड़ न बन जाय, मगर लड़के ने न माना और आखिर वही नतीजा निकला। बदमाशों ने वहां पहुंच कर उसे भी बेइज्जत किया और मुझे भी बेइज्जत करके यहां तक घसीट लाये! उसके सिर झूठे ही कलङ्क थोप दिया कि वह "बेगम की सहेली है॥"

इतना कह कर रामदेई नखरे के साथ रोने लगी !!

भूत०। तुमने पहिले भी कभी उसका जिक्र मुझसे किया था कि वह तुम्हारी नातेदार है ? या मुझसे पूछ कर कभी उसके यहां गई थीं॥

रामदेई०। एक दफे गई सो तो यह गति हुई और जाती तो न मालूम क्या होता !!

भूत०। जो लोग तुझे यहां ले आये हैं वे बदमाश थे ?

रामदेई०। बदमाश तो कहे ही जायँगे। जो व्यर्थ दूसरों को दुःख दें वही बदमाश होते हैं और क्या बदमाशों के सिर सींघ होती है ? तुम्हारी अक्ल पर तो पत्थर पड़ गया है कि जो लोग तुम्हारी बेइज्जती पर बेइज्जती किये ही जाते हैं उन्हीं के लिये तुम जान दे रहे हो ! न मालूम तुम्हें ऐसी क्या गरज पड़ी हुई है॥

भूत० । ठीक है ठीक है, यही राय लेने के लिये तो मैंने तुम्हें यहां एकान्त में बुलाया है अगर तुम्हारी राय होगी तो मैं देखते देखते इन लोगों से बदला ले लूंगा क्या मैं कमजोर या दब्बू हूं ?

रामदेई० । जरूर बदला लेना चाहिये, अगर तुम ऐसा न करोगे तो मैं समझूंगी कि तुमसे बढ़के कमीना कोई नहीं है ॥

इतना सुन कर भूतनाथ को बेहिसाब क्रोध चढ़ आया मगर फिर भी उसने अपने क्रोध को दबाया और कहा :—

भूत० । अच्छा तो अब मैं ऐसा ही करूंगा मगर यह तो बताओ कि शेर की लड़की "नागर" से तुम से क्या नाता है ?

रामदेई० । उस मुसलमानी से मुझसे क्या नाता होगा ! मैंने तो कभी उसकी सूरत भी नहीं देखी ॥

भूत० । लोग तो कहते हैं कि तुम उसके यहां भी जाती आती हो और मेरे बहुत से भेद तुमने उसे बता दिये हैं !!

रामदेई० । सब झूठ ! ये लोग बात लगाने वाले जैसे ही धूर्त और पाजी हैं वैसे ही तुम सूधे और बेवकूफ हो ॥

अब भूतनाथ अपने गुस्से को बर्दाश्त न कर सका और उसने एक चपत रामदेई के गाल पर ऐसी जमाई कि वह तलमला कर जमीन पर लेट गई मगर उसे चिल्लाने का साहस न हुआ । कुछ देर बाद वह उठ कर बैठी और भूतनाथ का मुंह देखने लगी ॥

भूत० । कमीनी ! हरामजादी !! जिन के लिये मैं जान तक देने को तैयार हूं उन्हीं लोगों की शान में तैं ऐसी बात कह रही है जो एक पराये को भी कहना उचित नहीं है और जिसे मैं एक सायत के लिये भी बर्दाश्त नहीं कर सकता ! ले समझ ले और कान खोल कर सुन ले कि तेरे हाथ की लिखी वह चीठी मुझे मिल गई है जो तूने चांद वाले दिन गौहर के यहां मिलने के लिये नागर के पास भेजी थी

और जिसमें तूने अपना परिचय, "करौंदा की छैंये छैंये" दिया था बस इसी से समझ ले कि तेरी सब कलई खुल गई और तेरी सब बेईमानी लोगों को मालूम हो गई। अब तेरा नखरे के साथ रोना और बातें घना कर अपने को बेकसूर साबित करना व्यर्थ है। अब तेरी मुहब्बत एक रत्ती बराबर मेरे दिल में नहीं रह गई और मैं तुझे उस जहरीली नागिन से भी हजार दर्जे बढ़ के समझने लग गया जिसे खूबसूरत होने पर भी कोई हाथ से छूने तक का साहस नहीं कर सकता। मुझे आज इस बात का सख़ रञ्ज है कि मैंने तुझे इतने दिन तक प्यार किया और इस बात की तरफ कुछ भी ध्यान न दिया कि उस मुहब्बत, ऐयाशी और शौक का नतीजा एक दिन भयानक होता है जिसे छिपाने की जरूरत समझी जाती है और जिसका जाहिर होना शर्मिन्दगी और बेहयाई का सबब समझा जाता है। मुझे इस बात का अफसोस है कि तुझसे अनुचित सम्बन्ध रख कर उस उचित सम्बन्ध वाली का साथ छोड़ दिया जिसकी जूतियों की बराबरी भी तू नहीं कर सकती या यों कहना चाहिये कि तेरे शरीर का चमड़ा जिसकी जूतियों में भी देखना मैं पसन्द नहीं कर सकता। मुझे इस बात का दुःख है कि नागर या मायारानी के कब्जे से तुझे छुड़ाने के लिये मैंने तरह तरह के ढोंग रचे और इसका दम भर के लिये भी विचार न किया कि मैं उस क्षई रोग को पुनः अपनी छाती से लगाने का प्रबन्ध कर रहा हूं जिसे पहिले ही अवस्था में ईश्वर की कृपा ने मुझसे अलग कर दिया था। ये बातें तू अपने ही लिये न समझ बल्कि अपने जाये नानक के लिये भी समझ कर मेरे सामने से उठ जा और उससे भी कह दे कि आज से मेरे सामने आ कर मेरी जूतियों का शिकार न बने। यदि मेरे पुराने विचार न बदल गये होते और उन दिनों की तरह आज भी मैं आप को आप न समझता होता तो आज

तेरी खाल खिचवा कर नमक और मिर्च का उपटन लगवा देता मगर खैर अब इतनाही कहता हूं कि मेरे सामने से उठ जा और फिर कभी अपना काला मुंह मुझे मत दिखा । जिस कुल को तू पहिले कलङ्क लगा चुकी है अब भी उसी कुल की बदनामी का सबब बन कर दुनिया की हवा खा ॥

रामदेई के पास भूतनाथ की बातों का कोई जवाब न था । वह अपनी पुरानी चीठी का सच्चा परिचय सुन कर बदहवास होगई और समझ गई कि अब उसके अच्छे नसीब के पहिये की धूरी टूट गई जिसे वह किसी तरह भी बना नहीं सकती । वह अपने धड़कते हुए कलेजे और कांपते हुए बदन के साथ भूतनाथ की बातें सुनती रही और अंत में उठने का साहस करने पर भी अपनी जगह से न हिल सकी मगर भूतनाथ वहां से उठ खड़ा हुआ और बङ्गले की तरफ चल पड़ा । थोड़ीही दूर गया होगा कि देवीसिंह से मुलाकात हुई जिसने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "भूतनाथ ! शाबाश शाबाश !! जो कुछ नेक और बहादुर आदमियों को करना चाहिये, इस समय तुमने वही किया । मैं छिप कर तुम्हारी सब बातें सुन रहा था अगर तुम कोई बेजा काम करना चाहते तो मैं तुम्हें जरूर रोकता मगर ऐसा करने का मौका न हुआ जिससे मैं बहुत ही खुश हूं । अच्छा जाओ अपने कमरे में आराम करो मैं इन्द्रदेव के पास जाता हूं ॥"

पांचवां बयान।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। एक सुन्दर सजे हुए कमरे में राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव बैठे हैं और उनके सामने नानक हाथ जोड़े बैठा दिखाई देता है॥

गोपाल०। (नानक से) ठीक है, यद्यपि उन बातों में तुमने अपनी तरफ से कुछ नमक मिर्च जरूर लगाई होगी मगर फिर भी मुझे कोई ऐसी बात नहीं जान पड़ती जिससे भूतनाथ को दोषी ठहराऊं, उस ने जो कुछ तुम्हारी मां से कहा सच कहा और उसके साथ जैसा बर्ताव किया वह उचित ही था, इस विषय में मैं भूतनाथ को कुछ भी नहीं कह सकता और न अब तुम्हारी बातों पर भरोसा कर सकता हुं। बड़े अफसोस की बात है कि मेरी नसीहत ने तुम्हारे दिल पर कुछ भी असर न किया * और अगर कुछ किया भी तो वह चार दिन के बाद जाता रहा। अगर तुम अपनी मां के साथ नन्हों के मकान में गिरफ़ार न हुए होते तो कदाचित् मैं तुम्हारे धोखे में आ जाता मगर अब मैं किसी तरह भी तुम्हारा साथ नहीं दे सकता॥

नानक०। मगर आप मेरा कसूर माफ कर चुके हैं और......

इन्द्रदेव०। (नानक से) अगर तुम उस माफी को पा कर खुश हुए थे तो फिर पुराने रास्ते पर क्यों गए? और पुनः अपनी मां को लेकर नन्हों के पास क्यों पहुंचे? तुम्हें बात करते शर्म नहीं आती!!

गोपाल०। फिर भी मैं अपनी जुबान (माफी) का खयाल करूंगा और तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूंगा मगर अब भूतनाथ की तरह मैं भी तुम्हारी सूरत देखना पसन्द नहीं करता और न भूतनाथ को इस विषय में कुछ कहना चाहता हूं, इन्द्रदेव ने तुम्हारे साथ

* देखो १८ वां हिस्सा तीसरा बयान॥

इतनी ही रेयायत की सो बहुत की कि तुमको यहां से निकल जाने की आज्ञा देदी नहीं तो तुम इस लायक थे कि जनम भर कैद में पड़े सड़ा करते॥

नानक०। जो आज्ञा, मगर मेरे पिता से इतना तो दिला दीजिये कि जिससे मेरी मां जनम भर खाने पीने की तरफ से बेफिक्र रहे॥

इन्द्रदेव०। अबे कमीने! तुझे यह कहते शर्म नहीं मालूम होती? इतना बड़ा होके तू अपनी मां के लायक दाना पानी नहीं जुटा सकता? खैर अब तुझे आखिरी मर्त्तबे कहा जाता है कि अब हमलोगें से किसी तरह की उम्मीद न रख और अपनी मां को साथ लेकर यहां से चला जा। भूतनाथ ने भी मुझे ऐसा ही करने के लिये कहला भेजा है॥

इतना कह कर इन्द्रदेव ने ताली बजाई और साथ ही अपने ऐयार सर्यूसिंह को कमरे के अन्दर आते देखा॥

इन्द्रदेव०। (सर्यू से) भूतनाथ कहां हैं?

सर्यू०। नम्बर पांच के कमरे में देवीसिंह जी से बात कर रहे हैं, वे दोनें यहां आए भी थे मगर यह सुन कर कि नानक यहां बैठा हुआ है, पिछले पैर लैाट गए॥

इन्द्रदेव०। अच्छा तुम जाओ और उन्हें यहां बुला लाओ॥

सर्यूसिंह०। जो आज्ञा परन्तु मुझे आशा नहीं है कि नानक के रहते वे यहां आवें॥

इन्द्रदेव०। अच्छा तो मैं खुद जाता हूं॥

गोपाल०। हां तुम्हारा ही जाना ठीक होगा, देवीसिंह जी को भी बुलाते लाना॥

इन्द्रदेव उठ कर चले गए और थोड़ी ही देर में भूतनाथ तथा देवीसिंह को साथ लिये हुए आ पहुंचे॥

गोपाल०। (भूतनाथ से) क्यों साहब! आप यहां तक आकर

लौट क्यों गए ?

भूतनाथ०। योंहीं, मैंने समझा कि आपलोग किसी खास बातों में लगे हुए हैं॥

गोपाल०। अच्छा बैठिये और एक बात का जवाब दीजिये॥

भूतनाथ०। कहिये ?

गोपाल०। रामदेई और नानक के बारे में आप क्या हुक्म देते हैं?

भूतनाथ०। महाराज ने क्या आज्ञा दी है ?

गोपाल०। उन्होंने इसका फैसला आप ही के ऊपर छोड़ा है॥

भूतनाथ०। फिर जो राय आप लोगों की हो, मैंने तो इन दोनों के बारे में इसकी मां को हुक्म सुना ही दिया है॥

गोपाल०। इनका कसूर तो आप सुन ही चुके होंगे॥

भूतनाथ०। पिछले कसूरों को तो मैं सुन ही चुका हूं, हां नया कसूर सिर्फ इतना ही मालूम हुआ है कि ये दोनों नन्हों के यहां गिरफ़ार हुए हैं॥

गोपाल०। इसके अतिरिक्त एक बात और है॥

भूतनाथ०। वह क्या ?

गोपाल०। यही कि ये दोनों अगर खाली हाथ न होते तो बेचारी शान्ता को जान से मार डालते॥

इतने ही में नानक बोल उठा, "नहीं नहीं, यह आपके जासूसों ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगाया है॥"

भूतनाथ०। अगर यह बात है तो मैं इसे हथकड़ी बेड़ी से खाली क्यों देखता हूं ?

इन्द्रदेव०। इसी लिये कि हमारे हाते के अन्दर ये लोग कुछ कर नहीं सकते। जब ये लोग यहां गिरफ़ार हो कर आए तो कुछ दिन

तक तो भलमनसी के साथ रहे मगर आज इनकी नीयत बिगड़ी हुई

मालूम पड़ी ॥

भूतनाथ० । खैर, अब आप ही इनके लिये हुक्म सुनाइये । मगर इन्द्रदेव ! आप यह न समझियेगा कि इन लोगों के बारे में मुझे किसी तरह का रञ्ज है । मैं सच कहता हूं कि इन दोनों का यहां आना मेरे लिये बहुत ही अच्छा हुआ । मैं इन लोगों के फेर में बेतरह फंसा हुआ था । आज मालूम हुआ कि ये लोग जहर हलाहल से भी बढ़े हुए हैं । अस्तु आज इन लोगों से पीछा छुड़ा कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ । मेरे सिर से बोझा उतर गया और अब मेरी जिन्दगी खुशी के साथ बीतेगी । आपका कहना सच निकला अर्थात् इनका यहां आना मेरे लिये खुशी का सबब हुआ ॥

न्द्रदेव० । अच्छा, यह बताइये कि ये लोग अगर इसी तरह छोड़ दिये जायँ तो आपके खज़ाने को तो किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकते जो "लामा घाटी" के अन्दर है ?

भूतनाथ० । कुछ भी नहीं और "लामा घाटी" के अन्दर जेवरों के अतिरिक्त और कुछ है भी नहीं, सो जेवरों को मैं वहां से मंगवा ले सकता हूं ॥

इन्द्रदेव० । अगर सिर्फ नानक की मां के जेवरों से आपका मतलब है तो वह अब मेरे कब्जे में है क्योंकि नन्हों के यहां वह बिना जेवर के नहीं गई थी ॥

भूतनाथ० । बस तो मैं उस तरफ से भी बेफिक्र हो गया, यद्यपि उन जेवरों की मुझे कोई परवाह नहीं है मगर उसके पास मैं एक कौड़ी भी नहीं छोड़ा चाहता । इसके अतिरिक्त यह भी जरूर कहूंगा कि अब ये लोग सूखा छोड़ देने के लायक नहीं रहे ॥

इन्द्रदेव० । खैर, जैसी राय होगी वैसा ही किया जायगा ॥

इतना कह कर इन्द्रदेव ने पुनः सर्यूसिंह को बुलाया और जब वह

कमरे के अन्दर आ गया तो कहा—"थोड़ी देर के लिये नानक को बाहर ले जाओ॥"

नानक को लिये हुए सर्यूसिंह कमरे के बाहर चला गया और इसके बाद चारो आदमी बिचार करने लगे कि नानक और उसकी मां के साथ क्या बर्ताव करना चाहिये। देर तक सोच बिचार कर यही निश्चय किया गया कि "उन दोनों को देश से निकाल दिया जाय और कह दिया जाय जिस दिन हमारे महाराज की अमलदारी में दिखाई दोगे उसी दिन मार डाले जाओगे॥"

इस हुक्म पर महाराज से आज्ञा लेने की इन लोगों को कोई जरूरत न थी क्योंकि उन्होंने सब बातें सुन सुना कर पहिले ही हुक्म दे दिया था कि भूतनाथ की आज्ञानुसार काम किया जाय—अस्तु नानक कमरे के अन्दर बुलाया गया और इसके बाद रामदेई भी बुलाई गई। जब दोनों इकट्ठे होगए तो उन्हें हुक्म दिया गया॥

यह हुक्म यद्यपि साधारण मालूम होता है मगर उन दोनों के लिये ऐसा न था जिन्हें भूतनाथ की बदौलत शाहखर्ची की आदत पड़ गई थी। नानक और रामदेई की आखों से आंसू जारी था जब इन्द्रदेव ने सर्यूसिंह को हुक्म दिया कि "चार आदमी इन दोनों को ले जायँ और महाराज की सरहद्द के बाहर कर आवें।" सर्यूसिंह दोनों को लिये हुए कमरे के बाहर निकल गया॥

सूत०। सिर से बोझा उतारा और कम्बख्तों से पीछा छूटा। अच्छा अब यह बताइये कि कल क्या क्या होगा?

गोपाल०। महाराज ने तो यही हुक्म दिया है कि "कल यहां से डेरा कूच किया जाय और तिलिस्म की सैर देखते हुए चुनारगढ़ पहुंचें। चम्पा, शान्ता, हरनामसिंह, भरतसिंह और दलीपशाह वगैरह बाहर की राह से चुनार भेज दिये जायं। यदि हमारे किसी ऐयार

की भी इच्छा हो तो उनके साथ चला जाय ॥"

भूतनाथ० । ऐसा कौन बेवकूफ होगा जो तिलिस्म की सैर छोड़ उनके साथ जायगा ॥

देवीसिंह० । सभी कोई ऐसा कहते हैं ॥

भूतनाथ० । हां यह तो बताइये कि मैंने नानक को जब दर्बार में देखा था तो उसके हाथ में एक लपेटी हुई तस्वीर थी, अब वह तस्वीर कहां है और उसमें क्या बात थी ?

इन्द्रदेव० । वह कागज जिसे आप तस्वीर समझे हुए हैं मेरे पास है मैं आपको दिखाऊंगा । असल में वह तस्वीर नहीं बल्कि उसने एक बहुत बड़ी दर्खास्त लिख कर तैयार की थी जो दर्बार में आके पेश किया चाहता था मगर ऐसा न कर सका ?

भूतनाथ० । उसमें लिखा क्या था ॥

इन्द्रदेव० । जो लोग उसे गिरफ़ार कर लाए हैं उनकी शिकायत के सिवाय और कुछ भी नहीं । साथ ही इसके उस दर्खास्त में इस बात पर बहुत जोर दिया था कि कमला की मां शान्ता वास्तव में मर गई है, आज जिस शान्ता को सब कोई यहां देख रहे हैं वह वास्तव में नकली है ॥

भूत० । वाहरे शैतान ! (कुछ ठहर कर) तो शायद वह दर्खास्त महाराज के हाथ नहीं पहुंची ॥

इन्द्र० । क्यों नहीं, मैंने जानबूझ कर उसे ऐसा करने का मौका दिया, वह रात को पहरे वालों से इत्तला करा कर खुद महाराज के पास पहुंचा और उनके सामने वह दर्खास्त रख दी । उस समय महाराज ने मुझे बुलाया और मुझी को वह दर्खास्त पढ़ने के लिये दी गई। उसे सुन कर महाराज ने मुसकुरा दिया और इशारा किया कि वह कमरे के बाहर निकाल दिया जाय क्योंकि इसके पहिले में शान्ता

और हरनामसिंह का पूरा २ हाल महाराज से अर्ज कर चुका था ॥

भूत० । अच्छा मुझे भी वह दर्खास्त दिखाइयेगा ॥

इन्द्र० । (उंगली से इशारा करके) वह कारनिस के ऊपर पड़ी हुई है देख लीजिये ॥

भूतनाथ ने दरखास्त उतार कर पढ़ी और इसके बाद कुछ देर तक उन लोगों में बातचीत होती रही ॥

छठवां बयान ।

सुबह का सोहावना समय सब जगह एकसां नहीं मालूम होता, घर की खिड़कियों में से उसका चेहरा कुछ और ही दिखाई देता है और बाग में उसकी कैफियत कुछ और ही मस्तानी होती है, पहाड़ में इसकी खूबी कुछ और ही ढङ्ग की दिखाई देती है और जङ्गल में इसकी छटा कुछ निराली ही होती है । आज इन्द्रदेव के इस अनूठे स्थान में इसकी खूबी सबसे बढ़ी चढ़ी है, क्योंकि यहां जङ्गल भी है, पहाड़ भी है, अनूठा बाग तथा सुन्दर बङ्गला या कोठी भी है, फिर यहां के आनन्द का पूछना ही क्या । इसी लिये हमारे महाराज, कुंअर साहब और ऐयार लोग यहां घूम २ कर सुबह के सोहावने समय का आनन्द ले रहे हैं, खास करके इसलिये कि आज ये लोग यहां से डेरा कूच करने वाले हैं ॥

बहुत देर तक घूमने फिरने के बाद सब कोई बाग में आ कर बैठे और इधर उधर की बातें होने लगीं ॥

जीत० । (इन्द्रदेव से) भरथसिंह वगैरह तथा औरतों को आपने चुनार रवाना कर दिया ?

इन्द्र० । जी हां, बड़े सवेरे ही उन लोगों को बाहर की राह से

रवाना कर दिया और औरतों के लिये सवारी का इन्तजाम कर देने के अतिरिक्त अपने दस पन्द्रह मातबिर आदमी भी साथ कर दिये हैं॥

जीत०। तो अब हमलोग भी कुछ भोजन करके यहां से रवाना हुआ चाहते हैं॥

इन्द्रदेव०। जैसी मर्जी॥

जीत०। भैरो और तारा जो आपके साथ यहां आये थे कहां चले गये दिखाई नहीं पड़ते॥

इन्द्रदेव०। अब भी मैं उन्हें अपने साथ ही ले जाने की आज्ञा चाहता हूं क्योंकि उनके मदद की मुझे जरूरत है॥

जीत०। तो क्यों आप हम लोगों के साथ न चलेंगे ?

इन्द्र०। जी हां, उस बाग तक तो जरूर साथ चलूंगा जहां से मैं आप लोगों को यहां तक ले आया हूं। उसके बाद गुप्त हो जाऊंगा, क्योंकि मैं आप को कुछ तिलिस्म के तमाशे दिखाया चाहता हूं और इसके अतिरिक्त उन चीजों को भी तिलिस्म के अन्दर से निकलवा कर चुनार पहुंचाना है जिनके लिये आज्ञा मिल चुकी है॥

सुरेन्द्र०। नहीं नहीं, गुप्त रीति पर हम तिलिस्म का तमाशा नहीं देखा चाहते, हमारे साथ रह कर जो कुछ दिखा सको दिखा दो। बाकी रहा चीजों को निकलवा कर चुनार पहुंचाना, सो यह काम दो दिन के बाद भी होगा तो कोई हर्ज नहीं है॥

इन्द्र०। जैसी आज्ञा॥

इतना कह कर इन्द्रदेव थोड़ी देर के लिये कहीं चला गया और भैरोसिंह तथा तारासिंह को साथ लिये आ पहुंचा और बोला, "भोजन तैयार है॥"

सब कोई वहां से उठे और भोजन इत्यादि से छुट्टी पा कर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए। जिस तरह इन्द्रदेव इन लोगों को

अपने स्थान में ले आया था उसी तरह पुनः उस तिलिस्मी बाग में ले गया था जिसमें से लाया था ॥

जब महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह उस बारहदरी में पहुंचे जिसमें पहिले दिन आराम किया था और जहां बाजे की आवाज सुनी थी, तब दिन पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था। जीतसिंह ने इन्द्रदेव से पूछा कि अब क्या करना चाहिये?

इन्द्रदेव०। यदि महाराज आज की रात यहां रहना पसन्द करें तो मैं एक दूसरे बाग में ले चल कर वहां की कुछ कैफियत दिखाऊं?

जीत०। बहुत अच्छी बात है चलिये॥

इतना सुन कर इन्द्रदेव ने उस बारहदरी की कई अलामारियों में से एक अलामारी खोली और उसके अन्दर जाकर सभों को अपने पीछे आने का इशारा किया। यह एक गली की तौर पर रास्ता बना हुआ था जिसमें सब कोई इन्द्रदेव की इच्छानुसार बेखौफ चले गये और थोड़ी दूर जाने बाद जब इन्द्रदेव ने दूसरा दर्वाजा खोला तब उसके बाहर हो कर सभों ने अपने को एक छोटे से बाग में पाया जिसकी बनावट कुछ विचित्र ही ढङ्ग की थी। यह बाग जङ्गली पौधों की सब्जी से हरा भरा था और पानी का चश्मा भी बह रहा था मगर चारदीवारी के अतिरिक्त और किसी तरह की बड़ी इमारत इसमें न थी, हां बीच में एक बहुत बड़ा चबूतरा जरूर था जिस पर धूप और बरसाती पानी के बचाव के लिये सिर्फ मोटे२ बारह खम्भों के सहारे पर छत बनी हुई थी और चबूतरे पर चढ़ने के लिये चारों तरफ सुन्दर सीढ़ियां थीं॥

यह चबूतरा कुछ अजीब ढङ्ग का बना हुआ था। लगभग चालीस हाथ के चौड़ा और इतना ही लम्बा होगा। इसके फर्श में लोहे की बारीक नालियां जाल की तरह जड़ी हुई थीं और बीच में एक चौखूटा

स्याह पत्थर इस अन्दाज़ का जड़ा हुआ था जिस पर चार आदमी बखूबी बैठ सकते थे । इसके अतिरिक्त उस चबूतरे में और कुछ भी न था ॥

थोड़ी देर तक सब कोई उस चबूतरे की बनावट को देखते रहे इसके बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "तिलिस्म बनाने वालों ने यह बगीचा केवल तमाशा देखने के लिये बनाया था । यहां की कैफि- यत आपके साथ रह कर मैं नहीं दिखा सकता, हां यदि आप मुझे दो तीन पहर की छुट्टी दें तो......"

इन्द्रदेव की बात महाराज ने मंजूर कर ली और तब वह (इन्द्रदेव) सभों के देखते देखते उस चौखूटे पत्थर के ऊपर चला गया जो चबूतरे के बीच में जड़ा हुआ था । सवार होने के साथ ही वह पत्थर हिला और इन्द्रदेव को लिये हुए जमीन के अन्दर चला गया, थोड़ी देर में पुनः ऊपर चला आया और अपने ठिकाने पर ज्यों का त्यों बैठ गया मगर इन्द्रदेव उस पर न था ॥

इन्द्रदेव के चले जाने बाद थोड़ी देर तक तो सब कोई उस चबू- तरे पर खड़े रहे उसके बाद धीरे धीरे वह चबूतरा गरम होने लगा और वह गर्मी यहां तक बढ़ी कि लाचार हो कर सभों को चबूतरा छोड़ देना पड़ा, अर्थात् सब कोई चबूतरे के नीचे उतर आये और बाग में टहलने लगे । इस समय दिन घण्टे भर से कुछ कम बाकी था ॥

इस खयाल से कि देखें इस बाग की दीवार किस ढङ्ग की बनी हुई है, सब कोई घूमते हुए पूरब तरफ वाली दीवार के पास जा पहुंचे और गौर से देखने लगे मगर कोई अनूठी बात दिखाई न दी । इसके बाद उत्तर तरफ वाली और फिर पश्चिम तरफ वाली दीवार को देखते हुए सब कोई दक्खिन तरफ गये और उधर की दीवार को आश्चर्य्य के साथ देखने लगे क्योंकि इसमें कुछ विचित्रता ज़रूर थी ॥

यह दीवार शीशे की मालूम होती थी और उसमें महाभारत की तस्वीरें बनी हुई थीं। ये तस्वीरें उसी ढङ्ग की थीं जैसी इस तिलिस्मी बङ्गले में चलती फिरती तस्वीरें इन लोगों ने देखी थीं। ये लोग इन तस्वीरों को बड़ी देर तक देखते रहे और सभों को विश्वास हो गया कि जिस तरह उस बङ्गले वाली तस्वीरों को चलते फिरते और काम करते हमलोग देख चुके हैं उसी तरह इन तस्वीरों को भी देखेंगे क्योंकि दीवार पर हाथ फेरने से साफ मालूम होता था कि ये तस्वीरें शीशे के अन्दर हैं॥

इन तस्वीरों के देखने से महाभारत की लड़ाई का जमाना आंखों के सामने फिर जाता था। कौरवों और पाण्डवों की फौज, बड़े २ सेनापती, रथ, हाथी, घोड़े इत्यादि जो कुछ बने थे सभी अच्छे और दिल पर असर पैदा करने वाले थे। "इस इस लड़ाई की नकल अपनी आंखों से देखेंगे" इस बिचार से सब कोई प्रसन्न थे और बड़ी दिलचस्पी के साथ उन तस्वीरों को देख रहे थे, यहां तक कि सूर्य अस्त हो गया और धीरे २ अन्धकार ने चारों तरफ अपना दखल जमा लिया। उस समय यकायक दीवार चमकने लगी और तस्वीरों में हरकत (हिलना) पैदा हुई जिससे सभों ने समझा कि नकली लड़ाई हुआ ही चाहती है मगर कुछ ही देर बाद लोगों का यह विश्वास ताज्जुब के साथ बदल गया जब यह देखा कि उसमें की तस्वीरें एक एक करके गायब हो रही हैं, यहां तक कि घड़ी भर के अन्दर सब तस्वीरें गायब होगईं और दीवार साफ दिखाई देने लगी। इसके बाद दीवार की चमक भी बन्द होगई फिर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगा॥

थोड़ी देर बाद उस चबूतरे की तरफ रोशनी मालूम हुई और यह

देख कर सब कोई उसी तरफ रवाना हुए और जब उसके पास पहुंचे

तो देखा कि उस चबूतरे की छत में जड़े हुए पत्थर के दस बारह टुकड़े इस तेजी के साथ चमक रहे हैं कि जिससे केवल वह चबूतरा ही नहीं बल्कि तमाम बाग उजाला हो रहा है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों मूरतें भी उस चबूतरे पर इधर उधर चलती फिरती दिखाई दीं। गौर करने से मालूम हुआ कि ये मूरतें (या तस्वीरें) बेशक वे ही हैं जिन्हें उस दीवार के अन्दर देख चुके हैं। ताज्जुब नहीं कि वह दीवार इन सभों का खजाना हो और वही इस चबूतरे पर आ कर तमाशा दिखाती हों ॥

इस समय जितनी मूरतें उस चबूतरे पर थीं वे सब अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की लड़ाई से सम्बन्ध रखती थीं। जब उन मूरतों ने अपना काम शुरू किया तो ठीक अभिमन्यु की लड़ाई का तमाशा आंखों के सामने दिखाई देने लगा। जिस तरह कौरवों के रचे हुए व्यूह के अन्दर फँस कर कुमार अभीमन्यु ने वीरता दिखाई थी और अन्त में अधर्म के साथ जिस तरह वह मारा गया था उसी को आज नाटक स्वरूप में देख कर सब कोई बहुत प्रसन्न हुए और सभों के दिलों पर बहुत देर तक इसका असर रहा ॥

इस तमाशे का हाल खुलासे तौर पर हम इस लिये नहीं लिखते कि इसकी कथा प्रसिद्ध है और महाभारत में विस्तार के साथ लिखी हुई है ॥

यह तमाशा थोड़ी ही देर में खतम नहीं हुआ बल्कि देखते देखते तमाम रात बीत गई। सवेरा होने के कुछ देर पहिले अन्धकार हो गया और उसी अन्धकार में सब मूरतें गायब हो गईं। उजाला होने और आंखें ठहरने पर जब सभों ने देखा तो उस चबूतरे पर सिवाय इन्द्रदेव के और कुछ भी दिखाई न दिया ॥

इन्द्रदेव को देख कर सब कोई प्रसन्न हुए और साहब सलामत

के बाद इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्रदेव०। (चबूतरे से नीचे उतर कर और महाराज के पास आ कर) मैं उम्मीद करता हूं कि इस तमाशे को देख कर महाराज प्रसन्न हुए होंगे॥

महाराज०। बेशक! क्या इसके सिवाय और भी कोई तमाशा यहां दिखाई दे सकता है?

इन्द्रदेव०। जी हां यहां पूरा महाभारत दिखाई दे सकता है, अर्थात् महाभारत ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब इसी ढङ्ग पर और इसी चबूतरे पर आप देख सकते हैं मगर दो चार दिन में नहीं बल्कि महीनों में। इसके साथ ही साथ बनाने वालों ने इसकी भी तर्कीब रक्खी है कि चाहे शुरू ही से यह तमाशा दिखलाया जाय या बीच ही से कोई टुकड़ा दिखा दिया जाय। अर्थात् महाभारत के अन्तर्गत जो कुछ चाहें देख सकते हैं॥

महाराज०। इच्छा तो बहुत कुछ देखने की है मगर इस समय हमलोग यहां ज्यादे रुक नहीं सकते अस्तु फिर कभी जरूर देखेंगे। हां हमें इस तमाशे के विषय में कुछ समझाओ तो सही कि यह काम क्योंकर हो सकता है और तुमने यहां से कहां जा कर क्या किया?

इन्द्रदेव ने इस तमाशे का पूरा २ भेद सभों को समझाया और कहा कि ऐसे २ कई तमाशे इस तिलिस्म में भरे पड़े हैं अगर आप चाहें तो इस काम में वर्षों बिता सकते हैं, इसके अतिरिक्त यहां की दौलत का भी यह हाल है कि वर्षों तक ढोते रहिये फिर भी कमी न हो। सोने चांदी का तो कहना ही क्या है जवाहिरात भी आप जितना चाहें ले सकते हैं, सच तो यों है कि जितनी दौलत यहां है

उसके रखने का भी ठिकाना यहीं हो सकता है। इस बगीचे के पास

ही पास और भी चार बाग हैं शायद उन सभों में घूमना और यहां के तमाशों को देखना इस समय आप पसन्द न करेंगे......

महाराज० । बेशक इस समय हम इन सब तमाशों में समय बिताना पसन्द नहीं करते सबसे पहिले शादी ब्याह के काम से छुट्टी पाने की इच्छा लगी हुई है इसके बाद पुनः एक दफे इस तिलिस्म में आकर यहां की सैर जरूर करेंगे ॥

कुछ देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं इसके बाद इन्द्रदेव सभों को पुनः उसी बाग में ले आया जिसमें उससे मुलाकात हुई थी या जहां से इन्द्रदेव के स्थान में जाने का रास्ता है ॥
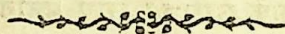
सातवां बयान ।

इस बाग में पहिले दिन जिस बारहदरी में बैठ कर सभों ने भोजन किया था, आज पुनः उसी बारहदरी में बैठने और भोजन करने का मौका मिला । भोजन की चीजें ऐय्यार लोग अपने साथ ले आए थे और जल की वहां कमी न थी । अस्तु स्नान, सन्ध्योपासन और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर सब कोई उसी बारहदरी में सो रहे क्योंकि रात के जागे हुए थे और बिना कुछ आराम किए आगे बढ़ने की इच्छा न थी ॥

जब दिन पहर भर से कुछ कम बाकी रह गया तब सब कोई उठे और चश्मे के जल से हाथ मुंह धो कर आगे की तरफ बढ़ने के लिये तैयार हुए ॥

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आए हैं कि "यहां तीनों तरफ की दीवारों में कई अलमारियां भी थीं" अस्तु इस समय कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हीं अलमारियों से एक अलमारी खोली और महा-

राज की तरफ देख कर कहा, चुनार के तिलिस्म में जाने का यही रास्ता है और हम दोनों भाई इसी रास्ते से वहां तक गये थे"॥

रास्ता बिलकुल अन्धेरा था इस लिये इन्द्रजीतसिंह तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करते हुए आगे आगे रवाना हुए और उनके पीछे महाराज सुरेन्द्रसिंह, राजा बीरेन्द्रसिंह, गोपालसिंह, इन्द्रदेव वगैरह और ऐयार लोग रवाना हुए, सबसे पीछे कुंअर आनन्दसिंह तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करते हुए जाने लगे क्योंकि सुरङ्ग पतली थी और केवल आगे की रोशनी से काम नहीं चल सकता था॥

ये लोग उस सुरङ्ग में कई घण्टे तक बराबर चले गये और इस बात का पता न लगा कि कब सन्ध्या हुई या अब कितनी रात बीत चुकी है। जब सुरङ्ग का दूसरा दरवाजा इन लोगों को मिला और उसे खोलकर सब कोई बाहर निकले तो अपने को एक लम्बी चौड़ी कोठड़ी में पाया जिसमें इस दरवाजे के अतिरिक्त तीनों तरफ की दीवारों में और भी तीन दर्वाजे थे, जिनकी तरफ इशारा करके कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अब हम लोग चबूतरे वाले तिलिस्म के नीचे आ पहुंचे हैं, इस जगह एक दूसरे से मिली हुई सैकड़ों कोठड़ियां हैं जो भूलभूलैयें की तरह चक्कर खिलाती हैं और जिसमें फँसा हुआ अज्ञान आदमी जल्दी निकलही नहीं सकता। जब पहिले पहिल हम दोनों भाई यहां आये थे तो सब कोठड़ियों के दरवाजे बन्द थे जो तिलिस्मी किताब की सहायता से खोले गये और जिसका खुलासा हाल आपको तिलिस्मी किताब के पढ़ने से मालूम होगा, मगर इन के खोलने में कई दिन लगे और तकलीफ भी बहुत हुई। इन कोठ-ड़ियों के मध्य में एक चौखूटा कमरा आप देखेंगे जो ठीक उस चबूतरे के नीचे है और उसी में से बाहर निकलने का रास्ता है, बाकी सब कोठड़ियों में असबाब और खजाना भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त

छत के ऊपरही ऊपर एक और रास्ता उस चबूतरे में से बाहर निकलने के लिये बना हुआ है जिसका हाल मुझे पहिले मालूम न था, जिस दिन हम दोनों भाई उस चबूतरे की राह से बाहर निकले हैं उस दिन देखा कि इसके अतिरिक्त एक रास्ता और भी है ॥”

इन्द्र० । जी हां दूसरा रास्ता भी जरूर है जो तिलिस्मी दारोगा के लिये बनाया गया था, तिलिस्म तोड़ने वाले के लिये नहीं । मुझे उस रास्ते का हाल बखूबी मालूम है ॥

गोपाल० । मुझे भी उस रास्ते का हाल (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हीं की जुबानी मालूम हुआ है इसके पहिले मैं कुछ भी नहीं जानता था और न यही मालूम था कि इस तिलिस्म के दारोगा यही हैं ।

इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने सभों को उस तहखाने अथवा कोठड़ियों और कमरों की सैर कराई जिनमें लाजवाब और हद्द दरजे की फजूल खर्ची को भी मात करने वाली दौलत भरी हुई थी और एक से एक बढ़कर अनूठी चीजें लोगों का दिल अपने तरफ खैंच रही थीं साथही इसके यह भी समझाया कि इन कोठड़ियों को हम लोगों ने कैसे खोला और इस काम में कैसी कैसी कठिनाइयां उठानी पड़ीं ॥

घूमते फिरते और सैर करते हुए सब कोई उस मध्य वाले कमरे में पहुंचे जो ठीक तिलिस्मी चबूतरे के नीचे था । वास्तव में यह कमरा कल पुरजों से भरा हुआ था । जमीन से छत तक बहुत सी तारें लगी हुई थीं । बड़े बड़े नांदों में मसाले सब रक्खे थे जिनसे उन तारों और कल पुरजों का सम्बन्ध था और दीवार के अन्दर ऊपर चढ़ जाने के लिये सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं ॥

दोनों कुमारों ने महाराज को समझाया कि तिलिस्म टूटने के पहिले वे कल पुरजे किस ढङ्ग पर लगे हुए थे और तोड़ती समय

उनके साथ कैसी कार्रवाई की गई। इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने सीढ़ियों की तरफ इशारा कर के कहा, "अब भी इन सीढ़ियों का तिलिस्म कायम है, हर एक की मज़ाल नहीं कि इस पर पैर रख सके॥"

बीरेन्द्र०। यह सब कुछ है मगर असल में तिलिस्मी बुनियाद वही खोह वाला बङ्गला है जिसमें चलती फिरती तस्वीरें का तमाशा देखा था और जहां से तिलिस्म के अन्दर घुसे थे॥

सुरेन्द्र०। इसमें क्या शक है। चुनार जमानिया और रोहतास-गढ़ वगैरह के तिलिस्म की नकेल है और वहां रहने वाला तरह तरह के तमाशे देख दिखा सकता है और सबसे बढ़ कर आनन्द ले सकता है॥

जीत०। वहां की पूरी पूरी कैफियत अभी देखने में नहीं आई॥

इन्द्रजीत०। दो चार दिन में वहां की कैफियत नहीं देख सकते, जो कुछ आप लोगों ने देखा वह रुपै में एक आना भी न था। मुझे भी अभी पुनः वहां जाकर बहुत कुछ देखना बाकी है॥

सुरेन्द्र०। इस समय तो जल्दी में थोड़ा बहुत देख लिया है मगर कामों से निश्चिन्त होकर पुनः हमलोग वहां चलेंगे और उसी जगह से रोहतासगढ़ के तहखाने की भी सैर करेंगे। अच्छा अब यहां से बाहर होना चाहिये॥

आगे आगे कुंअर इन्द्रजीतसिंह रवाना हुए। पांच सात सीढ़ियां चढ़ जाने के बाद एक छोटा सा लोहे का दरवाजा मिला जिसे उसी हीरे वाली तिलिस्मी ताली से खोला और तब सभों को लिये हुए दोनों कुमार तिलिस्मी चबूतरे के बाहर हुए। उस समय रात नाम मात्र को बाकी थी॥

आठवां बयान

सब कोई तिलिस्म की सैर कर के लौट आये और अपने अपने काम धन्धे में लगे। कैदियों के मुकद्दमे को थोड़े दिन तक मौकूफ रख कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की शादी पर सभों ने ध्यान दिया और इसी के इन्तजाम की फिक्र करने लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जो काम जिसके लायक समझा उसके सपुर्द कर के कुल कैदियों को चुनारगढ भेजने का हुक्म दिया और यह भी निश्चय कर लिया कि दो तीन दिन के बाद हम लोग भी चुनारगढ़ चले जायँगे क्योंकि बारात चुनार ही से निकल कर यहां आवेगी॥

भरथसिंह और दलीपशाह वगैरह का डेरा बलभद्रसिंह के पड़ोस ही में पड़ा और दूसरे मेहमानों के साथही साथ इनकी खातिरदारी का बोझ भी भूतनाथ के ऊपर डाला गया। इस जगह संक्षेप में हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं कि कौन काम किसको सपुर्द किया गया॥

(१) इस तिलिस्मी इमारत के इर्दगिर्द जिन मेहमानों के डेरे पड़े हैं उन्हें किसी बात की तकलीफ तो नहीं है, या उनके जरूरत की चीजों के पहुंचने में किसी तरह की ढिलाई तो नहीं होती, इस बात को बराबर मालूम करते रहने का काम भूतनाथ के सपुर्द किया गया॥

(२) मोदी, बनिये और हलवाई वगैरह किसी से किसी चीज का दाम तो नहीं लेते! इस बात की तहकीकात के लिये रामनारायण ऐयार मुकर्रर किये गये॥

(३) रसद वगैरह के काम में कहीं किसी तरह की बेईमानी तो नहीं होती, या चोरी का नाम तो किसी की ज़ुबान से नहीं सुनाई

देता! इसके जानने और शिकायत के दूर करने पर चुन्नीलाल ऐयार तैनात किये गये ॥

(४) इस तिलिस्मी इमारत से लेकर चुनारगढ़ तक की सड़क और उसकी सजावट का काम पन्नालाल और पण्डित बद्रीनाथ के जिम्मे किया गया ॥

(५) चुनारगढ़ में बाहर से न्योते में आये हुए पण्डितों की खातिरदारी और पूजापाठ इत्यादि के सामान की दुरुस्ती का बोझ जगन्नाथ ज्योतिषी के ऊपर डाला गया ॥

(६) बारात और महफिल वगैरह की सजावट तथा उसके सम्बन्ध में जो कुछ काम हो उसके जिम्मेवार तेजसिंह बनाये गये ॥

(७) आतशबाजी और अजायबात के तमाशे तैयार कराने के साथ ही साथ उसी ढङ्ग की एक इमारत के बनवाने का हुक्म इन्द्रदेव को दिया गया जैसी इमारत के अन्दर हँसते २ इन्द्रजीतसिंह वगैरह एक दफे कूद गये थे और जिसका भेद अभी तक खोला नहीं गया* ॥

(८) पन्नालाल वगैरह के बदले में रणधीरसिंह जी के डेरे की हिफाजत तथा किशोरी, कामिनी वगैरह की निगरानी के जिम्मेवार देवीसिंह बनाये गये ॥

(९) ब्याह सम्बन्धी खर्च की तहबील (रोकड़) राजा गोपालसिंह के हवाले की गई ॥

(१०) कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ रह कर उनके विवाह सम्बन्धी शान शौकत और जरूरतों को कायदे के साथ निबाहने के लिये भैरोसिंह और तारासिंह छोड़ दिये गये ॥

(११) हरनामसिंह को अपने मातहत में लेकर जीतसिंह जी ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया कि हर एक के कामों की जांच और

* देखो सन्तति पांचवां हिस्सा चौथा बयान ॥

निगरानी रखने के अतिरिक्त कुल कैदियों को भी किसी उचित ढङ्ग से इस विवाहोत्सव के तमाशे दिखा देंगे जिस में वे लोग देखलें कि जिस शुभ दिन के हम बाधक थे वह आज किस खुशी और खूबी के साथ बीत रहा है और सर्वसाधारण भी देखलें की धन दौलत और ऐश आराम के फेर में पड़ कर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारने वाले, छोटे होकर बड़ों के साथ वैर बांध के नतीजा भोगने वाले, मालिक के साथ में निमकहरामी और उग्र पाप करने का कुछ फल इस जन्म में भी भोग लेनेवाले और बदनीयती तथा पाप के साथ ऊंचे दर्जे पर पहुंच कर यकायक रसातल में चलनेवाले, धर्म्म और ईश्वर से बिमुख येही प्रायश्चित्ती लोग हैं ॥

इन सभों के साथ मातहत में काम करने के लिये आदमी भी काफी तौर पर दे दिये गये ॥

इनके अतिरिक्त और २ लोगों को भी तरह २ के काम सपुर्द किये गये और सब कोई बड़ी खूबी के साथ अपना अपना काम करने लगे ॥

अब हम थोड़ासा हाल कुंअर इन्द्रजीतसिंह का बयान करेंगे जिन्हें इस बात का बहुत ही रञ्ज है कि कमलिनी की शादी किसी दूसरे के साथ होगई और ये उम्मीद ही में बैठे रह गये ॥

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है और कुंअर इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे में बैठे भैरोसिंह से धीरे २ बातें कर रहे हैं । इन दोनों के सिवाय कोई तीसरा आदमी इस कमरे में नहीं है और कमरे का दर्वाजा भी लुड़काया हुआ है ॥

भैरो० । तो आप साफ २ कहते क्यों नहीं कि आपकी उदासी का सबब क्या है ? आपको तो आज खुश होना चाहिये कि जिस काम के लिये बरसों परेशान रहे, जिसकी उम्मीद में तरह २ की तकलीफें उठाईं जिसके लिये हथेली पर जान रखके बड़े २ दुश्मनों से मुकाबला

करना पड़ा और जिसके होने या मिलने ही पर तमाम दुनिया को खुशी समझी जाती थी, आज वही काम आपकी इच्छानुसार हो रहा है और उसी किशोरी के साथ आप अपनी शादी का इन्तजाम अपनी आंखों से देख रहे हैं, फिर ऐसी अवस्था में आपको उदास देख कर कौन ऐसा है जो ताज्जुब न करेगा ?

इन्द्रजीत० । बेशक मेरे लिये आज बड़ी खुशी का दिन है और मैं खुश भी हूं मगर कमलिनी की तरफ से जो मुझे रञ्ज हुआ है उसे हजार कोशिश करने पर भी मेरा दिल बरदाश्त नहीं करता ॥

भैरो० । (ताज्जुब का चेहरा बना कर) हैं ! कमलिनी की तरफ से आपको रञ्ज ! जिसके अहसानों के बोझ से आप दबे हुए हैं उसी कमलिनी से रञ्ज ! यह आप क्या कह रहे हैं ?

इन्द्रजीत० । इस बात को तो मैं खुद कह रहा हूं कि "उसके अहसानों के बोझ से मैं जिन्दगी भर हलका नहीं हो सकता" और अब तक उसके बदले में मेरी भलाई का ध्यान बंधा ही हुआ है मगर रञ्ज इस बात का है कि अब मैं उसे उस मुहब्बत की निगाह से नहीं देख सकता जिससे कि पहिले देखता था ॥

भैरो० । सो क्यों, क्या इसलिये कि अब वह अपने ससुराल चली जायगी और फिर उसे आप पर अहसान करने का मौका न मिलेगा ?

इन्द्रजीत० । हां करीब करीब यही बात है ॥

भैरो० । मगर अब आपको उसके मदद की जरूरत भी तो नहीं है। हां इस बात का खयाल हो सकता है कि अब आप उसके तिलिस्मी मकान पर कब्जा न कर सकेंगे ॥

इन्द्रजीत० । नहीं नहीं, मुझे इस बात को कुछ जरूरत नहीं है और न इसका कुछ खयाल ही है ॥

भैरो० । तो क्या इस बात का खयाल है कि उसने अपनी शादी

में आपको न्योता नहीं दिया ? मगर वह एक हिन्दू लड़की की हैसियत से ऐसा कर भी तो नहीं सकती थी। हां इस बात की शिकायत आप गोपालसिंह से जरूर कर सकते हैं क्योंकि उस काम के करता धरता वे ही हैं॥

इन्द्रजीत०। उनसे तो मुझे बहुत ही शिकायत है मगर मैं शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता॥

भैरो०। (चौंक कर) शर्म ! शर्म तो तब होती जब आप इस बात की शिकायत करते कि मैं खुद उससे शादी किया चाहता था॥

इन्द्रजीत०। हां, बात ऐसी ही है। (मुस्कुरा कर) मगर तुम तो पागलों की सी बात करते हो॥

भैरो० (हँस कर) यह न कहिये ! आप दोनों हाथ लड्डू चाहते थे !! तो इस चोर को आप इतने दिनों तक छिपाए क्यों रहे॥

इन्द्रजीत०। तो यह कब उम्मीद हो सकती थी कि इस तरह यकायक और गुमसुम शादी हो जायगी॥

भैरो०। खैर अब तो जो कुछ होना था हो गया, मगर आप को इस बात का कुछ खयाल न करना चाहिये इसके अतिरिक्त क्या आप समझते हैं कि किशोरी इस बात को पसन्द करती ? कभी नहीं, बल्कि आये दिन का एक झगड़ा पैदा हो जाता॥

इन्द्रजीत०। नहीं किशोरी से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती, खैर अब इस विषय पर बहस करना व्यर्थ है मगर मुझे इसका रञ्ज जरूर है। अच्छा यह तो बताओ कि तुमने उन्हें देखा है जिसके साथ कमलिनी की शादी हुई है॥

भैरो०। कई दफे, बातें भी अच्छी तरह कर चुका हूं॥

इन्द्रजीत०। कैसे हैं ?

भैरो०। बड़े लायक, पढ़े लिखे, पण्डित, बहादुर, दिलेर, हँसमुख

और सुन्दर। इस अवसर पर आवेहींगे देख लीजियेगा। आपने कमलिनी से इस बारे में बातचीत नहीं की ?

इन्द्रजीत०। इधर तो नहीं मगर तिलिस्म की सैर को जाने के पहिले मुलाकात हुई थी, उसने खुद मुझे बुलाया था बल्कि उसी की जुबानी उसकी शादी का हाल मुझे मालूम हुआ, मगर उसने मेरे साथ विचित्र ढङ्ग का बर्ताव किया॥

भैरो०। सो क्या ?

इन्द्रजीत०। (जो कुछ कैफियत हो चुकी थी उसे बयान करने के बाद) तुम इस बर्ताव को कैसा समझते हो ?

भैरो०। बहुत अच्छा और उचित॥

इस तरह की बातें हो ही रही थीं कि पहिले दिन की तरह बगल वाले कमरे का दर्वाजा खुला और एक लौंडी ने आकर सलाम करने के बाद कहा, "कमलिनी जी आपसे मिला चाहती हैं आज्ञा हो तो..."

इन्द्रजीत०। अच्छा मैं चलता हूं तू दर्वाजा बन्द कर दे॥

भैरो०। तो अब मैं भी जा कर आराम करता हूं॥

इन्द्रजीत०। अच्छा जाओ फिर कल देखा जायगा॥

लौंडी०। इनसे (भैरोसिंह से) भी उन्हें कुछ कहना है॥

यह कहती हुई लौंडी ने दर्वाजा बन्द कर दिया। तब तक स्वयं कमलिनी उस कमरे में आ पहुंची और भैरोसिंह की तरफ देख के बोली जो उठ कर बाहर जाने के लिए तैयार थे, "आप कहां चले ? आप ही से तो मुझे बहुत सी शिकायत करनी है॥"

भैरो०। सो क्या ?

कमलिनी०। अब उसी कमरे में चलिये तो बातचीत होगी॥

इतना कह कर कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और अपने कमरे की तरफ ले चली, पीछे २ भैरोसिंह भी गए, लौंडी दर्वाजा

बन्द करके दूसरी राह से बाहर चली गई और कमलिनी ने इन दोनों को उचित स्थान पर बैठा कर पानदान आगे रख दिया और भैरोसिंह से कहा, "आप लोग तिलिस्म की सैर कर आए और मुझे पूछा भी नहीं !!"

भैरो०। महाराज खुद कह चुके हैं कि "शादी के बाद औरतों को भी तिलिस्म की सैर करा दी जाय।" और फिर तुम्हारे लिये तो कहना ही क्या है, तुम जब चाहे तिलिस्म की सैर कर सकती हो॥

कम०। ठीक है, मानो यह मेरे हाथ की बात है॥

भैरो०। हई है॥

कम०। (हँस कर) टालने के लिये यह अच्छा ढङ्ग है, खैर जाने दीजिये मुझे कुछ ऐसा शौक भी नहीं है, हां यह बताइये कि वहां क्या २ कैफियत देखने में आई ? मैंने सुना है कि भूतनाथ वहां बड़े चक्कर में पड़ गया था और उसकी पहिली स्त्री भी वहां दिखाई पड़ गई॥

भैरो०। बेशक ऐसा ही हुआ॥

इतना कह कर भैरोसिंह ने कुल हाल खुलासा बयान किया और इसके बाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "खैर आप यह बताइये कि इस शादी की खुशी में मुझे क्या इनाम मिलेगा ?"

इन्द्रजीत०। (हँस कर) गालियों के सिवाय और किसी चीज की तुम्हें कमी ही क्या है जो मैं दूं ?

कमलिनी०। (भैरो से) सुन लीजिये मेरे लिये कैसा अच्छा इनाम सोचा गया है। (कुमार से हँस कर) याद रखियेगा इस जवाब के बदले में आपको ऐसा छकाऊँगी कि खुश हो जाइयेगा॥

भैरो०। इन्हें तुम छका ही चुकी हो, अब इससे बढ़ के क्या होगा कि चुपचाप दूसरे के साथ शादी करली और इन्हें अँगूठा दिखा

दिया, अब तुम्हें ये गालियां न दें तो क्या करें ?

कमलिनी० । (मुसकुराती हुई) आप की भी यही राय है ?

भैरो० । वेशक !!

कमलिनी० । तो बेचारी किशोरी के साथ आप अच्छा सलूक करते हैं ॥

भैरो० । इसका इलजाम तो कुमार के ऊपर हो सकता है ॥

कमलिनी० । हां साहब मर्दों की मुरौअत जो कुछ कर दिखावे थोड़ा है, मैं किशोरी बहिन से इसका जिक्र जरूर करूंगी ॥

भैरो० । तब तो अहसान पर अहसान करोगी ॥

इन्द्रजीत० । (भैरो से) तुम भी व्यर्थ की छेड़छाड़ मचा रहे हो भला इन बातों से क्या फायदा ?

भैरो० । ब्याह शादी में ऐसी ही बातें तो हुआ करती हैं ॥

इन्द्रजीत० । तुम्हारा सिर हुआ करता है (कमलिनी से) अच्छा यह बताओ कि इस समय तुमने मुझे क्यों याद किया ?

कमलिनी० । हरे राम ! अब क्या मैं ऐसी भारी होगई कि मुझसे मिलना भी बुरा मालूम होता है ?

इन्द्रजीत० । नहीं नहीं, अगर मिलना बुरा मालूम होता तो मैं यहां आता ही क्यों ? पूछता हूं कि आखिर कोई काम भी है या......

कमलिनी० । हां है तो सही ॥

इन्द्रजीत० । कहो ॥

कमलिनी० । आपको शायद मालूम होगा कि मेरे पिता जब से यहां आये हैं उन्होंने अपने खाने पीने का इन्तजाम अलग रक्खा है अर्थात् आपके यहां का अन्न नहीं खाते और न कुछ अपने लिये खर्च कराते हैं ॥

इन्द्रजीत० । हां मुझे मालूम है ॥

कमलिनी०। अब उन्होंने इस मकान में रहने से भी इन्कार किया है, उनके एक मित्र ने खेमे वगैरह का इन्तजाम कर दिया है और अब वे उसी में अपना डेरा उठा ले जाने वाले हैं॥

इन्द्रजीत०। यह भी मालूम है॥

कमलिनी०। मेरी इच्छा है कि यदि आप आज्ञा दें तो लाडिली को साथ लेकर मैं भी उसी डेरे में चली जाऊं॥

इन्द्रजीत०। क्यों? और तुम्हें यहां रहने में परहेज ही क्या हो सकता है?

कमलिनी०। नहीं नहीं, मुझे किस बात का परहेज होगा मगर यों ही जी चाहता है कि मैं दो चार दिन अपने बाप के साथ रह कर उनकी खिदमत करूं॥

इन्द्रजीत०। यह दूसरी बात है और इसकी इजाजत तुम्हें अपने मालिक से लेना चाहिये मैं कौन हूं जो इजाजत दूं?

कमलिनी०। इस समय वे तो यहां हैं नहीं अस्तु उनके बदले में मैं आप ही को अपना मालिक समझती हूं॥

इन्द्रजीत०। (मुस्कुरा कर) फिर तुमने वही रास्ता पकड़ा! खैर मैं इस बात की इजाजत न दूंगा॥

कमलिनी०। तो मैं भी आज्ञा के विरुद्ध कुछ न करूंगी॥

इन्द्रजीत०। (भैरो से) इनकी बातचीत का ढङ्ग देखते हो?

भैरो०। (हँस कर) शादी हो जाने पर भी ये आपको नहीं छोड़ा चाहतीं तो मैं क्या करूं?

कमलिनी०। अच्छा मुझे एक बात की इजाजत तो जरूर दीजिये।

इन्द्रजीत०। वह क्या?

कमलिनी०। आपकी शादी में मैं आप से एक विचित्र दिल्लगी किया चाहती हूं॥

इन्द्रजीत०। वह कौन सी दिल्लगी होगी ?

कमलिनी०। यही बता दूंगी तो उसमें मजा ही क्या रह जायगा? बस आप इतना कह दीजिये कि उस दिल्लगी से रञ्ज न होंगे चाहे वह कैसी ही गहरी दिल्लगी क्यों न हो॥

इन्द्रजीत०। (कुछ सोच कर) खैर मैं रञ्ज न होऊंगा॥

इसके बाद थोड़ी देर तक हँसी की बातें होती रहीं और फिर उठ कर सब कोई अपने २ ठिकाने चले गये॥

नौवां बयान।

व्याह की तैयारी और हँसी खुशी में ही कई सप्ताह बीत गये और किसी को कुछ मालूम न हुआ। हां कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को खुशी के साथ ही साथ रंज और उदासी से भी मुकाबला करना पड़ा। यह रंज और उदासी क्यों? शायद कमलिनी और लाडिली के सबब से हो। जिस तरह कुंअर इन्द्रजीतसिंह कमलिनी से मिल कर और उसकी जुबानी उसके व्याह का हो जाना सुन कर दुखी हुए, उसी तरह आनन्दसिंह को भी लाडिली से मिल कर दुखी होना पड़ा या नहीं सो हम नहीं कह सकते क्योंकि लाडिली से और आनन्दसिंह से जो बातें हुई उससे और कमलिनी की बातों से बड़ा फर्क है। कमलिनी ने तो खुद इन्द्रजीतसिंह को अपने कमरे में बुलाया था मगर लाडिली ने ऐसा नहीं किया। लाडिली का कमरा भी आनन्दसिंह के कमरे के बगल ही में था। जिस रात कमलिनी से और इन्द्रजीतसिंह से दूसरी मुलाकात हुई थी, उसी रात को आनन्दसिंह ने भी अपने बगल वाले कमरे में लाडिली को देखा था मगर दूसरे ढङ्ग से। आनन्दसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटे हुए तरह तरह

की बातें सोच रहे थे उसी समय बगल वाले कमरे में से कुछ खटके की आवाज आई जिससे आनन्दसिंह चौंके और उन्होंने घूम कर देखा तो उस कमरे का दर्वाजा कुछ खुला हुआ नजर आया । इन्हें यह जरूर मालूम था कि हमारे बगल ही में लाडिली का कमरा है और उससे मिलने की नीयत से इन्होंने कई दफे दर्वाजा खोलना चाहा था मगर बन्द पाकर लाचार रह गये थे । आज दर्वाजा खुला पाकर बहुत खुश हुए और मसहरी पर से उठ धीरे धीरे दर्वाजे के पास गये । हाथ के सहारे दर्वाजे को कुछ विशेष खोला और अन्दर की तरफ झांक कर देखा । लाडिली पर निगाह पड़ी जो एक शमादान के आगे बैठी हुई कुछ लिख रही थी, शायद उसे इस बात की कुछ खबर न थी कि मुझे कोई देख रहा है ॥

भीतर सन्नाटा पाकर अर्थात् किसी गैर को न देख कर आनन्दसिंह बेधड़क कमरे के अन्दर चले गये । पैर की आहट पातेही लाडिली चौंकी और आनन्दसिंह को अपनी तरफ आते देख उठ खड़ी हुई और प्रणाम करके मुस्कुराती हुई बोली, "अपने दर्वाजा कैसे खोल लिया ?"

आनन्द० । (मुस्कुराते हुए) किसी हिकमत से ॥

लाडिली० । क्या आज के पहिले वह हिकमत मालूम न थी ? शायद सफाई के लिये किसी ने दर्वाजा खोला हो और लौंडा उसे बन्द करना भूल गई हो ॥

आनन्द० । अगर ऐसा ही हो तो क्या कुछ हर्ज है ?

लाडिली० । नहीं, हर्ज काहेका है मैं तो खुद आप से मिला चाहती थी मगर लाचारी........

आनन्द० । लाचारी कैसी ? क्या किसी ने मना कर दिया था ?

लाडिली० । मना ही समझना चाहिये जब कि मेरी बहिन कमलिनी ने जोर दे कर यह कह दिया, "या तू मेरी इच्छानुसार शादी

कर ले या इस बात की कसम खा जा कि किसी गैर मर्द से कभी बातचीत न करेगी।" जिस समय उनकी (कमलिनी की) शादी होने लगी थी उस समय भी लोगों ने मुझ पर शादी कर लेने के लिये दबाव डाला था मगर मैं इस समय जैसी हूं वैसी ही रहने के लिये कसम खा चुकी हूं ? मतलब यह कि इसी बखेड़े में मुझसे और उन से कुछ तकरार भी हो गई है॥

आनन्द०। (घबराहट और ताज्जुब के साथ) क्या कमलिनी की शादी हो गई ?

लाडिली०। जी हां॥

आनन्द०। किसके साथ ?

लाडिली०। सो तो मैं नहीं कह सकती आप को खुद मालूम हो जायगा॥

आनन्द०। यह बहुत बुरा हुआ ?

लाडिली०। बेशक बुरा हुआ मगर क्या किया जाय जीजा जी (गोपालसिंह) की मर्जी ही ऐसी थी क्योंकि किशोरी ने ऐसा करने के लिये उन पर बहुत जोर डाला था अस्तु कमलिनी बहिन दबाव में पड़ गईं मगर मैंने साफ इन्कार कर दिया और कह दिया कि जैसी हूं वैसी ही रहूंगी॥

आनन्द०। तुमने बहुत अच्छा किया॥

लाडिली०। और मैं ऐसा करने के लिये सख्त कसम खा चुकी हूं

आनन्द०। (ताज्जुब से) क्या तुम्हारे इस कहने का यह मतलब लगाया जाय कि अब तुम शादी करोगी ही नहीं ?

लाडिली०। बेशक॥

आनन्द०। यह तो कोई अच्छी बात नहीं है॥

लाडिली०। जो हो अब तो मैं कसम खा चुकी हूं और बहुत जल्द

यहां से चली जाने वाली हूं सिर्फ कामिनी बहिन की शादी हो जाने का इन्तजार कर रही हूं ॥

आनन्द० । (कुछ सोच कर) कहां जाओगी ?

लाडिली० । आप लोगों की कृपा से अब तो मेरा बाप भी प्रगट हो गया है अब इस की चिन्ता ही क्या है ?

आनन्द० । मगर जहां तक मैं समझता हूं तुम्हारा बाप शादी करने के लिये जरूर जोर देगा ॥

लाडिली० । इस विषय में उनकी कुछ न चलेगी ॥

लाडिली की बातों से आनन्दसिंह को ताज्जुब के साथ ही साथ रञ्ज भी हुआ और ज्यादे रञ्ज तो इस बात का था कि अब तक लाडिली ने खड़े ही खड़े बातचीत की और कुमार को बैठने तक के लिये नहीं कहा शायद इसका यह मतलब हो कि "मैं ज्यादे देर तक आप से बात नहीं कर सकता ।" अस्तु आनन्दसिंह को क्रोध और दुःख के साथ ही साथ लज्जा ने भी धर दबाया और वे यह कह कर कि—"अच्छा मैं जाता हूं" अपने कमरे की तरफ लौट चले ॥

आनन्दसिंह के दिल में जो बातें घूम रही थीं उसका अन्दाजा लाडिली को भी मिल गया और जब वे लौट कर जाने लगे तब उसने पुनः इस ढङ्ग पर कहा मानो उसकी आखिरी बात अभी पूरी नहीं हुई थी, "क्योंकि जिनकी मुझ पर कृपा रहती थी अब वे और ही ढङ्ग के हो गये ॥"

इस बात ने कुमार को तरद्दुद में डाल दिया और उन्होंने घूम कर एक तिरछी निगाह लाडिली पर डाली और कहा, "इसका क्या मतलब ?"

लाडिली० । सो कहने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है हां जब आप की शादी हो जायगी तब मैं साफ साफ आपसे कह दूंगी, उस समय

जो कुछ आप राय देंगे उसे मैं कबूल भी कर लूंगी॥

इस आखिरी बात से कुमार को कुछ उम्मीद बंध गई मगर बैठने की या और कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी और "अच्छा" कह कर अपने कमरे में चले आये॥

दसवां बयान।

बिवाह का सब सामान ठीक होगया, मगर हर तरह की तैयारी हो जाने पर भी लोगों की मेहनत में कमी नहीं हुई। सब कोई उसी तरह दौड़ धूप और कामकाज में लगे हुए दिखाई दे रहे हैं। महाराज सुरेन्द्रसिंह सभों को लिये हुए चुनारगढ़ चले गये, अब इस तिलिस्मी मकान में जरूरत की चीजों के ढेर और इन्तजामकार लोगों के डेरे दिखाई दे रहे हैं। इसी मकान में उन लोगों के लिये रास्ता बनाया गया है जो हँसते हँसते उस तिलिस्मी इमारत में कूदा करेंगे जिसके बनाने की आज्ञा इन्द्रदेव को दी गई थी और जो इस समय बन कर तैयार हो गई है॥

यह इमारत बीस गज लम्बी और इतनी ही चौड़ी थी, ऊंचाई इसकी लगभग चालीस हाथ से कुछ ज्यादे होगी। चारों तरफ की दीवार साफ और चिकनी थी तथा किसी तरफ कोई दरवाजे का निशान दिखाई नहीं देता था। पूरब तरफ ऊपर चढ़ जाने के लिये छोटी छोटी सीढ़ियां बनी हुई थीं जिनके दोनों तरफ हिफाजत के लिये लोहे के सीखचे लगा दिये गये थे। उसी पूरब तरफ वाली दीवार पर बड़े बड़े हरफों में यह लिखा हुआ था:—

"जो आदमी इन सीढ़ियों की राह ऊपर चढ़ जायगा और एक नजर अन्दर की तरफ झांक वहां की कैफियत देखकर इन्हीं सीढ़ियों की

राह नीचे उतर आवेगा उसे एक लाख रुपै इनाम में दिये जायँगे॥"

इस इमारत ने चारों तरफ एक अनूठा रङ्ग पैदा कर दिया था। हजारों आदमी उस इमारत के ऊपर चढ़ जाने के लिये तैयार और हर एक अपनी लालसा पूरी करने के लिये जल्दी मचा रहा था मगर सीढ़ी का दरवाजा बन्द था और पहरेदार लोग किसी को ऊपर जाने की इजाजत नहीं देते थे और यह कह कर सभों को सन्तोष करा देते थे कि "बारात वाले दिन दर्वाजा खुलेगा और पन्द्रह दिन तक बन्द न होगा॥"

यहां से चुनारगढ़ की सड़क के दोनों तरफ जो सजावट की गई थी उसमें भी एक अनूठापन था। दोनों तरफ रोशनी के लिये जाफरी बनी हुई थी और उसमें अच्छे अच्छे नीति के श्लोक दरसाये गये थे जो कि रोशनी होने पर बहुत साफ तौर पर पढ़े जा सकते थे। बीच बीच में थोड़ी २ दूर पर नौबतखाना बना हुआ था और हर एक नौबतखाने के बगल में एक मचान था जिस पर एक या दो कैदियों को बैठाने के लिये जगह बनी हुई थी। जाफरी के दोनों तरफ दस दस हाथ चौड़ी जमीन में बाग का नमूना तैयार किया गया था उसके बाद आतशबाजी लगाई गई थी। आध आध कोस की दूरी पर सर्वसाधारण और गरीब तमाशबीनों के लिये महफिल तैयार की गई थी और उसके लिये अच्छी २ गाने वाली रण्डियां, गवैये और भांड़ मुकर्रर किये गये थे, रात अन्धेरी होने के कारण रोशनी का सामान ज्यादे तैयार किया गया था और वह तिलिस्मी चन्द्रमा जो दोनों कुमारों को तिलिस्म के अन्दर से मिला था * चुनारगढ़ किले के ऊंचे कंगूरे पर लगा दिया गया था जिसकी रोशनी इस तिलिस्मी मकान तक बड़ी खूबी और सफाई के साथ पड़ रही थी॥

* देखो हिस्सा २१ बयान ८॥

पाठक! दोनों कुमारों के बारात की सजावट, महफिलों की तैयारी, रोशनी और आतशबाजी की खूबी, मेहमानदारी की तारीफ और खैरात की बहुतायत इत्यादि का हाल बिस्तार पूर्वक लिख कर पढ़ने वालों का समय नष्ट करना हमारी आत्मा और आदत के बिरुद्ध है। आप खुद समझ सकते हैं कि दोनों कुमारों की शादी का इन्तजाम किस खूबी के साथ किया गया होगा, नुमाइश की चीजें कैसी अच्छी होंगी, बड़प्पन का कितना बड़ा खयाल किया गया होगा और बारात किस धूमधाम से निकली होगी? हम आज तक जिस तरह संक्षेप में लिखते आये हैं अब भी उसी तरह लिखेंगे, तथापि हमारी उन लिखावटों से जो ब्याह के सम्बन्ध में ऊपर कई दफे मौके मौके पर लिखी जा चुकी हैं आपको अन्दाज के साथ अनुमान करने का हौसला मिल जायगा और विशेष सोच विचार की जरूरत न रहेगी। हम इस जगह पर केवल इतना ही लिखेंगे कि—

बारात बड़े धूमधाम से चुनारगढ़ के बाहर हुई। आगे २ नौबत निशान और उसके बाद सिलसिलेवार फौजी सवार पैदल और तोपखाना वगैरह था तथा ऐसी फुलवारियां थीं जिनके देखने से खुशी और लूटने से दौलत हासिल हो। इसके बाद बहुत बड़े सजे हुए अम्बारीदार हाथी पर दोनों कुमार, हाथी ही पर सवार अपने बड़े, बुजुर्गों, रिश्तेदारों और मेहमानों से घिरे हुए धीरे धीरे दोतर्फी बहार लूटते और दुश्मनों के कलेजों को जलाते हुए जा रहे थे और उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोड़ों पर बैठे हुए बड़े बड़े सर्दार लोग दिखाई दे रहे थे, अन्त में फिर कुछ फौजी सिपाहियों का सिलसिला था। आगे वाले नौबत निशान से लेकर कुमारों के हाथी तक कई तरह के बाजे वाले अपने २ मौके से अपना २ इल्म और हुनर दिखा रहे थे॥

राह नीचे उतर आवेगा उसे एक लाख रुपै इनाम में दिये जायँगे ॥"

इस इमारत ने चारों तरफ एक अनूठा रङ्ग पैदा कर दिया था। हजारों आदमी उस इमारत के ऊपर चढ़ जाने के लिये तैयार और हर एक अपनी लालसा पूरी करने के लिये जल्दी मचा रहा था मगर सीढ़ी का दरवाजा बन्द था और पहरेदार लोग किसी को ऊपर जाने की इजाजत नहीं देते थे और यह कह कर सभों को सन्तोष करा देते थे कि "बारात वाले दिन दर्वाजा खुलेगा और पन्द्रह दिन तक बन्द न होगा ॥"

यहां से चुनारगढ़ की सड़क के दोनों तरफ जो सजावट की गई थी उसमें भी एक अनूठापन था। दोनों तरफ रोशनी के लिये जाफरी बनी हुई थी और उसमें अच्छे अच्छे नीति के श्लोक दरसाये गये थे जो कि रोशनी होने पर बहुत साफ तौर पर पढ़े जा सकते थे। बीच बीच में थोड़ी २ दूर पर नौबतखाना बना हुआ था और हर एक नौबतखाने के बगल में एक मचान था जिस पर एक या दो कैदियों को बैठाने के लिये जगह बनी हुई थी। जाफरी के दोनों तरफ दस दस हाथ चौड़ी जमीन में बाग का नमूना तैयार किया गया था उसके बाद आतशबाजी लगाई गई थी। आध आध कोस की दूरी पर सर्वसाधारण और गरीब तमाशबीनों के लिये महफिल तैयार की गई थी और उसके लिये अच्छी २ गाने वाली रण्डियां, गवैये और भांड़ मुकर्रर किये गये थे, रात अन्धेरी होने के कारण रोशनी का सामान ज्यादे तैयार किया गया था और वह तिलिस्मी चन्द्रमा जो दोनों कुमारों को तिलिस्म के अन्दर से मिला था * चुनारगढ़ किले के ऊंचे कंगूरे पर लगा दिया गया था जिसकी रोशनी इस तिलिस्मी मकान तक बड़ी खूबी और सफाई के साथ पड़ रही थी॥

* देखो हिस्सा २१ बयान ८ ॥

पाठक! दोनों कुमारों के बारात की सजावट, महफिलों की तैयारी, रोशनी और आतशबाजी की खूबी, मेहमानदारी की तारीफ और खैरात की बहुतायत इत्यादि का हाल बिस्तार पूर्वक लिख कर पढ़ने वालों का समय नष्ट करना हमारी आत्मा और आदत के बिरुद्ध है। आप खुद समझ सकते हैं कि दोनों कुमारों की शादी का इन्तजाम किस खूबी के साथ किया गया होगा, नुमाइश की चीजें कैसी अच्छी होंगी, बड़प्पन का कितना बड़ा खयाल किया गया होगा और बारात किस धूमधाम से निकली होगी? हम आज तक जिस तरह संक्षेप में लिखते आये हैं अब भी उसी तरह लिखेंगे, तथापि हमारी उन लिखावटों से जो ब्याह के सम्बन्ध में ऊपर कई दफे मौके मौके पर लिखी जा चुकी हैं आपको अन्दाज के साथ अनुमान करने का हौसला मिल जायगा और विशेष सोच बिचार की जरूरत न रहेगी। हम इस जगह पर केवल इतना ही लिखेंगे कि—

बारात बड़े धूमधाम से चुनारगढ़ के बाहर हुई। आगे २ नौबत निशान और उसके बाद सिलसिलेवार फौजी सवार पैदल और तोपखाना वगैरह था तथा ऐसी फुलवारियां थीं जिनके देखने से खुशी और लूटने से दौलत हासिल हो। इसके बाद बहुत बड़े सजे हुए अम्बारीदार हाथी पर दोनों कुमार, हाथी ही पर सवार अपने बड़े, बुजुर्गों, रिश्तेदारों और मेहमानों से घिरे हुए धीरे धीरे दोतर्फी बहार लूटते और दुश्मनों के कलेजों को जलाते हुए जा रहे थे और उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोड़ों पर बैठे हुए बड़े बड़े सर्दार लोग दिखाई दे रहे थे, अन्त में फिर कुछ फौजी सिपाहियों का सिलसिला था। आगे वाले नौबत निशान से लेकर कुमारों के हाथी तक कई तरह के बाजे वाले अपने २ मौके से अपना २ इल्म और हुनर दिखा रहे थे॥

कुशलपूर्वक बारात ठिकाने पहुंची और शास्त्रानुसार कर्म तथा रीति नीति होने के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह का बिवाह किशोरी और कामिनी के साथ हो गया और इस काम में रणधीर-सिंह ने भी बित्त के अनुसार दिल खोल कर खर्च किया। दूसरे रोज पहर भर दिन चढ़ने के पहिले ही दोनों बहुओं की रुखसती करा कर महाराज चुनार की तरफ लौट पड़े॥

चुनारगढ़ पहुंचने पर जो कुछ रसम थीं वे पूरी होने लगीं और मेहमान तथा तमाशबीन लोग तरह तरह के तमाशों और महफिलों का आनंद लूटने लगे। उधर तिलिस्मी मकान की सीढ़ियों पर लाख रुपया इनाम पाने की लालसा से लोगों ने चढ़ना आरम्भ किया। जो कोई दीवार के ऊपर पहुंच कर अन्दर की तरफ झांकता वह अपने दिल को किसी तरह न सम्हाल सकता और एक दफे खिल-खिला कर हँसने के बाद अन्दर की तरफ कूद पड़ता और कई घण्टे के बाद उस चबूतरे वाली बहुत बड़ी तिलिस्मी इमारत की राह से बाहर निकाला जाता॥

बस, बिवाह का इतना ही हाल संक्षेप में लिख कर हम इस बयान को पूरा करते हैं और इसके बाद सोहागरात की एक अनूठी घटना का उल्लेख करके बाईसवें हिस्से को समाप्त करेंगे क्योंकि हम दिलचस्प घटनाओं ही का लिखना पसन्द करते हैं॥

ग्यारहवां बयान।

आज कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की खुशी का कोई ठिकाना नहीं है। तरह २ की तकलीफें उठा कर एक मुद्दत के बाद इन दोनों की दिली मुरादें हासिल हुई हैं॥

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और एक सुन्दर सजे हुए कमरे में ऊंची और मुलायम गद्दी पर किशोरी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह बैठे हुए दिखाई देते हैं। यद्यपि कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरह किशोरी के दिल में भी तरह तरह के उमङ्ग भरे हुए हैं और वह आज इस ढङ्ग पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की पहिली मुलाकात को सौभाग्य का कारण समझती है मगर उस अनोखी लज्जा के पाले में पड़ी हुई किशोरी का चेहरा घूंघट की ओट से बाहर नहीं होता जिसे प्रकृति अपने हाथों से औरतों की बुद्धि में जनम ही से दे देती है। यद्यपि आज के पहिले कुंअर इन्द्रजीतसिंह को कई दफे किशोरी देख चुकी है और उनसे बातें भी कर चुकी है तथापि आज पूरी स्वतन्त्रता मिलने पर भी यकायक सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती। कुमार तरह तरह की बातें कह कर और समझा कर उसकी लज्जा दूर किया चाहते हैं मगर कृतकार्य नहीं होते। बहुत कुछ कहने सुनने पर कभी कभी किशोरी दो एक शब्द बोल देती है मगर वह भी धड़कते हुए कलेजे के साथ। कुमार ने सोच लिया कि "यह स्त्रियों की प्रकृति है अतएव इसके विरुद्ध जोर न देना चाहिये। यदि इस समय इसकी हिम्मत नहीं खुलती तो क्या हुआ घण्टे दो घण्टे, पहर दो पहर, या एक दो दिन में खुल ही जायगी, यदि इस समय यह चांद पर्दे के बाहर नहीं होता तो सवेरा होते होते तक हो ही जायगा।" आखिर ऐसा ही हुआ॥

इसके बाद किस तरह की छेड़छाड़ शुरू हुई और क्या हुआ सो हम नहीं लिख सकते, हां उस समय का हाल जरूर लिखेंगे जब धीरे धीरे सुबह की सुपेदी आसमान पर फैलने लग गई थी और नियमा-नुसार प्रातःकाल बजाये जाने वाली नफीरी की आवाज ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को नींद से जगा दिया था। किशोरी जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह के बगल में सोई हुई थी घबड़ा कर उठ बैठी और मुंह धोने तथा बिखरे हुए बालों को सुधारने की नौबत से उस सुनहरी चौकी की तरफ बढ़ी जिस पर सोने के बर्तनों में गङ्गाजल भरा हुआ था और जिसके पासही जल गिराने के लिये एक बड़ासा चांदी का आफताबा भी रक्खा था। हाथ में जल लेकर चेहरे पर लगाने और पुनः अपना हाथ देखने के साथ ही किशोरी चौंक पड़ी और घबड़ा कर बोली, "हैं !! यह क्या मामला है ?"

इन शब्दों ने इन्द्रजीतसिंह को चौंका दिया और वह घबड़ा कर किशोरी के पास चले गये और पूछा, "क्यों क्या हुआ ?"

किशोरी०। मेरे साथ आपने यह क्या दिल्लगी की ?

इन्द्रजीत०। कुछ कहो भी तो क्या हुआ ?

किशोरी०। (हाथ दिखा कर) देखिये यह रङ्ग कैसा है जो मेरे चेहरे पर से पानी लगाने के साथ ही छूट रहा है॥

इन्द्रजीत०। (हाथ देख कर) है तो सही ! मगर मैंने तो कुछ भी नहीं किया, तुम खुद सोच सकती हो कि मैं भला तुम्हारे चेहरे पर रङ्ग क्यों लगाऊंगा और यहां रङ्ग आया ही कहां से॥

किशोरी०। (पुनः चेहरे पर जल लगा के) यह देखिये है या नहीं ?

इन्द्र०। सो तो मैं खुद ही कह रहा हूं कि रङ्ग जरूर है मगर... जरा मेरी तरफ देखो तो सही !!

किशोरी ने भी अब समयानुकूल लज्जा के हाथों से छूट कर

ढिठाई का पल्ला पकड़ चुकी थी और जो कई घण्टों की कशमकश और चलनचाल की बदौलत बातचीत करने लायक समझी जाती थी, कुमार की तरफ देखा और फिर कहा, "देखिये और कहिये यह किसकी करतूत है !"

इन्द्रजीत०। (और भी हैरान हो कर) बड़े ताज्जुब की बात है ! और इस रङ्ग के छूटने पर कुछ चेहरा बदलता हुआ मालूम पड़ता है ! अच्छा जरा अच्छी तरह मुंह धो तो डालो ॥

किशोरी ने "अच्छा" कह कर मुंह धो डाला और रूमाल से पोछने के बाद कुमार की तरफ देख कर बोली, "बताइये अब कैसा मालूम पड़ता है ? रङ्ग अब छुट गया या अभी नहीं ?"

इन्द्रजीत०। (घबड़ा कर) हैं ! अब तो तुम साफ कमलिनी मालूम पड़ती हो !! यह क्या मामला है ?

किशोरी०। कमलिनी तो हई हूं क्या पहिले कोई दूसरी मालूम पड़ती थी ?

इन्द्रजीत०। बेशक पहिले तुम किशोरी मालूम पड़ती थीं, कम रोशनी और कुछ लज्जा के कारण यद्यपि बहुत अच्छी तरह तुम्हारी सूरत रात को देखने में नहीं आई तथापि मौके २ पर कई दफे निगाह पड़ ही गई थी अस्तु किशोरी के सिवाय दूसरी औरत के होने का गुमान भी नहीं हो सकता था मगर...सच तो यों है कि तुमने मुझे बड़ा धोखा दिया ॥

कमलिनी०। (जिसे अब इसी नाम से लिखना उचित है) मैंने धोखा नहीं दिया बल्कि आप मुझे धोखा दे रहे हैं। भला मुझे इस बात का जवाब तो दीजिये कि अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो इतनी ढिठाई करने की हिम्मत कैसे पड़ी ? क्योंकि किशोरी आपकी स्त्री नहीं थी ॥

इन्द्र०। क्या पागलपने की सी बातें कर रही हो ! अगर किशोरी मेरी स्त्री नहीं थी तो क्या तुम मेरी स्त्री थीं ?

कमलिनी०। अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो आपको मेरे पास से उठ जाना चाहिये था। जब कि आप जानते हैं कि किशोरी कुमार के साथ ब्याही गई है तो आपको उसके पास बैठने या उस से बातचीत करने का क्या हक था ?

इन्द्रजीत०। तो क्या मैं इन्द्रजीतसिंह नहीं हूं ? बल्कि उचित तो यह था कि तुम मेरे पास से उठ जातीं, जब तुम कमलिनी थीं तो तुम्हें पराये मर्द के पास बैठना भी न चाहिये था ॥

कमलिनी०। (ताज्जुब और कुछ क्रोध का चेहरा बनाकर) फिर आप वही बातें कहे जाते हैं ? क्या किसी योगीराज ने अपनी आत्मा परिवर्तन तो नहीं की है ? आप अपने को समझ ही क्या रहे हैं ? पहिले आप आइने में अपनी सूरत देखिये और तब कहिये कि आप किशोरी के पति हैं या कमलिनी के। (आले पर से आईना उठा और कुमार को दिखा कर) बताइये आप कौन हैं ? मैं क्यों आपके पास से उठ जाती ?

अब तो कुमार के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा, क्योंकि आईना देखने पर उन्होंने अपनी सूरत में फर्क पाया। यह तो नहीं कह सकते थे कि किस आदमी की सी सूरत मालूम पड़ती है क्योंकि ऐसे आदमी को कभी देखा भी न था, मगर इतना जरूर कह सकते थे कि सूरत बदल गई है और अब मैं इन्द्रजीतसिंह नहीं मालूम पड़ता। इन्द्रजीतसिंह ने समझा कि किसी ने मेरे और कमलिनी के साथ चालबाजी करके दोनों का धर्म नष्ट किया इसमें बेचारी कमलिनी का कोई दोष नहीं है मगर फिर भी कमलिनी को आज का सामान देख कर चौंकना चाहिये था। हां ताज्जुब की बात तो यह है कि इस घर में आने के

पहिले मुझे किसी ने भी नहीं टोका, तो क्या इस घर में आने के बाद मेरी सूरत बदली गई ? ऐसा भी क्योंकर हो सकता है ? इत्यादि बातें सोचते हुए कुमार कमलिनी का मुंह देखने लगे। कमलिनी ने आईना हाथ से रख दिया और फिर पूछा,"बताइये आप कौन हैं ?" इसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने कहा, " अब मैं भी अपना मुंह धो डालूं तो कहूं ॥"

इतना कह कर कुमार ने भी जल से अपना चेहरा साफ किया और रूमाल से पोछने के बाद कमलिनी की तरफ देख के कहा— "अब तुम ही बताओ कि मैं कौन हूं ?"

कम०। अरे ! यह क्या हुआ ! तुम तो बेशक बड़े कुमार हो ! मगर तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? तुम्हें जरा भी धर्म का विचार न हुआ ? बताओ अब मैं किस लायक रह गई और क्या कर सकती हूं ? लोगों को कैसे अपना मुंह दिखाऊंगी और इस दुनिया में क्योंकर रहूंगी ?

इन्द्रजीत०। जिसने ऐसा किया वह बेशक मारे जाने के लायक है, मैं उसे कभी जीता न छोड़ूंगा, क्योंकि ऐसा होने से मेरा भी धर्म नष्ट हुआ और इस बदनामी को मैं कभी बरदाश्त नहीं कर सकता मगर यह तो बताओ कि आज का सामान देखकर भी तुम्हारे दिल में किसी तरह का शक पैदा न हुआ ?

कमलिनी०। क्योंकर शक पैदा हो सकता था जब कि आप ही की तरह मेरे लिये भी " सोहागरात " आज ही तै की गई थी। मैं नहीं कह सकती कि दूसरी तरफ का क्या हाल है ! ताज्जुब नहीं कि जिस तरह मैं धोखे में डाली गई उसी तरह किशोरी के साथ भी बेईमानी की गई हो और आपके बदले में किशोरी मेरे पति के पास पहुंचाई गई हो ॥

ओ हो ! कमलिनी की इस बात ने तो कुमार की रही सही अक्ल भी खो दी, जिस बात का अब तक कुमार के दिल में ध्यान भी न था उसे समझा कर कमलिनी ने अनर्थ कर दिया । ब्याह हो जाने पर भी किशोरी किसी दूसरे मर्द के पास भेजी जाय—क्या इस बात को कुमार बर्दाश्त कर सकते थे ? कभी नहीं । सुनने के साथ ही मारे क्रोध के उनका शरीर कांपने लगा और वह घबड़ा कर कमलिनी से बोले, "यह तो तुमने ठीक कहा, ताज्जुब नहीं कि ऐसा हुआ हो, अगर ऐसा हुआ हो तो मैं उन दोनों को इस दुनिया से उठा दूंगा ।" इतना कह कर कुमार ने अपनी तलवार उठा ली जो गद्दी पर पड़ी हुई थी और कमरे के बाहर जाने लगे । उस समय कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और कहा, "कृपानिधान ! जरा मेरी एक बात का जवाब दे लीजिये तो यहां से जाइये ॥"

इन्द्रजीत० । कहो ?

कमलिनी० । आपका धर्म नष्ट हुआ खैर कोई चिन्ता नहीं क्योंकि धर्मशास्त्र में मर्दों के लिये कोई कड़ी पाबन्दी नहीं लगाई है, मगर औरतों को तो किसी लायक नहीं छोड़ा है । आपके लिये तो प्रायश्चित्त है मगर मेरे लिये तो कोई प्रायश्चित्त भी नहीं जिसे करके मैं सुधर जाऊंगी । इतना जान कर भी मेरा धर्म नष्ट होने पर आपको उतना रञ्ज और क्रोध नहीं हुआ जितना यह सोच कर हुआ कि किशोरी की भी ऐसीही दशा हुई होगी, ऐसा क्यों ? क्या मेरा पति कमजोर और नामर्द है ? क्या वह भी आपकी तरह क्रोध में न आया होगा । क्या इसी तरह वह भी तलवार ले कर मेरी और आपकी खोज में न निकला होगा ? आप जल्दी क्यों करते हैं वह खुद यहां आता होगा क्योंकि वह आपसे ज्यादे क्रोधी है । मैं तो खुद उसके सामने गरदन झुका दूंगी ॥

कुमार को क्रोध पर क्रोध, रञ्ज पर रञ्ज और अफसोस पर अफसोस होता ही जाता है, कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार के दिल में दूसरा ही रङ्ग पैदा कर दिया। उन्होंने घबड़ा कर एक लम्बी सांस ली और ऊपर की तरफ मुंह करके कहा, "विधाता! तूने यह क्या किया? मैंने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसके बदले में इस खुशी को ऐसे रञ्ज के साथ तूने बदल दिया, अब मैं क्या करूं? क्या अपने हाथ से अपना गला काट कर निश्चिन्त हो जाऊं? मुझ पर आत्मघात का दोष तो नहीं लगाया जायगा॥"

इन्द्रजीतसिंह ने इतना ही कहा था कि कमरे का दूसरा दर्वाजा जिसे कुमार बन्द समझते थे खुला और किशोरी तथा कमला अन्दर आती हुई दिखाई पड़ीं। कुमार ने समझा कि बेशक किशोरी इसी ढङ्ग का उराहना ले कर आई होगी मगर उन दोनों के चेहरों पर हँसी देख कर कुमार को ताज्जुब हुआ और यह देख कर उनका ताज्जुब और भी बढ़ गया कि किशोरी और कमला को देखते ही कमलिनी खिलखिला कर हँस पड़ी और किशोरी से बोली—"लो बहिन! आज मैंने तुम्हारे पति को अपना बना लिया।" इसके जवाब में किशोरी बोली, "तुमने पहिले ही अपना बना लिया था आज की बात क्या है॥"

॥ बाईसवां हिस्सा समाप्त ॥
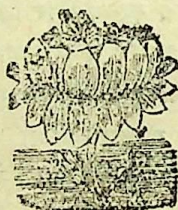
पढ़ने योग्य पुस्तकें।

बलिदान—

एक नवीन उपन्यास। एक पति के बलिदान का हाल लिखा गया है—साथ ही साथ दुष्ट साधुओं और उनके लम्पट चेलों का चरित्र भी दिखाया गया है— १)

बाजीराव पेशवा—

प्रसिद्ध महाराष्ट्र वीर का सम्पूर्ण वृत्तान्त इस पुस्तक में लिखा गया है। ऐतिहासिकों के पढ़ने योग्य तो हुआ ही है बल्कि अन्य लोग भी इसे पढ़कर लाभ उठा सकते हैं— ।।।)

ब्रह्मज्ञान शास्त्र—

ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी अपूर्व पुस्तक है विशेषतः ओंकार के प्रेमियों को तो यह पुस्तक अवश्य ही देखनी चाहिये। इसमें अन्य कई विषय भी हैं— २)

मोतियों का खजाना—

फ्रान्सीसी लेखक एलेकजेण्डर ड्यूमा का नाम आपने भी सुना होगा। उसकी सर्वोत्तम पुस्तक 'दि काउण्ट आफ मौण्ट क्रिस्टो' हुई है। यह मोतियों का खज़ाना उसी पुस्तक का अनुवाद है— ८।।।)

मेम और साहब—

एक पढ़े लिखे बाबू साहब अपनी बीबी को मेम बना और खुद साहब बनकर थियेटर देखने गये थे उनकी दुर्दशा— ३)

रणवीर—

रिनाल्ड साहब लिखित 'उमर पाशा' नामक प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद है— ४।")

ललना बुद्धि प्रकाशिनी—

यह पुस्तक स्त्रियों ही के लिये लिखी गई है और वास्तव में यह स्त्रियों के पढ़ने और पढ़ाने योग्य पुस्तक है। इसमें उनके लिये कई उपयोगी शिक्षायें लिखी गई हैं— — ।≡)

लैली मजनूं—

प्रसिद्ध किस्सा है, बाबू देवकीनन्दन खत्री लिखित— =)

बसन्तलता—

बङ्ग भाषा से अनुवादित एक अति उत्तम सामाजिक उपन्यास है— ।।।)

विचित्र खून—

यह भी एक रोचक उपन्यास है। इसमें एक विचित्र घटना का हाल लिखा गया है— ।-)

श्यामा—

एक रोचक किस्सा। एक ही युवती के, दो प्रेमियों का हाल अवश्य पढ़िये— =)

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

लाहौरी टोला,

बनारस सिटी।